मक़सदे ज़िंदगी

अल्लाह के रासते में निकलने वालों के लिए
बेहतरीन किताब

मुरत्तिब : हाफ़िज़ सईद अहमद
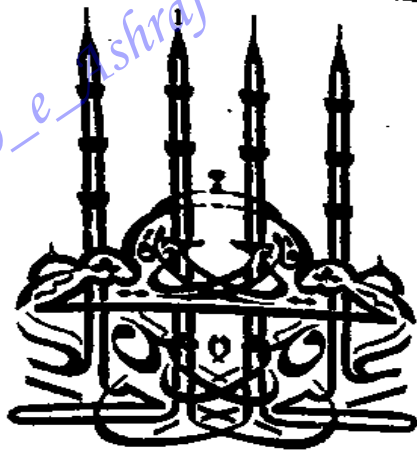
इस किताब को मे अपने मर्हूम वालिद साहब की तरफ मनसूब करता हूं, जिनकी कोशिशों और दुआओं के नतीजे मे इस किताब को तरतीब देने पर मे कादिर हुवा हूं,अल्लाह जल्ले शानहु उनकी मग्फेरत फरमाऐ और शायाने शान अपनी रहमत मे जगह अता फरमाऐ. आमीन. या रब्बल आलमीन.

फेहरिस्ते मझामीन

अनावीन

[illegible]

महबूबुल मुर्सलीन [illegible] रसूलिल्लाहि करीम [illegible]

अर्ज़े मुरत्तिब

करोड़ो ऐहसान उस अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का जो तमाम आलम का
रब है और हरसब का खालिक और मालिक है.इनसानो के उपर सब
से बड़ा ऐहसान अल्लाह ने ये फरमाया के इनसानो की हिदायत के
वास्ते हर दौरमें नबियों को मबऊस फरमाया और सबसे बड़ा ऐहसान
हमपर ये फरमाया के ऐसे नबी की उम्मत में हमें पैदा फरमाया जिन
की उम्मत में पैदा होने के लिये बाज़ नबियोंने भी तमन्नाऐं की थी.

लाखो दुरूद आकाऐ दोजहां,इमामुल अंबिया,फख्रेरसूल,खात-
मुन्नबियीन,सय्येदेना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम
पर जो तमाम आलम के लिये और कयामत तक आनेवाले इनसानो
के लिये रहमतुल्लिल आलमीन बनाकर भेजे गऐ. अपनी पूरी हयाते
तय्येबा इसी फिक्र और इसी जद्दोजेहद में गुजार दी के किस तरह
मेरा ऐकऐक उम्मती जहन्नम से बचकर जन्नत में जानेवाला बनजाये.
और इस मेहनत को करने में लोगों की तरफ से जोभी हालात आये
उसे बरदाश्त करते रहे हालां के अल्लाह के महबूब खुद फरमाते हैं
के दीन की (दअवत) के सिलसिले में जितना मुजे डराया गया और
सताया गया किसी नबी को नहीं डराया और सताया गया.(तिरमिज़ी)

अब कोइ नबी दुनिया में नहीं आयेगा इसलिये नबियों वाला काम
इस उम्मत को दियागया है, और इस काम के जरिये ही दीन वुजूद में
भी आता है और बाकी भी रेहता है,इसलिये अल्लाह के रास्ते में निकल
कर काम को सीखना होगा, और मकाम पर रेहकर इस काम को
करना होगा, ताके अल्लाह के रास्ते में निकल कर जो इमान और
आमाल बनेंगे वोह मकामी मेहनत से हमारी जिंदगी में बाकीभी रहेंगे
और उसमें तरक्की भी होती रहेगी.

इसी मेहनत को इस किताब में समजाने की कोशिश कीगइ है के
इनसान का दुनिया में आने का मकसद क्या है? और उस मकसद को
किसतरह हासिल किया जासकता है और किस तरह मेहनत करने से

हम खुद ओर दुनिया में बसने वाला, ऐक–ऐक इनसान दोनों जहां में कामयाब होजाऐ.

इसलिये ये किताब ऐकबार पढकर या देखकर अलमारी की झीनत न बनादें बल्के इस किताब को बारबार पढी जाऐ, सोचाजाऐ और ऐक ऐक बात अपनी जिंदगी में लाइ जाऐ, और दूसरों तक पहोंचायी जाऐ. जितनी बात दूसरों तक पहोंचाऐंगे उतनी बात हमारी जिंदगी में आऐगी. दअवत का मकसद ही येहै के जो हुक्म जो चीज हमारी जिंदगी में नही है उस को बनिय्यते तब्लीग अपने अंदर पैदा करने की कोशिश की जाये. अल्लाह जल्लेशानहु हम सब को अमल करने की तौफीक अता फरमाये.

इस किताब मे छपने में या लिखने में अगर कोइ गलती होगइ हो तो उसे सही करलिया जाये ओर हमें भी इत्तेला करें ताके दूसरी बार उस को सही करलिया जाये.अल्लाह का बे इन्तेहा फझल और ऐ.सा.। है के उसने मुजे ये इल्मी खिदमत सरअंजाम देने की तौफीक अता फरमाइ दुआ है के अल्लाह जल्लेशानहु कबूल फरमाये और आखेरत में नजात का जरिया बनाये. आमीन.

अहकर

हाफिझ सइद अहमद

मोहर्रम १४२९ ही.

मुताबिक जनवरी २००८
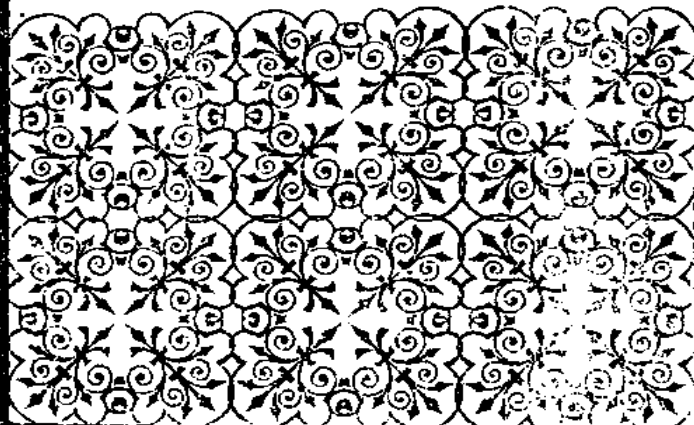
काम्याबी

मोहतरम बुजुर्गो दोस्तो हर इनसान काम्याब होना चाहता है.
और अल्लाह भी चाहते हैं के मेरे बंदे काम्याब होजाये.इसलिये अल्लाह
ने दुन्या में कमोबेश सवालाख नबियों को भेजे ताके बंदो को काम्याब
होने का रास्ता बतलायें क्यूँके कायेनात को अल्लाह ने बनाया और
बनीहुइ चीज से कुछ बनता नहीं है. इस की काम्याबी और नाकामी
किस चीजमें है वोह बनाने वाला ही जानता है.इसीलिये मख्लूक की
रेहनुमाइ के लिये हरदौर में अल्लाह ने नबियों को भेजा,और किताबें भी
दी, सब नबियों ने दुन्या में आकर ऐक ही दावत दी.के ऐक अल्लाह
को मानो और ऐक ही अल्लाह की मानो काम्याब होजाओगे, यानी
इमान और आमाले सालेहा इख्तियार कर लो काम्याब होजाओगे.

अल्लाह जल्ले शानहु इरशाद फरमाते हैं जो लोग इमान लाये
और आमाले सालेहा किये हम उनको बालुत्फ जिंदगी अता करेंगे
(सूरे नहल रुकूअ १३) दूसरी जगह इरशाद है 'जो शख्स हमारे झिक
से (हुकम से)ऐअराज करेगा हम उनकी जिंदगी को तंग करदेंगे और
कयामत में उसे अंधा उठाऐंगे (सूरे ता-हा रुकूअ ७)

इस से पता चलता है के जिस की जिंदगी में दीन [illegible] गा चाहे असबाब
हो या न हो अल्लाह उसे दुनियामें भी काम्याब करेंग। और आखेरत की
लामेहदूद जिंदगी में भी काम्याब करेंगे, जैसे सहा[illegible] रदी.को काम्याब
किया और जिस की जिंदगी में दीन नहीं होगा अल्लाह उसे दुनिया में
भी नाकाम करेगा और आखेरत में भी नाकाम करेंगे.जैसे अबू जहल,
अबू लहब,कैसर और किस्रा को नाकाम किया.दीन केहते हैं अल्लाह
के हुकमों को नबी ﷺ के तरीके के मुताबिक पुरा करना सिर्फ अल्लाह
की रझाके लिये.

दीन की मिसाल पानी के साथ दीगइ है.के हरऐक को प्यास लगेगी
और सब को पानी की जरुरत पडेगी. इसीतरह हर ऐक इन्सान को
दीन की जरुरत होगी.ये नहीं के घर में से ऐक आदमी की जिंदगी में
दीन है तो सब का काम चल जाऐगा,चाहे शरबत,जयूस या फालूदह
पी ले लेकिन प्यास तो सादे पानीही से बुजेगी, इसीतरह असबाब कुछ
भी हो लेकिन काम्याबी तो दीनही से मिलेगी.पानी जितना साफ और
शफ्फाफ होगा इसीतरह उस की तंदुरस्ती बनेगी.इसीतरह जिंदगी में
दीन जितना ज्यादह होगा उतना ही उसका काम बनेगा.इसी लिये कहीं
पर दीन की मिसाल

चक्की के साथ दीनह है. जो चक्की जिसतरह हर जगह और हर तरफ घुमती है इसी तरह दीन भी जिंदगी के हर शोबे में होना जरूरी है. जिस तरह के दीनी से इन्सान नाकाम होगा,इसीतरह अधूरे दीनसे भी नाकामी होगी.इसलिये अकाइद,इबादात,अखलाक,मामलात और मुआशेरत के तमाम शोबे का पूरे का पूरा दीन हमारी जिंदगी मे लाना जरूरी है,दीन से काम्याबी यकीन के बकदर मिलेगी, दीन से काम्याबी का यकीन पैदा करने के लिये दअवत शर्त है,दअवत से हमारे अंदर यकीन पैदा होगा,आमाल के करने के बाद भी काम्याबी यकीन के बकदर मिलेगी यकीन यानी इमान.

अल्लाह की कुदरत उस वक्त तक हमारा साथ नही देती जब तक अल्लाह का गैर हमारे दिलों से निकल नहीं जाता. और अल्लाह का गैर उस वक्त तक हमारे दिलों से नहीं निकलता जब तक अल्लाह का गैर अल्लाह के बगैर कुछ नहीं कर सकता उसकी हम दअवत न दें.इमान या आमाल की दअवत दें,तो उसकी हकीकत को सामने रखकर दअवत दें माहोल देखकर, या हमारी सतह देखकर, या सामने वाले की इस्तेअदाद देखकर दअवत न दें. और अपने यकीन की तब्दीली की नियत से दअवत दे,दूसरों की इस्लाह की नियत न हो. इसतरह दअवत देंगे तो दअवत में वोह तासिर पैदा होगी,जिस से अपना यकीन भी बनेगा और दूसरों को - हिदायत भी मिलेगी

इसी दअवत की मुबारक मेहनत के बारे मे अल्लाह रब्बुल इज्जत ने फरमाया है,'तुम मेरे रास्ते की जदोजेहद करो मे तुम्हें जरूर बिज जरूर हिदायत दुंगा'.(सुरऐ अनकबूत रुकूअ ३)अल्लाह के रास्ते की जदोजेहद और दअवत की मुबारक मेहनत को अल्लाह ने बेहतरीन तिजारत कहा है 'ऐ इमान वालो क्या मै तुम्हें ऐसी तिजारत बताउं ? जो तुम को दर्दनाक अज़ाब से बचाऐ ? (वोह तिजारत ये है) अल्लाह और उसके रसूल पर इमान लाओ,और निकलो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान और अपना माल लेकर ये तुम्हारे लीऐ बेहतर है, अगर तुम समज रखते हो.(इसके बदले अल्लाह क्या देगा) तुम्हारे गुनाह माफ करदुंगा. और जन्नत मे दाखील करूंगा (अल्लाह फरमा रहे हैं के)ये बोहत बडी काम्याबी है.(सुरऐ सफ रुकूअ१०) इस काम्याबी को हासिल करने के लिये बारबार अपना जान और माल ले कर अल्लाह के रास्ते में निकलना होगा,क्यूँके अल्लाह के बंदे होने के नाते अल्लाह की बंदगी हमपर फर्ज़ है'लाइला ह इल्लल्लाह'.

इसीतरह हज़रत मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं,लेहाज़ा उनकी मानो अपनी तमाम ख्वाहिशात को उनके हुकम के ताबे करो,हलाल को हलाल समजो चाहे जिस्म के टुकडे टुकडे होजाये और हराम को हराम जानो चाहे दाल-रोटी भी न मीले चाहे कनाअत पर गुझारा कर लो- 'मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' का तकाझा है के जिंदगी रसूलुल्लाह ﷺ के - तरीके मे ढल जाऐ मुहम्मदी बनजाये अकाइद मे,इबादत मे,अख्लाक मे, मामलात मे लेनदेन मे,इनसब आमाल में लोगों को हमारा मुआशरह नजर आये सारी दुन्या की इझ्झतें बंद है नबी के तरीके मे, जो कुछ मिलेगा उस जिंदगी से मिलेगा जो नबी ﷺ देकर गये हैं और हज़रत मुहम्मद ﷺ आखरी रसूल हैं इस बुन्याद पर नुबुव्वत वाला काम हमारे जिम्मे है ये दअवत का काम खत्मे नुबुव्वत की पेहचान है,ये उम्मत अपने नबी ﷺ की वारिष है,अगर दीन का काम करेंगे तो हुझूर ﷺ के उम्मती होने का हक हम अदा कर सकेंगे.

अपने जान माल को लेकर अल्लाह के रास्ते में निकलेंगे और मस्जिद के माहोल में, और फरिश्तों की सोहबत में रेहकर उसूल और आदाब के साथ इस काम को करते रहेंगे करते रहेंगे तो दीन हमारी जिंदगी में आता चला जायेगा,और जब दीन जिंदगी में आयेगा,तो जिंदगी में चेन और सुकून आयेगा,रोजी में खैरो बरकत होगी,दुआओं से काम बनेंगे, अल्लाह वालों की दुआओं में हिस्सा लगेगा, मुआशरे में अमनो अमान आयेगा और तमाम मख्लूक हम से मोहब्बत करने लगेगी.

और जब इन्सान अल्लाह के हुकमों के मुताबिक और नबी ﷺ के तरीको के मुताबिक जिंदगी गुझारता चला जायेगा, तो इन्शा अल्लाह मौत के वक्त इमान के साथ इस दुनिया से रुखसत होगा.जिसके मुतअल्लिक अल्लाह रब्बुल इझ्झत फरमाते हैं,'जिसने कहा बेशक मेरा रब अल्लाह है और फिर उसपर जमा रहा,तो मौत के वक्त फरिश्ते उतरेंगे और खुशखबरी देंगे के, दुनिया के छुटने का गम न करो और आगे का खौफ न करो,उस जन्नत की खुश खबरी सुनाते हैं,जिसकी नबियों के जरिये खबर दी गइ, दुनिया की जिंदगी में भी हम तुम्हारे दोस्त थे और आखेरत में भी रहेंगे. उन में वोह सबकुछ मिलेगा, जिसका तुम्हारा दिल चाहेगा? (सूरऐ हा मीम सजदा रुकूअ-४)

निकलने से पेहले

अल्लाह के रास्ते में जाने के लिये जब अपना नाम लिखवादें तो दो रकात सलातुल हाजत पढे और अल्लाह से दुआ करे,के ऐ अल्लाह मुजे तेरे रास्ते के लिये कबूल फरमा, और तमाम रुकावटों को दूर फरमा और तमाम मसाइल को आसान फरमा, वकतन फवकतन अपनी हेसियत के मुताबिक दो पांच रुपिया सदकह करता रहे,और जब वसूली जमा करने को कहा जाये तो वसूली जमा करादे, घर में और दोस्तो में ' अल्लाह के रास्ते में जा रहा हुं ' इस की दअवत चलाये, ताके हमारा निकलना आसान होजाये अब घर और कारोबार की तरतीब बनाकर अपनी जान और अपना माल लेकर अल्लाह के रास्ते में निकल जाये.

घर से रवान्ह होने से पहेले पाकी सफाइ के साथ गुसल करे,साफ कपळे पेहने,खुश्बू लगाये,दो रकात नमाझ पढकर अपनी और अपने घरवालों की आफियत की सलामती की और हिदायत की दुआ मांगे और ये दुआ पढे 'अल्लाहुम्म ब्रि–क असुलु व बि–क अहुलु व बि–क अषिरु' उसके बाद सब से खुशी खुशी मिलकर ये दुआ पढते हुऐ घर से निकले ' बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अलल्लाहि ला हव्ल वला कुव्व–त इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अझीम' (तिरमिझी) और अपनी बस्ती की मस्जिद में जाकर भी दो रकात नमाझ पढकर दुआ करे और जहां जुळनां तै हुवा हो वहां पहोंचकर सब के साथ जुळजाऐ.

तरगीबी बात

मोहतरम बुझुर्गो दोस्तो अझीझ साथीओ, अल्लाह रब्बुल इझ्झत ने हमें उसके रास्ते के लिये पसंद फरमाया,कबूल किया और निकाला ये अल्लाह का बोहत बळा अेहसान और इन्आम है, इस में हमारा कोइ कमाल नहीं है,हमारे लिऐ कितनों ने दुआऐं की होगी,रातों को उठकर तहज्जुद में रोये होंगे,तब जाकर अल्लाह ने हमें कबूल किया है, वरना हमारी बस्ती में बहोत से लोग रहते हैं और हमसे भी जियादह मालवाले अकल वाले,सलाहियत वाले और इल्म वाले भी होंगे,लेकिन उन सब में से चुनकर अल्लाह ने हमें कबूल किया है, ये अल्लाह का बहोत ही बळा करम है.ऐक हदीष का खुलासा है : अल्लाह जिस बंदे से भलाइ का इरा-दह फरमाते हैं,उस बंदे को दीन की समज अता फरमाते है.' (बुखारी)

ये बोहत ही ऊंचा काम है, नबियों वाला काम है, अल्लाह ने अपने मखसूस बंदो को नबी बनाकर इस काम के लिये चुना, किसीभी उम्मत को अल्लाह ने ये काम नहीं दिया, इसलिये ये काम नबियों से नबियों में मुन्तकिल होतेहुवा हुजूर ﷺ तक पहोंचा और हुजूर ﷺ को अल्लाह ने पूरे आलमके लिये, और कयामत तक के लिये, खातमुन नबिय्यीन बनाकर भेजा, अब कोइ नबी दुनिया में नहीं आयेंगे, इसलिये अल्लाह ने आप ﷺ के सदके में ये काम हम को यानी इस उम्मत को दिया है.

ये इतना ऊंचा काम है के सहाबा रदि.ने मक्काह की ऐक लाख नमाज़ के सवाब को और मदीनाह की पचास हजार नमाज़ के सवाब को, और हुजूर ﷺ की इमामत में नमाज़ पढनेको भी छोडा और अल्लाह के रास्ते मे निकले. इस रास्ते के ये दूसरे फज़ाइल है. लेकिन ये काम सिर्फ सवाब के लिये नहीं है. बल्के ये काम हमारी ज़िम्मेदारी है. इस काम से चाहा ये जाता है के हुजूर ﷺ का लाया हुवा सो फीसद दीन हकीकत के साथ, हमारी जिंदगी में आजाये, ताके अल्लाह हम से राज़ी होजाये और राज़ी होकर दुनियामें भी कामयाब करदे और आखेरत में भी कामयाब करदे.

इसलिये इस रास्ते में निकलकर सबसे पहेले अपनी निय्यत दुरुस्त करना है, क्यूंके आप ﷺ ने इरशाद फरमाया : जिसका खुलासा है के 'आमाल का दारोमदार निय्यतों पर है' इस लिये सब से पहेले ये निय्यत करे के, मैं अल्लाह को राज़ी करने के लिये निकला हूं इसलिये चार महीना, या चालिस दिन में येहि फिकर करनी है के दोनों जहां की कामयाबी के लिऐ, अपने यकीनों को दुनिया की तमाम शकलों और असबाब से, अल्लाह की तरफ से आनेवाले आमाल वाले असबाब की तरफ फेरना है. क्यूंके दुनिया वालों के फाइदे के लिऐ कायेनात है और इमान वालों के फाइदे के लिये अहकामात है. साथ साथ इस बात की भी फिकर करना है के, आलम में बसने वाले ऐक ऐक इन्सान की जिंदगी में भी कामयाबी वाले आमाल कैसे आजाये, क्यूं के इस मुबारक मेहनत से येही चाहा जाता है के, हुजूर ﷺ उम्मत को इमान और अखलाक के जिस मेअयार पर छोडकर गये थे उस सतह पर पूरी उम्मत फिर से कैसे आजाये.

तो हमसब दीन सीखने के लिये निकले हैं. लेहाजा चंद उसूल है जिनपर अमल करेंगे तो दीन जिंदगी में आयेगा, वरना फाइदे के बजाये नुकसान होगा. इस रास्ते में निकल कर चार बातों का ध्यान रखना बहोत जरूरी है.

(१) अमीर की इताअत. (२) मस्जिद की चार दीवारी

(३) आंखो की हिफाझत. (४) रातों की आहोझारी.

(१) हमारा अमीर जब तै होगया तो, हमारे लिये हर बात और हर काम में अमीर की इताअत करनां बहोत जरुरी है,चाहे समज में आये चाहे समज में न आये,चाहे दिल माने,चाहे न माने,हर हाल में इताअत करना जरुरी है. कयूँके इताअत पर हिदायत है, इसलिये अमीर जो कहे वोह करे, जितना कहे उतना करे, जैसा कहे वैसा करे, कयूँ के अमीर के उपर अल्लाह का हाथ होता है, अमीर से अल्लाह वोही काम कराऐगा जिस में हमारी भलाइ है. इसलिये जिसने अमीर की मानी उसने नबी ﷺ की मानी और जिसने नबी ﷺ की मानी उसने अल्लाह की मानी.(इब्ने माजा)यानी अमीर की नाराझगी से अल्लाह नाराझ होंगे और अल्लाह के नाराझ होने से हिदायत नहीं मिल सकती इस लिये मझह मीटाने में है,अगर शकर चाय में मिटे नहीं तो लोग उसे थुक देंगे.

इसी लिये अमीर के ताबे हम इसतरह होजाये जैसे मुर्दा गुसल देने वालों के हाथ में, तो फिर हिदायत मिलेगी. अमीर माली की तरह होता है, के माली बाग की कोइ शाख टेढी पसंद नही करता, फौरन उसे सही करदेता हे,वरना पौदे उगाने, बढाने, और फैलाने में उस का कोइ दखल नहीं.वोह तो सब अल्लाह के हाथ में है.इसी तरह अमीर के हाथ में हिदायत नहीं, हिदायत तो अल्लाह देंगे लेकिन हिदायत मिलेगी अमीर की इताअत के मुताबिक इसलिये हरकाम अमीर को पूछ पूछकर करे.

(२) दूसरा काम ये करना है के ज्यादह से ज्यादह हमारा वकत मस्जिद की चार दीवारी के अंदर गुझरे यानी जमाअत खाने में,इस लिये के यहांपर फरिश्तों के रेहने की जगह है.जब फरिश्तों की सोहबत में रहेंगे तो फरिश्तों वाली सिफत हमारे अंदर आयेगी,यानी मानने का और इताअत का जझबह और अल्लाह को सब जगाहो में सब से ज्यादह पसंद मस्जिदें हैं और सब से ज्यादह नापसंद जगहें बाझार हैं.मस्जिद मोमिन के लिये ऐसी है जैसे मछली के लिये पानी.इसलिये बगैर इजाझत के बाहर न निकले, अगर जरुरत से इजाझत लेकर जायें तो जरुरत पूरी करके जल्द अझ जल्द चार दीवारी के अंदर आ जाये.कयूँके जो अंडा मुर्घी के परों से बाहर रहेता है उस में से बच्चा नहीं निकलता बल्के सड जाता है और सिर्फ फेंकने के काम को रेह

जाता है.

ऐक हदीथ का खुलासा है : कयामत के दिन अल्लाह के अर्श के साये के सिवा कोइ साया नही होगा, उस में वोह आदमी भी रहेगा जिस का दिल मस्जिद में अटका हुवा होगा, इसलिये जियादह से जियादह वक्त मस्जिद में गुझारे.

(३) तीसरा काम नझरों की हिफाझत है इसलिये अगर जरूरत से या दीनके किसी तकाझे की वजह से मस्जिद के बाहर जाये, तो आंखो की खूब हिफाझत करे,के नामहरम पर न पडे और दुनिया की हलाल चीझों को भी इबत की निगाह से देखे,उसकी इब्तेदा और इन्तेहा को सोचे के मिट्टी से बनी है ओर मिट्टी हो जायेगी, बीच की शकल से धोके में न पडे और सोचे के ये सब फानी है. और इन सब मेहनतों के जरीये दिल में जो नूर पैदा होता है, और आखेरत की जो फिक्र पैदा होती है वोह निकल जाती है जैसे सुराख वाले बरतन में कोइ चीझ नहीं ठहेरती इसी तरह बदनझरी के जरीये ये सब खतम होजाता है.

(४) चोथा काम रातों की आहोझारी.यानि रातों को उठकर तहज्जुद की पाबंदी कर के रो-रो कर अल्लाह से खूब दुआयें मांगे कयूंके हिदायत अल्लाह ही देंगे,और दिन मे हमने जो महेनतें की है और सीखा है उसे दिल मे अल्लाह ही उतारेंगे और अमल करवायेंगे इस लिये अपने गुजिश्ता गुनाहों को याद कर के रोये और माफी मांगे अपने लिये अपने घरवालो के लिये अपने वालेदैन के लिये रिश्तेदारों के लिये,दोस्तों के लिये अपनी बस्ती के लिये, बल्के पूरे आलम के लिये और कयामत तक आने वाले इनसानों के लिये मांगे, कयूं के इस रास्ते में निकलने वालों की दुआयें बनी इस्राइल के नबियों की दुआओं की तरह कबूल होती है,नमाझों के बाद भी दुआयें करे बल्के दिन-रात में जब भी मौका मिले अल्लाह से मांगे, हर जरूरत अल्लाह से मांगे, बल्के जो भी मसअला पेश आये, दुआओं के जरीये अल्लाही से मनवायें.

हरवक्त इस बात की फिकर करे के हर काम हर अमल वकत पर पूरा हो,और रोज ब रोज हर अमल में तरक्की हो रही हो,उसूलों की पाबंदी करे, और अल्लाह को राजी करने की निय्यत से करे.इस लिये किसी पर बोज न बने बल्के हम दूसरों की खिदमत करने वाले बनें. जितनी हम इताअत करेंगे,मुजाहदा करेंगे,कुर्बानी देंगे,उतना

इमान बनेगा, इमान बनता है नागवार हालतो मे.

इस रास्ते में तालीम भी ऐक मुजाहदा है लेकीन अल्लाह ने इस मे हमारी हिदायत छुपाइ है. इसलिये तालीम में वक्त से पहेले सब जरुरियात से फारिग होकर दिलको भी फारिग करके बेठे और ध्यान और तवज्जुह के साथ साथ दिल के कानों से सुनें.खभी खाना आगे पिछे होगा,कच्चा-पक्का मिलेगा, सोना आगे पीछे होगा, ये सब छोटी मोटी कुर्बानी है.ये कोइ जियादह कुर्बानी नहीं है. हालांके इसी दीन की खातीर सहाबा रदि.ने कैसी कैसी कुर्बानीयां दी.लेकिन हम कमझोर हैं हम से ऐसी कुर्बानी नहिं मांगी जाती. चार माह, चालीस दिन छोटी-मोटी कुर्बानी देंगे तो इमान बनेगा और दीन जिंदगी में आयेगा, दुनिया और आखेरत दोनों जहां मे कामयाबी मिलेगी.इसी के साथ साथ नमाझों को तकबीरे उला के साथ पढना है.ऐक हदिष का खुलासा है केजो शख्स चालीस दिन पांचो नमाझों को तकबीरे उला के साथ पढे उसे दो परवाने मिलते हैं.ऐक निफाक से बरी होनेका, और दूसरा जहन्नम से छुटकारे का.

इस रास्ते में निकल कर खूब महेनत करनी है, और अपने वक्तों की भी हिफाझत करनी है, दुनिया की जिंदगी का ऐक ऐक लम्हा कीमती सरमाया है क्यूँके असल जिंदगी ही दुन्या की जिंदगी है.आखेरत में तो सिर्फ वोही चीझ मिलेगी,जो यहां पर कमाइ होगी, वहा अमल नहीं वोह तो बदले की जगह है. हम अपना कारोबार घरबार वगैरह सब कुछ छोडकर जारहे हैं लेकीन नफ्स और शैतान जो हमारे दुश्मन हैं हमारे साथ आरहे हैं ओर बुरी आदतें भी हमारे साथ जा रही है ये हमें उन आमाल की तरफ खीचेंगे जिन से हमारे अंदर झुल्मत पैदा हो और अल्लाह से दूरी हो इस लिऐ हम ज्यादह से ज्यादह वक्त उन अमलो में लगे रहें जिस से हमारा दिल नूरानी बने,जब इजतेमाइ अमल पुरा होजाये तो इन्फिरादी आमाल में लगजायें वक्त को बेकार बातों में जाएअ न करें.

इसलिये अल्लाह के रास्ते में निकलकर खुसूसन और मकाम पर रेहकर उमूमन,बाज काम करना है, बाज काम नही करना है. बाज काम में ज्यादह से ज्यादह,और बाज काम में कमसेकम वक्त लगाना है और कया कया करने से आपस में जोड पैदा होगा वोह सब बताया जाता रहेगा इन्शाअल्लाह.

कीमती सरमाया

चार चीजो में ज्यादह से ज्यादह वकत लगाये.

(१) दअवते इलल्लाह में (२) तालीम और तअल्लुम (सीखने सिखाने)में (३) इबादत में (४) खिदमत में.

दअवते इलल्लाह की पांच बातें

(१) खुसूसी गश्त (२) तालीमी गश्त (३) उमूमी गश्त (४) तश्कीली गश्त (५) वसूली गश्त.

तालीम और तअल्लुम की चार बातें

(१)किताबका पढ़ना और सुनना(२)नमाझ और कुर्आनके मुजाकरे (३) छे सिफात के मुजाकरे (४) उसूल और आदाब के मुजाकरे

इबादत की चार बातें

(१) नमाझ. (२) तिलावत. (३) तस्बीहात. (४) मस्नून दुआयें.

खिदमत की चार बातें

(१) अपनी खिदमत (२) अमीर की खिदमत. (३) साथी की खिदमत (४) मख्लूक की खिदमत.

चार कामो में कम से कम वकत लगाना

(१) खाने पीने में (२) सोने में (निंद – आराम) (३)पेशाब पाखाने में(४)आपस की जरूरी बातचीत में.

चार चीजो में बहस न करें

(१) अकाइद में (२) मसाइल में (३) सियासत में (४) हालाते हाजेरह का तजकेरह (अख्बारी बातें)

चार चीजों का अेहतेमाम करें

(१) मस्जिद का अेहतेराम करे. (२) अमीर की इताअत और खिदमत करे (३) इजतिमाइ काम को इन्फिरादी काम पर मुकदम रखें. (४) सब्र और तहम्मुल से काम ले.

इजतिमाइ आठ काम

(१) मश्वरा (२) तालीम (३) नमाझ (४) उमूमी गश्त (५) बयान (६) खाना (७) सोना (८) सफर.

इनफिरादी आठ काम

(१) नफल नमाज़ों का अेहतेमाम. (२) कुर्आन की तिलावत
(३) मसनून दुआओं का अेहतेमाम. (४) तस्बीहात की पाबंदी
(५)रोजाना ऐक नयासबक याद करना.(६)ऐक साथीकी खिदमत
(७) तन्हाइ में फझाइल की किताबों का मुतालआ करना.
(८) हर काम करने से पहेले अपनी नियत को सही करनां.

मुनाजात

हवा ओ हिर्स वाला दिल बदल दे
मेरा गफलत में डूबा दिल बदल दे

बदल दे दिल की दुनिया दिल बदलदे
खुदाया फझल फरमा दिल बदल दे

गुनेहगारी में कब तक उम्र काटूं
बदल दे मेरा रास्ता दिल बदल दे

सुनूं मैं नाम तेरा धडकनो में
मजा आजाऐ मौला दिल बदल दे

करुं कुर्बान अपनी सारी खुशियां
तू अपना गम अता कर दिल बदल दे

हटा लूं आंख अपनी मा सिवा से
जियूं मैं तेरी खातिर दिल बदल दे

सहल फरमा मुसलसल याद अपनी
खुदाया रहम फरमा दिल बदल दे

पडा हुं तेरे दर पे दिल शकिस्तह
रहुंक्यूं दिल शकिस्तह दिल बदलदे

तेरा हो जाउं इतनी आरझू है
बस इतनी है तमन्ना दिल बदलदे

मेरी फर्याद सुन ले मेरे मौला
बनाले अपना बंदा दिल बदल दे

रवानगी के आदाब

जब ऐक मस्जिद से दूसरी मस्जिद जाने का इरादह करे तो सब से पहेले अपना सामान ठीक करले, अपना कोइ सामान मस्जिद में न रेह जाये (तस्बीह, मिस्वाक, किताब, कपड़ा, साबुन वगैरह) और मस्जिद का कोइ सामान अपने साथ न आजाये. मस्जिद का सामान भी ठीक करले और मस्जिद को हमने सफाइ तआम का सामान भी ठीक करले और मस्जिद को हमने सफाइ के ऐतेबार से जिस हाल में पाया था उस से बेहतर हालत में छोडे. अपना सामान खुद उठाये और दूसरों का सामान उठाया हो तो मंझिल तक पहोंचाये, बीच में न छोडे. तआम के सामान की सब फिकर करें. मस्जिद से जब निकले तो नदामत के साथ निकले के इस बस्ती का और मस्जिद का जो हक था वोह हम से अदा न हो सका। मस्जिद से जब निकले तो पहेले बायां पैर मस्जिद के बाहर निकाले और ये दुआ पढे 'बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसुलिल्लाह. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु-क मिन फझ्लि-क व रहू-मतिक' फिर दायें पैर में जूता या चप्पल पहेले पहेने, अगर चलते चलते जाना हो तो दो-दो की जोडी बनाकर रास्ते के ऐक किनारे से चले, बस्ती के अंदर झिक्र करते हुऐ चले, बस्ती के बाहर जब पहुंचे तो सीखते सिखाते चले, उंचे आवाज से न बोले जब बस्ती आ जाये तो सीखना सिखाना बंद कर दे.

अगर सवारी से सफर करना हो तो जब बस या रेल्वे स्टेशन पहोंच जाये तो ऐक जगह सामान ऐकट्ठा रखे, और चारों तरफ साथी खडे रहें ताके सामान की हिफाझत अच्छी तरह होजाये, अगर कोइ जरुरत पैश आये तो मश्वरह कर के दो साथी जाऐ, बगैर इजाझत के कोइ कहींभी न जाये.

दरे फैशानी ने तेरी कतरों को दरया कर दिया.
दिल को रोशन करदिया आखों को बीना करदिया.
खुद न थे जो राह पर औरों के हादी बन गऐ.
क्या नजर थी जिस ने मुर्दों को मसीहा करदिया.

सवारी की सुन्नतें और आदाब

जब सवारी पर नझर पळे तो 'लिइलाफी' की शुरत पढे,और बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम' पढकर दाहना पेर रखकर सवार होजाऐ.जगह मिले या न मिले 'अल्हम्दुलिल्लाह' कहे. जब सवारी चलने लगे तो ये दुआ पढे. 'सुब्हानल्लझी सख्ख-र लना हाझा वमा कुन्ना लहु मुक्रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन् कलिबून्. तीन बार 'अलहम्दु लिल्लाह' तीनवार 'अल्लाहु अक्बर' ऐक मरतबा 'ला इला-ह इल्लल्लाह' उसके बाद ये दुआ पढे सुब्हा-न-क इन्नी झलमतु नफ्सी फग्फिरली फइन्नहु ला यग्फिरुझ् झुनु-ब इल्ला अन्त. और जब किसी बुलंदीपर चढे तो 'अल्लाहु अकबर' कहे और उतरे तो 'सुब्हानल्लाह' कहे और खुले मेदान से गुजरे तो 'लाइला-ह इल्लल्लाह' ओर 'अल्लाहु अकबर' कहे और जब पुल पर से गुजरे तो 'अल्लाहुम्म या रब्बिल सल्लिम् सल्लिम' कहे.

आप ﷺ ने हजरत झुबैर बिन मुतइम रदी. को बतलाया के सफर में इन पांच सुरतों को पढे (१) सूरऐ काफिरून (२) सूरऐ नस्र (३) सूरऐ इख्लास (४) सूरऐ फलक (५) और सूरऐ नास.हर सुरत को बिस्मिल्लाह से शुरु करे और आखिर में भी ऐक मरतबा पढले,यानी बिस्मिल्लाह छे मरतबा पढे. हझरत झुबैर रदि. का बयान है के जब कभी में सफर में निकलता था.तो बावजूद मालदार होनेके भी झादे राह साथियों से कम रेहजाता था. लेकिन जब मैंने ये सूरतें पढनी शुरु की, उस वकत से में वापस होने तक अपने तमाम रोफकाऐ सफर से अच्छी हालत में रेहता हुं और झादेराह भी उन सब से जियादह मेरे पास होता. (हिस्नेहसीन) अगर दौराने सफर किसी मंझिल (स्टेशन वगैरह) पर उतरे तो 'अउझु बिकलिमाति ल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रि मा खलक्' पढे.

अगर हम झिक्र करते हुऐ सफर करेंगे तो ऐक फरिश्ता हमारे साथ कर दिया जाऐगा, जो हमारी हिफाझत करता है, और जो लग्वियात में मुब्तिला रेहता है, उस के साथ ऐक शैतान कर दिया जाता है. जब दौराने सफर कभी भी मस्जिद नझर पळे तो दुरुदशरीफ पढे, और जब दूसरे मजाहिब की चीजें नजर आये तो दूसरा कल्मा पढे, और जब आखरी मंजिल पर उतरे तो ये दुआ पढे,'रब्बि अनझिल्नी मुनझलम् मुबारकंव् व अन्त खयरुल मुन्झिलीन.'

बस्ती में दाखिल होने की सुन्नतें और आदाब

जब बस्ती में दाखिल हो तो पहेले तीनबार 'अल्लाहुम्म बारिक् लना फीहा' कहे.उसके बाद ये दुआ पढ़े 'अल्लाहुम्मर ज़ुक्ना जनाहा व हब्बिबना इला अहलिहा व हब्बिब् सालिही अहलिहा इलैना' (हि.ह जब बस्ती में दाखिल हो तो अच्छी नियत हो.बातिल नियत न हो. जैसी हमारी नियत होगी वैसेही असरात बस्ती वालों पर पडेंगे,ये नियत लेकर बस्ती में दाखिल हो. के जिस तरह हम अल्लाह के रास्ते में निकले हैं इसीतरह इस बस्तीसे भी लोग अल्लाह के रास्ते में निकलने वाले बने और पूरा दीन हमारी ज़ात से लेकर, बस्ती वालों के, सारे आलम में बसनेवाले तमाम इन्सानों की जिंदगी में कैसे आजाये.

रेल या बस अड्डे के बाहर, या मस्जिद के करीब पहोंचकर मस्जिद के बाहर सब मिलकर दुआ करे.फिर पहेले बाएँ पेर से जूता या चप्पल निकाले फिर दाहने पेर से निकाल कर मस्जिद के अंदर पहेले दायांपेर रखकर ये दुआ पढे. 'बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्स-लामु अला रसूलिल्लाह. अल्लाहुम्मफ्तह् ली अब्वा-ब रह्-मतिक' और जब जमाअत खाने में दाखिल हो तो ऐतेकाफ की नियत करे 'बिस्मिल्लाहि द खल्तु वअलयही त-वक्कल्तु व न-वय्तु सुन्न-तल ऐअतेकाफ' उसके बाद सामान ऐक कोने में या जहांपर रखने को कहा जाये करीने से रखकर उपर चादर ढांकदे, और अपनी हाजत से फारिग होकर, वुज़ू कर के दो रकात नमाज़ तहिय्यतुल वुज़ू और तहिय्यतुल मस्जिद की नियत से पढे.और फिक्रों को ले कर मश्वरे में जुडजाये और सोचे के इस बस्ती में किस तरह काम किया जाये,ताके काम वुजूद में आये.जिस बस्ती में भी जाये तीन काम की फिक्रकरे (१) खुद इमान सीखे यानी अपनी इस्लाह की फिक्र करे(२) बस्ती से नक़द जमात निकाले.(३)मस्जिदवार जमाअत बनाये और अगर बनीहुइ हे तो उसे मजबूत बनाने की फिक्र करे. और अगर मजबूत हो तो उस से फाइदा उठाये.

जब मैं केहता हुं, यारब, मेरा हाल देख
तो हुक्म होता है अपना नामाऐ आमाल देख

मस्जिद के आदाब

(१) मस्जिद में पहोंचकर अगर कुछलोग बेठे हों तो सलाम करे. अगर कोइ न हो तो 'अस्सलामु अलय्ना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन' कहे अगर नमाझ,तस्बीह,या तिलावत में मश्गूल हों तो झोर से सलाम करना दुरुस्त नही है. (२) मस्जिद में दाखिल होकर बेठने से पहेले दो रकात तहिय्यतुल मस्जिद पढे. (अगर मकरुह वक्त न हो तो) (३)खरीदने और बेचने का काम न करे.(४)तीर और तलवार न निकाले (५) आवाज बुलंद न करे.(६)दुनिया की बातें न करे. (७)अपनी गुमशुदह चीज तलाश करने का ऐलान न करे. (८) बेठने की जगह में किसी से जघडा न करे. (९)अगर सफ में जगह न हो तो बीच में घुसकर लोगो में तंगी पैदा न करे. (१०) किसी नमाझ पढने वाले के आगे से न गुजरे. (११)मस्जिदमें थूंकने और नाक साफ करने से परहेज करे.(१२)उंग्लियां न चटखाऐ. (१३)बदन के किसी हिस्से से खेल न करें. (१४) नजासत से पाक रहे,और किसी छोटे बच्चे या पागल को साथ न लेजाये(१५)मस्जिद में कसरत से अल्लाह के झिक्र में मशगूल रहें.

कुर्तुबी रह. लीखते हैं के जिसने इन कामों को करलिया, उसने मस्जिद का हक अदा किया, और मस्जिद उसके लिये हिफाझत और अमन की जगह बन गइ.(मआरेफुल कुर्आन)

मश्वरह के आदाब

➡ मश्वरह इस बात का करना है के हुझूर ﷺ उम्मत को दीन की जिस सतहपर छोड कर गये थे, दीन की उस सतह पर उम्मत फिर से कैसे आजाये.

➡ मश्वरह अल्लाह का पसंदीदह अमल है, नबी ﷺ की सुन्नत है,सहाबा रदि.की सिफत थी और हमारी जरुरत है.

➡ मश्वरह मुख्लिसीन का मिलकर अल्लाह के दीन को बुलंद करने की कोशिश करना है

➡ मश्वरह फिक्रो का जोड है,इत्तिहादी फिक्र और इजतिमाइ कुलुब हो.

➡ मश्वरह कर के जो काम करता है, वोह कभी नादिम नहीं होता.

➡ दीनी काम हो या दुन्यवी, मश्वरह कर के काम करना चाहीये.

- घर में मश्वरह करे तो औरतों और बच्चों को अमीर न बनाये सिर्फ राय पूछी जाये, और अच्छी राय हो तो उसपर फैसला किया जाये.
- मश्वरेसे ये चाहाजाताहै के हमारेअंदर मानने का जझबह आजाये
- मश्वरे में सब से पहेले अमीर तै करलिया जाये. और जमाअत में अमीर पहेले से तै होता है.
- अमीर कसरते राय, और किल्लते राय (बहूमती लघूमती) का पाबंद नहीं,चाहे राय ले,चाहे राय न ले, अपनी राय पर भी फैसला कर सकता है.
- अमीर को चाहिये के राय तै करने में हाकेमाना अंदाझ इख्तियार न करे.
- अमीर को चाहिये के सीधे हाथ से राय पूछे.
- अमीर जिस से राय पूछे वोही राय दे, बीच में कोइ न बोले,अगर झरूरत पडे तो इजाझत लेकर बोले किसी की राय को काटे नहीं.
- राय अमानत समझकर, अमानतदारी से दे.
- राय मानने के जझबे से दे, मनवाने का जझबा न हो.
- किसी को जलील करने की नियत से राय न दे.
- राय देने में इस बात का ख्याल रखे के दीन का फाइदा हो.साथी की आसानी हो. और अल्लाह की रझा हो.
- मश्वरे से पहेले मश्वरह न हो.(जिसे साझिश कहते हैं.और मश्वरे के बाद उसका कोइ तझकेरा न हो (जिसे बगावत कहते हैं)
- राय में इख्तिलाफ हो सकता है, लेकिन जब फैसला होजाये,तो फिर उस फैसले पर सब मुत्तफिक होजाये.
- जिस साथीके जिम्मे जो कामभी तै होजाये,उस काम को अमानतदारी के साथ उसके हक के मुताबिक अल्लाह की मदद के यकीन के साथ पूरा करने की कोशिश करे.
- जिस की राय पर फैसला हो, वोह अल्लाह से डरे, और दुआ करे के वोह काम बेहतरीन तरीके से अंजाम पाये.
- और जिस की रायपर फैसला न हो,वोह भी अल्लाह से डरे,और ये सोचे के इसमें कोइ शर होगा,जिस से अल्लाह ने हम सबको बचाया
- मश्वरे से काम करने के बाद अगर कोइ नुकसान नझर आये तो जिस की राय पर फैसला हुवा हो,उस को कुछ न कहे,बल्के यूँ कहे के खुदाने जो चाहा वोही हुवा,और इसी में हमारी भलाइ है.

तालीम के आदाब

तालीम का मकसद

अल्लाह हम से राजी होजाये. और दिल हमारा असर लेनेवाला बन जाये यानी अपने यकीनो को दुनिया की तमाम शकलों और अस्बाब से अल्लाह की तरफ से आने वाले आमाल वाले अस्बाब की तरफ फेरना है.

तालीम के मौझु

(१) फझाइले आमाल के जरिये, दिल में दीन की सच्ची तलब,और तलप पैदा करना. (१) वादा, और वइद के जरिये, इल्मो अमल में जोश पैदा करना.

तालीम के आदाब

(१) बावुझु, अझमत और अदब के साथ बेठना. (टेक न लगाना)
(२) ध्यान, और तवज्जुह से सुनना. (दिल से मुतवज्जेह होकर)
(३) अमल करने की निय्यत से सुनना.
(४) अमल करते हुए,दूसरों तक पहोंचाने की निय्यत से सुनना.
(५) कलाम और साहेबे कलाम की अझमत दिल में रखतेहुऐ सुनना. तालीम के अमल में जमकर बेठे,क्यूँके तालीम के इल्म से आमाल की इस्तेअदाद पैदा नहीं होती बल्कि तालीम के नूर से अमल की इस्तेअदाद पैदा होगी.

फझाइले आमाल और फझाइले सदकात, दोनों किताबों की रोजाना चार घंटे तालीम करें. हदीष को दोबार, या तीनबार पढे, फाइदे को ओर फाइदे में लिखीहुइ हदीष को ऐकबार पढे,क्यूँ के हुझूर ﷺ हर बात को तीन मरतबा दोहराते, ताकि मुखातब उसे खूब समजले.क्यूँ के सिर्फ पढना या सुनाना मकसूद नहीं है,बल्के उसे समजना है.इसलिये पहेली दफा पढने से मुतवज्जेह होंगे,दूसरी बार पढने से सुनेंगे और तीसरीबार पढने से उसे समजेंगे,सुबह की तालीम तीन हिस्सो में करना है. (१) कुर्आन के हल्के लगाना. (२) फझाइल की किताबो में से थोडा-थोडा पढना.(३) छे सिफात के मुजाकरे करना.

मजलिस की फज़ीलत

मोहतरम बुज़ुर्गो दोस्तो अज़ीज़ो अल्लाह का बहुतही बड़ा
करम हुवा ऐहसान हुवा के अस्बाक़ मे हमको .... की नमाज़
बा जमाअत पढ़ने की तौफीक अता फरमाइ.और मज़िद करम ये
हुवा के दीन की मजलिस में,दीन की फिक्रों को लेकर बेठने की
तौफीक अता फरमाइ. ये मजलिस देखने के ऐतबार से बोहत
छोटी है.लेकिन अल्लाह के यहां इसकी बहुत बड़ी क़द्र है.जिस के
बारेमें हुज़ूर ﷺ ने फरमाया : जोभी लोग अल्लाह के ज़िक्र के
लिये जमा हों और उनका मकसद सिर्फ अल्लाह ही की रज़ा हो,
तो आसमान से ऐक फरिश्ता निदा करता है. तुम बख्श दिऐ गये
और तुम्हारी बुराइयों को नेकियों में बदलदिया गया. (तबरानी)

हुज़ूर ﷺ का इरशाद है: कयामत के दिन अल्लाह जल्लेशानहु
बाज़ कौमो का हश्र ऐसी तरह फरमायेंगे,के उनके चेहरो में नूर
चमकता हुवा होगा वोह मोतियों के मिम्बरोंपर होंगे लोग उनपर
रश्क करते होंगे, वोह अंबिया और शोहदा नहीं होंगे, किसी ने
अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ﷺ उनका हाल बयान करदीजिये. के
हम उनको पहेचान लें. हुज़ूर ﷺ ने फरमाया : वोह लोग होंगे,जो
अल्लाह की मोहब्बत में,मुख्तलिफ जगहों से,और मुख्तलिफ
खानदानों से आकर ऐक जगह जमा होगये हों, और अल्लाह के
ज़िक्र में मश्गूल हों.(तरगीब)

अल्लाह हम सब को यकीन नसीब फरमाऐ और इनमें हम
सबको शामिल फरमाऐ और बार-बार ऐसी दीन की मजलिसो में
जमकर और जुडकर बेठने की तौफीक अता फरमाऐ. आमीन.

जब मजलिस खत्म हो तो ये दुआ पढे

सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिही सुब्हा-न-कल्लाहुम्म वबि हम्दि-
क अश्हदु अल् ला इला-ह इल्ला अन्त अस्तग्फिरु-क व-अतूबु
इलयक. सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल्-इज़्ज़ति अम्मा यसिफून,
वसलामुन् अलल् मुरसलीन् वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन.

अम्मा बाद (तआरुफी बात)

मोहतरम बुझुर्गो दोस्तो मेरी. आप की. और दुनिया में बसने वाले तमाम इन्सानों की.दुन्या और आखेरतकी काम्याबी अल्लाह रब्बुल इझ्झत ने अपने महबूब दीनमें रख्खि है.जिसकी जिंदगी में दीन होगा. अल्लाह उसे हर हाल में दोनो जहां में काम्याब करेंगे. और जिस की जिदगी में दीन नहीं होगा. चाहे मर्द हो या औरत. चाहे किसीभी खानदान का हो.चाहे किसी भी मुल्क का रेहनेवाला हो चाहे काम्याब होने के तमाम नकशे मौजुद हो. लेकीन अगर उसकी जिंदगी में दीन नहीं है. यानी अल्लाह के अहकाम. और नबी ﷺ का नूरानी और पाकीझा तरीका नहीं है.तो अल्लाह रब्बुल इझ्झत हर हाल में दोनो जहां में उसे नाकाम करेंगे.

दुनिया की काम्याबी बोहत मुख्तसर काम्याबी है.सांठ सत्तर साल की जिंदगी. और वोह भी यकीनी नहीं. मौत कब आजाये कोइ पता नहीं. मगर जिंदगी जितनी भी हो.अगर उस जिंदगी में अल्लाह के हुकम के मुताबिक और आप ﷺ के तरीको के मुताबिक अल्लाह की मानकर चलेंगे तो,अल्लाह रब्बुल इझ्झत दुनिया की इस छोटी सी जिंदगी में भी चैन,सुकून,इत्मिनान,खैरो बरकत और अमनो अमान वाली जिंदगी अता फरमायेंगे (दुनिया की - काम्याबी येही हे.) और मरने के बाद जो ला मेहदूद जिंदगी है. उस में भी अल्लाह काम्याब करेंगे.और असल काम्याबी तो आखेरत ही की काम्याबी है. उसी आखेरत की ला मेहदूद जिंदगी को काम्याब बनाने के लिये अल्लाहने हमें दुनिया मे मुख्तसर जिंदगी देकर भेजा है.

सहाबाऐ किराम रदि.ने हमतक ये दीन बेशुमार कुर्बानियां देकर पहोंचाया है. मार खाइ. गरम-गरम रेतपर घसीटे गये. आग के अंगारोपर लेटाऐ गये.घरबार छोळे. वतन से बेवतन हुऐ भूके रहे. प्यासे रहे. पेटपर पथ्थर बांधे. बीवियों को बेवह किया बच्चों को यतीम किया.तरह तरह की तकलीफें उठाइ.बल्के शहीद हुऐ. तब जाकर ये दीन हमतक पहोंचा है. अब इस दीन को हमारी जिंदगी में बाकी रखते हुऐ. दूसरोंतक पहोंचाना है.कयूँ के अब कोइ नबी इस दुन्या में आने वाला नहीं. अल्लाह ने खत्मे

नुबुव्वत के सदके में ये काम हम को दिया है. इस काम के हम जिम्मेदार हैं.और इसीलिऐ अल्लाह तआला ने कलामे पाक में हमारी तारीफ भी फरमाइ है. 'तुम बेहतरीन उम्मत हो.लोगों की नफा-रसानी के लिऐ निकाली गइ हो.तुम अच्छे काम का हुक्म करते हो और बुरे काम से रोकते हो.और ऐक अल्लाहपर इमान रखते हो.'

हज़रत अबू दरदा रदि. जो ऐक जलीलुल कद्र सहाबी हैं. फरमाते हैं.'तुम अम्र बिल मअरुफ और नही अनिल मुन्कर करते रहो वरना अल्लाह तआला तुमपर ऐसे जालिम बादशाह को मुसल्लत करदेंगे जो तुम्हारे बळों की ताझीम न करे. तुम्हारे छोटों पर रहम न करे. उस वक्त तुम्हारे बरगुझीदह लोग दुआऐं करेंगे. तो कबूल न होगी. तुम मदद चाहोगे तो मदद न होगी. मगफेरत मांगोगे तो मगफेरत न मिलेगी. (फझाइले तब्लीग)

नबी ﷺ का इरशाद है केःजब मेरी उम्मत दुनिया को बळी चीज समजने लगेगी.तो इस्लाम की हैबत और वकअत उसके कुलूब से निकल जायेगी.और जब अम्रबिल मअरुफ.और नहि अनिल मुन्कर को छोळ बेठेगी तो वही की बरकात से महरुम होजायेगी.और जब आपस में गाली गलोच इख्तियार करेगी, तो अल्लाह जल्लेशानहु की निगाह से गिर जायेगी.(तिरमिझी शरीफ)

इसलिऐ ये महेनत हम सब के लिये बोहत जरुरी है.इस महेनत के जरिये येही चाहाजाता है. के हम सब की जिंदगी में अल्लाह के अहकाम और नबी ﷺ के सुन्नत तरीके जिंदा होजाये. जिस दिन उम्मत के अंदर सो फीसद दीन हकीकत के साथ आ जायेगा तो. अल्लाह रब्बुल इझ्झत पूरी दुन्या के अंदर.अम्नो अमान,खैरो बरकत, चैन और सुकून, और वोह नुस्रतें और मददें अल्लाह अता फरमायेंगे, जो सहाबओ किराम रदि. को अता फरमाइ थी, बल्के उससे भी पचास गुना जियादह अता फरमाने का वादा फरमाया है.

अगर इस महेनत को हम सब मिलकर करेंगे तो दीन वुजूद में आयेगा.हिजरत और नुस्रत से दीन फैला है.तो इस महेनत के लिये सब तैयार है. इन्शा अल्लाह ? तो बताओ जबतक हमारी जमाअत आपकी बस्ती में रहेगी कोन कोन हमारा साथ देगा? हां ! जिसके पास जबभी, जोभी वक्त फारिग हो, उस वक्त हमारा साथ दें, मुलाकातें कराये, तालीम में शिर्कत करे,गश्तो में जुडे. हम दीन सीखने के लिये आये हैं, इसलिऐ आप वक्त को फारिग कर के हमारा साथ दें. करेंगे सब इन्शा अल्लाह.?

अल्लाह हम सबको अमल की तौफीक अता फरमाऐ.

फज़ाइले ज़िक्र

मोहतरम बुझुर्गों दोस्तो अज़ीझो दुनिया की मश्गूली, चाहे जाइझ या हलाल ही क्यूँ न हो दिलपर जरूर असर करती हे उस असर का नाम गफलत है, और उस गफलत को दूर करने के लिये अल्लाह का ज़िक्र है, हर चीज की सफाइ के लिये कोइ न कोइ चीज जरूर होती है, जैसे कपडे और बदन को साफ करनेके लिये साबुन है, और लोहे के झंग को दूर करने के लिये आग की भट्टी है, इसी तरह दिलों के झंग को दूर करने के लिये अल्लाह के ज़िक्र की जरूरत होती है. हुझूर ﷺ ने फरमाया : जो शख्स अल्लाह का ज़िक्र करता है और जो नहीं करता उन दोनों की मिसाल जिंदा और मुर्दा जिसी है के ज़िक्र करने वाला जिंदा है, और ज़िक्र न करने वाला मुर्दा हे.

जिस तरह महीनों के अेतेबार से रमझानुल मुबारक का महीना और दिनों के अेतेबार से जुम्अह का दिन, और रातों के ऐतेबार से लय्लतुलकद्र की रात सब से अफझल है इसी तरह वकतों के अेतेबार से फजर की नमाझ के बाद और असर की नमाझ के बाद का वकत बहोत ही अफझल है, इन वकतों में ज्यादह से ज्यादह अल्लाह का ज़िक्र करना चाहीये, हुझूर ﷺ अल्लाह का पाक इरशाद नकल फरमाते हैं के : फजर की नमाझ के बाद और असर की नमाझ के बाद तू थोडी देर मुजे याद करलिया कर, में दरम्यानी हिस्से में तेरी किफायत करूंगा.

ऐसे तो हरघडी, हर वकत, हर जगह, अल्लाह का ज़िक्र करना चाहिये, क्यूँके मकसदे हयात अल्लाह की याद है. हुझूर ﷺ का इरशाद हे के जन्नत में जाने के बाद ऐहले जन्नती को दुनिया की किसी भी चीज का कलक् और अफसोस नही होगा, बजुझ उस घडी के जो दुनिया में अल्लाह के ज़िक्र के बगैर गुजर गइ हो. (तबरानी) हझरत अबू दरदा रदि. फरमाते हैं के जिन लोगों की झुबान अल्लाह के ज़िक्र से तरो ताजा रहेती है वोह जन्नत में हंसते हुऐ दाखिल होंगे. (फ. ज़ि.

इसलिऐ जो शख्स किसी से बैत हो तो वोह अपने शैख के बताये हुऐ मामूलात पूरे करे. वरना सुब्हो शाम इन दोनों वकतो में आदत डालने के लिये बुझुर्गानेदीन तीन-तीन तस्बीहातकी पांबदी बताते हैं १. तीसरा कल्मा. २. दुरूद शरीफ. ३. इस्तिग्फार. इसको किब्ला रूख बेठकर अल्लाह के ध्यान के साथ माने को समजकर पढे.

(१) तीसरे कलमे की फजीलत में आता है.हजरत उम्मेहानी रदि.फरमाती हैं ऐक मरतबा हुजूर ﷺ तशरीफ लाये,मैं ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ﷺ मैं बुढी होगइ हुं और जइफ हुं. कोइ अमल ऐसा बता दीजिये जो बेठे बेठे करती रहा करुं. हुजूर ﷺ ने फरमाया 'सुब्हानल्लाहि' सो मरतबा पढा करो. उसका षवाब ऐसा है गोया तुम ने सो अरब गुलाम आजाद किये और 'अल्ह-म्दुलिल्लाह' सो मरतबा पढा करो उसका षवाब ऐसा है गोया तुमने सो घोडे, मअ सामान लगाम वगैरह जिहाद में दिये. और सो मरतबा 'अल्लाहु अक्बर' पढा करो. ये ऐसा है गोया तुमने सो ऊंट कुर्बानी में झबह किये और वोह कबूल होगये,और 'ला इला-ह इल्लल्लाह'सो मरतबा पढा करो,उसका षवाब तो तमाम आसमान जमीन के दरम्यान को भर देता है इससे बढकर किसी का कोइ अमल नहि जो मकबूल हो.(नसाइ शरीफ)इसी के साथ 'ला हौव्-ल व लाकुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल् अझीम्' भी सो मरतबा पढे,ये निन्नानवे (९९)बीमारियों के लिये शिफा है.

(२) दूसरी तस्बीह दुरुद शरीफ की है.हुजूर ﷺ के जो ऐहसा-नात हमपर हैं, उसका बदला तो हम चुका नहीं सकते, जितना भी हम से होसके दुरुदेपाक पढते रहें.हुजूर ﷺ ने फरमायाःकया-मत के दिन मेरे करीब सब से जियादह वोह शख्स होगा,जिस ने सब से जियादह मुजपर दुरुद भेजा होगा.(हिस्ने हसीन)

दूसरी हदीष मे है हुजूर ﷺ ने फरमाया : जो शख्स मुजपर ऐक मरतबा दुरुद भेजता है,अल्लाह तआला उसपर दस रहमतें नाझिल फरमाते हैं, और उसकी दस खतायें माफ कर दी जाती है. और (जन्नत में) उस के दस दर्जे बुलंद करदिये जाते हैं, और दस नेकियां भी उस के लिये लिखदी जाती है. (फझाइले दुरुद)

(३)तीसरी तस्बीह इस्तिग्फार की है के हम बोहत गुनेहगार हैं चलते फिरते,उठते बेठते,हमसे गुनाह होही जाते हैं.हुजूर ﷺ गुनाहों से पाक साफ थे, फिर भी रोजाना अस्सी या सो मरतबा इस्तिग्फार पढा करते थे. हमें भी चाहये के कम से कम सुब्ह शाम सो-सो मरतबा इस्तिगफार पढ लिया करे.

जो शख्स 'अस्तग़फिरुल्लाहल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल कय्युम व-अतूबु इलयह' तीन मरतबा पढे, उस के तमाम गुनाह माफ करदिये जाते हैं, चाहे समंदर की झाग के बराबर हो, चाहे मैदाने जिहाद से भागा ही हो. (इहयाउल उलूम)

हझरत इब्ने अब्बास रदि.रिवायत करते हैं आप ﷺ ने इरशाद फरमाया,: जो शख्श पाबंदी से इस्तिगफार करता रहेता है,अल्लाह तआला उसके लिये हर तंगी से निकलने का रास्ता बना देते हैं,हर गम से उसे नजात अता फरमाते हैं. और उसे ऐसी जगह से रोजी अता फरमाते हैं,जहां से उसे गुमान भी नहीं होता.(अबू दावूद)इसी के साथ साथ रोजाना कलामे पाक की तिलावत करे. और मस्नून दुआओं का अेहतेमाम करे. अल्लाह हम सब को अमल करने की तौफीक अता फरमाये.आमीन.अपनी अपनी तस्बीहात पूरी करलो

फझाइले गश्त

मोहतरम् बुझुर्गो दोस्तो, अझीझो, जबजब दुनिया में बिगाड आता था तो अल्लाह रब्बुल इझझत अपने मासूम बंदो को नबी बना कर भेजते थे,और नबी दुनिया में आकर ऐक-ऐक के पास जाकर दअवत देते थे,तमाम नबियों ने दुनिया में आकर ऐक ही दअवत दी नबी बदले लेकिन दअवत नहीं बदली,के'कुलू ला इला ह इल्लल्लाह तुफ्लेहु' अे लोगो कल्मा पढलो काम्याब हो जाओगे.

सब के आखिर में हमारे नबी हझरत मुहम्मद मुस्तुफा ﷺ दुनिया में तश्रीफ लाये, और उन्होंने भी येही दअवत का मुबारक काम किया, मक्का की गलियो में, मीना की घाटियो में,ताइफ के मैदानो में,और मदीनह के बाझारो में जातेथे और दअवत देतेथे,ऐक ऐक के पास सत्तर सत्तर अस्सी अस्सी मरतबा गये,ये काम तमाम नबियों की सुन्नत हे,इस महेनत को लेकर हमें भी गश्तवाला अमल करना है.दीन के अंदर गश्त का मकाम ऐसा है,जैसे बदन के अंदर रीड की हड्डी.ये उम्मुल आमाल है,इसीके जरीये तमाम आमाल जिंदा होते हैं,जिस बस्ती में अल्लाहपाक अझाब भेजने का इरादा कर भी लेते हैं, लेकिन वहां अगर तीन किसम के लोग होते हैं तो अजाब को रोक लेते हैं,१.मस्जिदों को आबाद करनेवाले.२.अल्लाह के वास्ते आपस में मोहब्बत रखने वाले.३. और आखरी रातो में इस्तिगफार

करने वाले. तो हम जो यहां पर जमा हुऐ हैं. सिर्फ अल्लाह ही की
मोहब्बत में जमा हैं. और मस्जिद को आबाद करने की फिक्र के
लिये जमा हुऐ हैं. और अगर हमारे केहने सुनने से, कोइ अल्लाह
का बंदा राहेरास्त पर आगया तो रातों को उठकर रोने वाला और
इस्तिग़फार करने वाला भी बनेगा. और इस काम से थोड़ा भी पेही
जाता है को, अल्लाह से बिछडे हुऐ बंदो को अल्लाह से मिलाना है.
इस के लिये बे गरज बनकर, बे तलब बंदो के पास जाना है. और
कमज़ोर इमान को लेकर जाना है. और कवी इमान की दावत
देना है. ताके हमारा इमान कवी बन जाये.

ये काम सिर्फ सवाब के लिये. या तस्बीह के तौरपर नहीं है.
बल्के ये काम हमारा मकसद है. इस काम को करने पर हमें क्या
मिलेगा. ये तो हम सोच भी नहीं सकते. फ़ज़ाइल सिर्फ इसलिये
बताये जाते हैं. ताके हमारे अंदर काम करने का शौक पैदा हो. ऐक
हदीस का खुलासा है : जो इन्सान इस काम के लिये कदम उठाता
है तो पहेले ही कदमपर उस की मग़फेरत कर दी जाती है.

हज़रत सोहेल रदि.फरमाते हैं मैंने हुज़ूर ﷺ को इरशाद फरमाते
हुऐ सुना : तुम में से किसी का ऐक घडी अल्लाह के रास्ते में खडा
रेहना उसके अपने घरवालो में रहेते हुऐ सारी उम्र के नेक आमाल
से बेहतर है.(मुस्तदरक हाकिम)

हज़रत अनस रदि.फरमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया :
अल्लाह के रास्ते में ऐक सुब्ह या ऐक शाम दुनिया और मा फीहा से
बेहतर है.(बुखारी)इस रास्ते का गुबार और जहन्नम का धूंवा ऐक
जगा जमा नहीं होसकता.(मुन्तखब अहादीस)ऐक कदम पर सातसो
कदम का सवाब,और ऐक मरतबा सुब्हानल्लाह कहेंगे तो सातलाख
मरतबा सुब्हानल्लाह केहने का सवाब मिलेगा.

ये बहोत ऊंचा अमल है,नबियों वाला काम है.इसलिये इस के कुछ
उसूल और आदाब भी हैं,अगर उसूल और आदाब के साथ काम होगा
मुजाहिदे और कुर्बानी के साथ होगा,तो हिदायत वुजूद में आयेगी
इसके लिये सब से पहेले दो नमाज़ों के बीच के वक्त को फारिग
किया जाये, और चार अमल के साथ किया जाये. ऐक अमल तो

यहांपर बात जारी रहेगी, ऐक अमल दुआ झिक्र का होगा, ऐक अमल इस्तिकबाल का होगा, और ऐक अमल गश्त के लिये जमाअत बस्ती में जायेगी.

तो बताओ इस काम के लिये सब तैयार है ? बताओ कितनी जमाअत बनाइ जाये, तो रेहबर, मुतकल्लिम और अमीर कोन रहेंगे दुआ झिक्र में कोन बेठेगा, और इस्तिकबाल के लिये कोन रहेंगे.(जब तै होजाये तो)अच्छा भाइ सब अपना अपना काम सुन लो,बात करने वाला दुन्या में आने का मकसद बताये,इमान और आमाल की कीमत बताये, इसतरह साथीयों का झहन बना कर जिम्मेदारी समजाये, ताके जब तकाजा आये तो, अपने आप को कुर्बानी के लिये पेश करने वाले बने.

दुआ झिक्र का जो अमल है ये पावर हाउस है,इन का जितना तअल्लुक अल्लाह के साथ होगा,गश्त में जानेवाली जमाअत को अल्लाह की तरफ से उतनी ही मदद होगी.इसलिये ये साथी गश्त में जानेवाली जमाअत की नुस्रत के लिये दुआएँ मांगे, या तीसरे कल्मे का विर्द करे. अपना इन्फरादी कोइ अमल न करे.

अब इस्तिकबाल वाले साथी को चाहये के दरवाजह पर जुता, चप्पल उतारने की जगह के करीब खडे रहें. और आनेवाले साथी का खुशी से इस्तिकबाल करे,मुसाफह करे और फौरन इस्तिन्जा और वुझू की जगह बता दे,जब वुझू से फारिग होजाऐ तो नमाझ के लिऐ पुछे, माशा अल्लाह आपने नमाझ तो पढली होगी,अगर ना कहे तो,पढादे और नमाझ खत्म करे तो उठनेसे पहेले,मस्जिद में जहांपर बात होरही हे उसमें बेठने की दअवत देकर उस मज-लिस तक पहोंचा दे.

चोथा अमल जो जमाअत बस्ती में गश्त के लिये जायेगी,उस में कम से कम तीन और ज्यादह से ज्यादह दस साथी जा सकते हैं,उन में तीन साथी तै करलिये जाये,ऐक रेहबर जो मकामी हो, या अपर हो बस्ती में सब को पेहचानता हो, नाबालिग बच्चे को रेहबर न बनाया जाये, दूसरा मुतकल्लिम तीसरा अमीर.

रेहबर भाइका काम ये हे के जिस भाइ के घरपर जमाअत को लेकर जाये,उस भाइ को अच्छे नामसे बुलाये,चाहे उसमे नन्नानवे बुराइयां हो,लेकिन ऐक अच्छाइ के योह इमानवाला भाइहै,उसका

ऐहतेराम करते हुये बुलाये और ये कहे अल्लाह के बंदे अल्लाह के घरसे,अल्लाह की बात लेकर आये हैं.अल्लाह की बात बकी अल्लाह की बात सुनलो.और आ जाये तो मुसाफ्हा करे (और पूरा तैयार न हो यानी कुर्ता,कमीस, या टोपी वगैरह न पहेनी हो. तो पहेना कर या बच्चा हाथ में हो तो उसे रखवा कर पूरा तैयार करा के) इस मइय्यत के साथ के इ.अ. हमारे साथ अभी मस्जिद में आयेंगे,मुतकल्लिम भाइ से मिला दे, अगर तीन मरतबा आवाझ देनेपर कोइ जवाब न मिले तो आगे बढजाये.और अगर मस्तूरात की आवाझ सुने तो कहे के मस्जिद से जमाअत आइ है.कोइ मर्द हझरात हो तो भेजो, अगर ना कहे तो आगे बढजाये, मस्तूरात से और कोइ बात न करें.

मुतकल्लिम भाइ का काम येहै के, आनेवाले भाइ के साथ मुसाफा करे,और खैर खैरियत पूछे,और तमाम साथियो की तरफ मुतवज्जेह होकर,इमानवाले की कीमत बताये.इमान और आमाल की ताकत जताये, कब्र और हश्रकी याद दिलाये, फझीलत वाली बातें बताओ वइदें न बताऐ. इतनी कम बात भी न करे के ऐलान होजाऐ और इतनी लंबी बात भी न करे के बयान होजाये, और बताऐ के ये सब महेनत से हासिल होगा, और इसी सिलसिले में ये गश्त वाली महेनत होरही है.और मस्जिद में अल्लाह और उस के रसूल की बात हो रही है. तो हम आप को लेने के लिये आये हैं. अगर कोइउझर पेशकरे तो सहाबा रदि.की कुर्बानी बताकर मकसद मस्जिद में लाने की कोशिश करे. अगर फिर भी उझर बताओ,और कहे के इन्शाअल्लाह नमाझ में पहोंचता हुं.तो फिक्रमंद बनाकर छोड दे.के माशाअल्लाह आपतो आओगेही लेकिन जल्दी से फारिग होकर अपने मिलने जुलने वालोंको भी साथ में लेकर पहोंचे, और नमाझ के बाद भी थोडी देर तशरीफ रखना,इन्शाअल्लाह इमान और यकीन की बात होगी.

अमीर का काम येहै के जब जमाअत को मस्जिदसे लेकर निकले तो गश्त की मुनासिबत से, मुख्तसर दुआ करते हुऐ अल्लाह से मदद मांगते हुऐ निकले,क्यूँ के सिर्फ हमारे कहेने,और सुनने से कुछ नहीं होता, करने वाली झात सिर्फ अल्लाह ही की है, जब मस्जिद से निकले तो साथीयों को रास्ते के ऐक किनारे से चलाऐं.

रास्ते में कोइ तकलीफ देनेवाली चीज़ पडी हो और आसानी से हटा सकते हों तो उसे हटाते हुए चले,दिल में अल्लाह का ज़िक्र हो,गली कुचे में जाए तो तीसरा कल्मा पढे. और बाज़ार से गुज़रें तो चोथा कल्मा पढे दिल में फिक्र हो के किस तरह तमाम इन्सानो का ताल्लुक अल्लाह के साथ होजाये.नज़रें निची हो,इतनी नीची भी न हो के जान का खतरा होजाये इतनी ऊंची भी न हो के इमान का खतरा होजाये,बल्के दरम्यानी नज़र हो.जिसतरह नमाज़ में कयाम की हालत में होती है.

(ये गश्त जो हे,नमाज़ के बाहर की ज़िंदगी में,नमाज़ की मश्क है,के अमीर की इकतिदा,जुबानपर ज़िक्र,दिल में आखेरतकी फिक्र नीची नज़र, इधर उधर न जांकना, बात चीत न करना, सिर्फ मुत-कल्लिम की बात(किर्अत)सुनना और आखिर में इस्तिगफार करना चोबीस घंटे हमारे इसी तरह गुज़रे इस की ये मश्क है) अगर कोइ साथी ज़िक्र से गाफिल हो तो उस के करीब जाकर जरा ऊंची आवाज़ से ज़िक्र करे,ताके वोह भी ज़िक्र करने वाला बन जाये.

जब किसी के घर पर जाये तो परदे का लिहाज़ करते हुऐ ऐक तरफ खडे रेहकर आवाज़ दे,और रेहबर भाइ के सिवा कोइ दूसरा साथी आवाज़ न दे.और मुतकल्लिम के सिवा और कोइ बात न करे अगर जरुरत पडी तो अमीर बात कर सकता हे. अब जो साथी नकद तैयार होगया,उसको इकरामन किसी साथी के साथ मस्जिद में पहोंचा दिया जाये,उस को साथमें न जोडे, क्यूं के उसने आदाब नही सुने हैं. अगर कोइ बे उसूली हो जायेगी तो काम में नुकसान होगा.इसलिये गश्त वोही लोग करें जो मस्जिद से गश्त के आदाब सुनकर गये हैं.जब गश्त खतम कर के वापस आये तो नदामत के साथ इस्तिगफार पढतेहुऐ मस्जिद में दाखिल हों,और जहांपर बात होरही है सब साथी उस में जुड जाये.

और बात करनेवाले को चाहिये के अज़ान के दस मिनट पहेले बात को खतम करे, और कहे के माशा अल्लाह नमाज़ के बाद भी बात होगी तो मुख्तसर सुन्नत वगैरह पढकर सब जुडजाऐ. और दूसरों को भी बिठाने की कोशिश करे. अब जरुरियात से फारिग हो कर, खुसूसन जो साथी गश्तमें गये थे, वोह दुआमें लग जाऐ,और जिस-जिस साथी के पास गये थे उनके लिये हिदायत की दुआऐं

करे. इस तरह उसूलों के साथ अमल करेंगे तो इन्शा अल्लाह उस
अमल को अल्लाह कबूल फरमालेंगे,
और अमल कबूल हो गया तो उस के बाद जो दुआ करेंगे वोह
दुआ कबूल हो जायेगी,और दुआ कबूल होगइ तो हिदायत फैलेगी
इसलिये चाहे काम कम हो,लेकिन उसूलों के साथ हो. हमारे बड़ों
के मन्शा के मुताबिक हो. अल्लाह हम सब को अमल करने की
तौफीक अता फरमाऐ. आमीन.

आखरी बात

मोहतरम बुझुर्गों दोस्तो अझीझो अल्लाह रब्बुल इझ्झत ने
इन्सान को दुन्या में बहोत थोडी मुद्दत के लिये भेजा है.हमेशा यहां
रेहना नही है.हमेशा रहेने की जगह आखेरत है.हमेशा की जन्नत
या हमेंशा की जहन्नम दुन्यामें सिर्फ आखेरत बनानेके लिये भेजाहै.
अल्लाह जल्लेशानहु ने आदम अल.को जब जमीनपर उतारा
तो फरमाया के आपके लिये और आप की औलाद के लिये जमीन
अेक ठिकाना हे.ब अेतेबारे अफराद के अपनी अपनी मौत तक और
ब अेतेबारे मजमुआ के कयामत तक और इस जमीन में से तुम्हारे
लिये हमने गुजारे का सामान बनाया हे.आदम अल.को पैदा करने
से पेहलेही जमीन के अंदर और जमीन के उपर इनसान की जरुरत
का सामान बनाहुवा तैयारही था. इस लिये हझरत आदम अल.से
फरमाया तुम जमीनपर जाओ तुम्हारे लिये और तुम्हारी औलाद के
लिये मेरी तरफ से हिदायत का सामान आऐगा.
जब आदम अल.को अल्लाह ने पैदा फरमाने का इरादा फरमाया
तो फरिश्तों से फरमाया में जमीनपर अपना ऐक खलीफह पैदा
करने वाला हुं. खिलाफत यानी अल्लाह के हुकमों को जमीन पर
काइम करने की जिम्मेदारी.जमीन आसमान के दरमियान में जित्ने
अस्बाब हैं, वोहसब हमारी मदद के लिये दिऐ हैं, के इन तमाम
अस्बाब से राहत लो,जरुरत पूरी करो और हुकम पूरा करो,अस्बाब
इसलिये दिये हैं ताके हुकम पूरा करने में मदद मिले, हुकम पूरा
करने में सहुलत मिले,अस्बाब इसलिये नहीं दिये के अस्बाब में
लग कर हुकमोंही को भूलजावे.

हुझूर ﷺ फरमाते थे जिसका खुलासा येहे के जो इल्म और हिदायत दे कर अल्लाह ने मुजे भेजा है उसकी मिसाल बारिश के पानी की तरह है के जैसे बारिश का पानी साफ सुथरा, पाक और हयात लानेवाला है. (बारिश का पानी जहांपर पळेगा कुछ न कुछ उग जाअेगा समंदर के पानी से कोइ चीज नहीं उगती) अैसे ही जो हिदायत देकर मुजे भेजा है अगर ये नहीं तो हलाकत है. यानी अल्लाह ने हमारी हिदायत के लिये कलमा और कलमे की तफसीर के लिये हुझूर ﷺ को भेजा. हुझूर ﷺ सारे आलम के लिये रेहबर हैं और हुझूर ﷺ का रेहबर कुर्आन शरीफ है. इसलिये कहा जता है के कया करना है ? वोह कुर्आन मे है और कैसे करना है ? वोह मुहम्मद ﷺ के तरीकेमें है.

दुन्या मेहनत की भी जगह है और इम्तेहान की भी जगह है. अल्लाह जल्लेशानहु ने इनसानोकी काम्याबी के लिये और मेहनत के लिये नबियों के जरिये इमान और आमाल दिये और इम्तेहान के लिये अस्बाब दिये,अस्बाब में तजरुबा करादिया और आमाल के उपर वादे किये लेकिन उन अमलों के करने के बादभी अल्लाह के वादे तब पूरे होंगे जब अस्बाब से और चीजों से न होने का और अल्लाह ही से होने का यकीन होगा. यकीन यानी इमान.

दुन्या में जो कुछ है चाहे अल्लाह ने खुद बनाया हो,या उसके बनने में इनसान का हाथ लगा हो,चीजें हों या हालात हों,तमाम का तमाम अल्लाह के कब्जाऐ कुदरत में है,हरऐक चीज को अल्लाह जल्लेशानहु खुद इस्तेमाल फरमाते हैं.अल्लाह चाहे तो चीजोंही को बदल दे,जैसे लकडी से सांप और सांप से लकडी.या चीजोंको बाकी रखकर ताषीर बदल दे जैसे हझरत इब्राहीम अल.के लिये आग. हझरत इस्माइल अल.के लिये छुरी, के चीजों को बाकी रखकर ताषीर को बदल दिया अल्लाह तआला ने चीजोंपर काम्याबी का कोइ वादा नही किया, बल्के तमाम के तमाम वादे आमाल पर किअे हैं. इस लिये अगर अल्लाह की झात से, और अल्लाह की कुदर से फाइदा उठाना है तो अस्बाब से होने का यकीन निकालना होगा, और अल्लाह के तमाम अवामिर को हुझूर ﷺ के तरीको के मुताबिक सिर्फ अल्लाह को राजी करने के लिऐ पूरा करना होगा.

अगर अल्लाह हम से राजी होगया तो हम अल्लाह की कुदरत से और अल्लाह की ज़ात से फाइदा उठा सकेंगे,और नाकामी के अरबाब के बावजूद अल्लाह काम्याब करेंगे जैसे नबियोंको किया सहाबा रदि.को किया. वरना काम्याबी के अरबाब में रखकर भी अल्लाह नाकाम करेंगे,जैसे नमरुद,कारुन,कैसर, और किस्रा को किया.

इसलिये दीन को और अल्लाह के अहकाम को हमारी जिंदगी में लाने के लिये सबसे पहेले इमान सीखना होगा,यकीन बनाना होगा,और यकीन बनेगा दअवत से,और दअवत के लिये कुर्बानी शर्त है सहाबा रदि.ने कैसी कैसी कुर्बानी दी, हझरत सय्यदना बिलाले हब्शी रदि.हझरत खब्बाब बिन अरत् रदि.वगैरह सहाबा रदि.ने जान,माल,वकत,और जझबातकी कुर्बानियां दी,तब इमान बना.और जब इमान बनगया तो अल्लाहकी तरफसे जोभी हुकम आया सीधा उनके अमल में आया,हर हुकमपर सो फीसद अमल.

येही तरतीब रही है तमाम नबियो की दअवत की,के सब से पहेले इमान की दअवत,फिर आखेरत की दअवत,के मख्लुक से खालिक की तरफ और अरबाब से आमाल की तरफ और दुनिया से आखेरत की तरफ,लोगों के दिलों को फेरा है.

जब हुझूर ﷺ के बताने के मुताबिक,सहाबा रदि.ने हर अमल पर सो फीसद अमल किया, तो अल्लाह ने भी अपने तमाम वादे पूरे कर दिखाये.इस वकत हमें वैसी कुर्बानी नहीं देनी है,बल्के पहेले सिर्फ चार माह अल्लाह के रास्ते में निकलना है,और अपने इमान को बनाना है.उसके बाद हरसाल चालीस दिन,और मकाम पर रेहकर पांच काम पाबंदी से करना है. इस तरह हम महेनत करेंगे तो इमान भी बनेगा,और दीन भी हमारी जिंदगीमें आयेगा इस दुन्या में भी अल्लाह काम्याब करेंगे, और आखेरत में भी - अल्लाह हमें काम्याब करेंगे. तो बताओ चार-चार माह के लिये कोन कोन तैयार है.

फजर बाद (छे सिफात)

अल्लाह के रस्ते में निकाल कर छे सीफातों पर मेहनत कराइ जाती है, उसपर अमलीमश्क करने से पूरे दीनपर चलना आसान होजाता है ये छे सिफात पुरादीन तो नही है,लेकिन उसपर मेहनत करेंगे तो पूरे दीनपर चलने की इस्तेअदाद पैदा होजाऐगी. पहली सिफत है इमान. दूसरी सिफत है नमाझ, तीसरी सिफत है इल्म और झिक्र, चोथी सिफत है इकरामे मुस्लिम, पांचवी सिफत है इख्लासे निय्यत,छट्ठी सिफत है दअवते इलल्लाह,और परहेज के तौरपर लायानी से बचनां. तमाम सिफात को हमारी जिंदगी में लाने के लिऐ तीन काम करने होंगे,

१. दअवत देना. २. मश्क करना. ३. दुआ करना.

इन छे सिफात की दअवत पांच लाइन से देना है.
(१) हर वक्त देना है (२) हर जगह देना है (३) हर हाल में देना है. (४) हर ऐक को देना है (५) हर अमल से देना है.

- इमान के बगैर अल्लाह को पेहचान नहीं सकता.
- नमाझ के बगैर अल्लाह के हक को अदा नहीं करसकता
- इल्म के बगैर अल्लाह के मन्शा को पेहचान नहीं सकता.
- झिक्र के बगैर अल्लाह के हक को पूरा नहीं कर सकता.
- इकराम के बगैर कुछ बचा के लेजा नहीं सकता.
- इख्लास के बगैर अल्लाह से कुछ ले नहीं सकता.
- दअवत के बगैर इन्सानियत को कुछ दे नहीं सकता.
- कल्मे से : अमल जिंदा होगा.
- नमाझ से : अमल जाहिर होगा.
- इल्म से : अमल मुकम्मल होगा.
- झिक्र से : अमल मे जान आऐगी.
- इकराम से : अमल महफूझ होगा.
- इख्लास से : अमल कीमती बनेगा.
- दअवत से : अमल दूसरों तक पहोंचेगा.

(पहेली सिफत) इमान

इमान से ये चाहा जाता है के हमारे दिलों का यकीन सही हो जाये.
इमान का कल्मा है 'ला इला–ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'
इन में चार बातो का ध्यान रखना जरुरी है.

(१) कल्मे के अल्फाझ सही याद हो. (२) उसके माने का पता हो.
(३) उस के मतलब का इल्म हो. (४) उस के तकाझे को जान कर पूरा करना.

(१) कल्मे के अल्फाझ है ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह.
(२) उसका माना है, नहीं कोइ माबूद सिवाये अल्लाह के,और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलय्हि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं.
(३) 'ला इला-ह इल्लल्लाह' का मतलब है किसी से कुछ नहीं होता करने वाली झात सिर्फ ऐक अल्लाह की है. मख्लूक सब की सब अल्लाह की मोहताज है,अल्लाह इनमेंसे किसीभी चीझका मोहताज नहीं,वोह सबकुछ के बगैर सबकुछ करसकाता है.दुन्याके तमाम इन्सान और जिन्नात मिलकर किसी ऐक इन्सान को नफा पहों-चाना चाहे और अल्लाह न चाहे तो नहीं पहोंचा सकते, और दुन्या के तमाम इन्सान और जिन्नात मिलकर किसी ऐक इन्सान को नुकसान पहोंचाना चाहे, और अल्लाह न चाहे, तो नहीं पहोंचा सकते.इसबात का यकीन हमारे दिलो में आजाये. और कलमे का.

दूसरा जुझ है 'मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' इसका मतलब है हझूर ﷺ के मुबारक तरीको, और पाकीझह तरीकोमें ही. दुनिया और आखेरत की सो-फीसद काम्याबी है.और इस से हटकर दुनिया में जितने भी तरीके हैं,उस मे दुनिया और आखेरत की सोफीसद ना-कामी है. अल्लाह के यहां वोही अमल मकबूल है,जो हुझूर ﷺ के तरीके के मुताबिक कियागया हो.अल्लाह तआला ने रसूल ﷺ से इरशाद फरमाया,आप केह दीजिये के अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत करते हो, तो तुम मेरी फरमां बरदारी करो, अल्लाह तुम से मोहब्बत करेंगे,और तुम्हारे सब गुनाह बख्श देंगे और अल्लाह बोहत बख्शने वाला महेरबान है. (आले इमरान)

ऐक हदीष का खुलासा है: जिस जमाने में दीन मिट रहा हो, और सुन्नत तरीके जिंदगी से निकल रहे हों, ऐसे वक्त में ऐक सुन्नत का जिंदा करना, सो (१००) शहीदो के षवाब के बराबर है.

(५) कलमे का तकाझा ये है,के मन चाही जिंदगी को छोडकर,रबचाही जिंदगी इख्तियार की जाये.

हासिल करने का तरीका

इमान की सिफ्त को हमारी जिंदगी में लाने के लिये

तीन लाइन की महेनत है .

पहेला काम : लोगो में चल फिरकर इमान की खूब दअवत दीजाये.

(१) हुझूर ﷺ का इरशाद है : उस पाक झात की कसम,जिसके कब्जे मे मेरी जान है, अगर तमाम आस्मान और जमीन, और जो लोग उनके दरम्यान में है वोह सब,और जो चीजें उनके दरम्यान में है वोह सब कुछ,और जोकुछ उनके नीचे है वोह सबका सब, ऐक पलडे में रख दिया जाअे,और'ला इला–ह इल्लल्लाह'का इकरार दूसरी जानिब हो,तो वोही तोल में बढ जाअेगा(तबरानी)

(२) सही हदीष में वारिद है : कयामत उस वक्त तक कायम नहीं हो सकती,जबतक 'ला इला–ह इल्लल्लाह'केहने वाला कोइ जमीनपर हो. दूसरी हदीष में आया है :जबतक कोइ भी अल्लाह अल्लाह केहने वाला इस जमीन पर हो, कयामत कायम नही होगी. (फजाइले झिक्र)

(३) हझरत जैद बिन अरकम रदि हुझूर ﷺ से नकल करते हैं : जो शख्स इख्लास के साथ 'ला इला–ह इल्लल्लाह' कहे, वोह जन्नत में दाखिल होगा. किसी ने पूछा के कल्मे के इख्लास(की अलामत)कया है, आप ﷺ ने इरशाद फरमाया के हराम कामो से रोकदे.(तबरानी)

दूसरा काम : अमली मश्क करना.

◆ जबभी मख्लूक से होताहुवा नझर आये,तो उसकी नफी करे,और दिल को समजाऐ के,करने धरने वाली झात सिर्फ अल्लाह ही की है.

◆ अल्लाह की बनाइ हुइ मख्लूकात में गोरो फिक्र करे, जिस से अल्लाह की मारेफत नसीब होगी. ◆ अपनी आंखो का देखना,कानो का सुनना जुबान का बोलना, दिमाग का सोचना सही करे. ◆ बोल चाल मे सुब्हानल्लाह,अल्हम्दु लिल्लाह,माशा अल्लाह,जझाकुमुल्लाह. अल्लाह के फझलो करम से बोलता रहे.

तीसरा काम : दुआ करना.

इमानकी हकीकत को दुआओंके जरीये रो–रोकर अल्लाहसे खूब मांगे

(दूसरी सिफत) नमाझ

नमाझ से ये चाहा जाता है के, हमारी चोबीस घंटे की जिंदगी नमाझ वाली सिफत पर आजाये,और नमाझ के जरीये हम अल्लाह से लेनेवाले बनजाये.

यानी जिसतरह हम नमाझ,अल्लाह के हुक्म के मुताबिक और हुझूर ﷺ के तरीके के मुताबिक ही पढते हैं. उसके खिलाफ नहीं करते.इसीतरह नमाझ के बाहर वाली जिंदगी भी,अल्लाह के हुक्म के मुताबिक और हुझूर ﷺ के तरीके के मुताबिक हम गुझारने वाले बनजायें,और हर गुनाह से हम बचजायें.

तमाम अहकाम को अल्लाह ने, हझरत जिब्रइल अल.के जरीये दुनिया में उतारे,लेकिन जब नमाझ देनेका वक्त आया,तोअल्लाह ने अपने लाडले नबी ﷺ को अपनी हुझूरी में बुलाकर, तोहफे के तौरपर अता फरमाइ इसी लिऐ फरमाया गयाहै के,नमाझ मोमिन की मेअराज है.जिसतरह हुझूर ﷺ ने मेअराज में,अल्लाह से बराहे रास्त बात की,इसी तरह मोमिन बंदा जब नमाझ में खडा होता है तो बराहे रास्त अल्लाह से बात करता है. दूसरे अहकाम वकती और शख्सी है लेकिन नमाझ तमाम मुसलमान आकिल, बालिग, मर्द, ओरत पर दिनरात में पांच वकत की फर्झ है.

नमाझ अच्छी होगी तो,जिंदगी अच्छी होगी और जिंदगी अच्छी होगी तो अल्लाह जल्ले शानहु जिंदगी का हिसाब सख्ती से नही लेंगे नमाझ पर महेनत करेंगे तो नमाझ जानदार बनेगी, और नमाझ जानदार बनेगी तो दो रकात पढकर अल्लाह से हम लेने वाले बनेंगे.

हासिल करने का तरीका

नमाझ की सिफत को हमारी जिंदगी में लाने के लिऐ,

तीन लाइन की महेनत है.

पहेलाकाम : लोगोमें चल फिरकर नमाझ की खूब दअवत दीजाये.

(१) हुझूर ﷺ का इरशाद है : हकतआला शानहुने फरमाया के मेने तुम्हारी उम्मतपर पांच नमाझें फर्झ की है. और उसका मेने अपने लिऐ अहद करलिया है के जो शख्स इन पांचो नमाझों को उनके वक्त पर अदा करने का ऐहतेमाम करे,उसको अपनी जिम्मेदारी

पर जन्नत में दाखिल करूंगा, और जो इस नमाज़ का अेहद पाबंद न करे, तो मुजपर उस की कोइ जिम्मेदारी नहीं (अबूदाउद शरीफ)"

(२) ऐक हदीष में आया है : जो शख्स नमाज़ का ऐहतेमाम करता है हक तआला शानहु पांच तरह से उसका इकराम और अेजाज़ फरमाते है ऐक ये के उसपर से रिज़्क की तंगी हटादी जाती है, दूसरे ये के उससे अज़ाबे कब्र हटादिया जाता है तीसरे ये के कयामत को उसके आमालनामे दाऐं हाथ में दिये जाऐंगे चोथे ये के पुलसिरात पर से बिजली की तरह गुज़र जाऐंगे पांचवे ये के हिसाब से महफ़ूज़ रहेंगे (फज़ाइले नमाज़)

(३) हुज़ूर ﷺ का इरशाद है : अल्लाह जल्ले शानहु ने मेरी उम्मत पर सब चीज़ों से पहेले नमाज़ फर्ज़ की है, और कयामत में सब से पहेले नमाज़ही का हिसाब होगा. (फज़ाइले नमाज़)

दूसरा काम : अमली मश्क करना.

◆ नमाज़ के जाहीर और बातिन को दुरुस्त करे. (क) नमाज़ का जाहिर येहै के वुज़ू, गुसल और नमाज़ के फराइज, वाजिबात, सुन्नतें मुस्तहब्बात, दुआऐं, किर्अत, और अज़्कार. और नमाज़ के अरकान, यानी कयाम, रुकूअ, कौमा, सजदा, जल्सा, सलाम वगैरह सब चीज़ों को सीखे, और मोअतबर उलमा से पूछ-पूछ कर दुरुस्त करे.

(ख) नमाज़ का बातिन ये है के, नमाज़ इस ध्यान के साथ पढे के मैं अल्लाह को देखरहा हुं, और ये न हो सके तो ये ध्यान करे के अल्लाह मुजे देख रहा है इसके लिऐ तन्हाइ में दो-दो रकात नफल नमाज़ पढकर, अल्लाह का ध्यान जमाने की कोशिश करे.

◆ नमाज़ पर महेनत कर के नमाज़ में पांच बातें पैदा करना जरुरी है (१) कल्मे वाला यकीन. (२) फज़ाइल वाला इल्म. (३) मसाइल वाली शक्ल. (४) अल्लाह वाला ध्यान. (५) इख्लास वाली निय्यत.

◆ जब भी कोइ हाजत पेश आऐ तो नमाज़ ही के जरीये उसको हल कराने की मश्क करे.

तीसरा काम : दुआ करना.

नमाज़ की हकीकत को दुआओं के जरीये रो-रोकर अल्लाह से खूब मांगे.

(तीसरी सिफत) इल्म और ज़िक्र

इल्म से ये चाहा जाता है, के मेरा अल्लाह इस वकत मुज से क्या चाहता है, उस की तहकीक करना, और जान कर उसे पूरा करना. दौरे सहाबा में ऐक इल्म था,जो पूरी उम्मत को सो फीसद अल्लाह के हुक्मों पर खड़ा किए हुऐ था, वोह फजाइल वाला इल्म था. जब से फज़ाइल वाला इल्म उम्मत से निकला, तो सो फीसद उम्मत में से नमाज़ जैसा अहम फरीजा भी बाकी न रहा अब फिर से महेनत कर के फजाइल वाले इल्म को उम्मत में जिंदा करना है. इल्म दो तरह का है. फज़ाइल वाला इल्म, और मसाइल वाला इल्म, फजाइल वाले इल्म से आमाल का शोक पैदा होगा.और मसाइल वाले इल्म से आमाल सही होंगे.

हासिल करने का तरीका

इल्म की सिफत को हमारी जिंदगीमें लानेके लिऐ,तीन लाइन की महेनत है

पहेला काम : लोगो में चल फिरकर इल्म की खूब दअवत दी जाये.

(१) ऐक हदीथे पाक का खुलासा है हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया: तमाम मुसलमान मर्द, औरत पर दीन का इतना इल्म सीखना फर्ज है.जिस से हलाल और हराम की तमीज हो सके और जाइज़,नाजाइज की पहेचान हो सके.

(२) ऐक हदीथ का खुलासा है हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो बंदा इल्मे दीन सीखने के लिऐ अपने घर से निकलता है तो फरिश्ते खुश्नूदी के वास्ते उस के पेरों के नीचे अपने परों को बिछाते है. और तमाम मख्लूकात यहांतक के चरिंदे,परिंदे,जंगल में रहेने वाले जानवर, हत्ता के दरिया में रहेने वाली मछलियां तक उसके लिये दुआऐ मगफेरत करती है.

(३) ऐक हदीथ का खुलासा है हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : इल्म अमल का इमाम है और अमल उस के ताबे है, और इल्म की वजह से बंदा उम्मत के बेहतरीन अफराद तक पहोंच जाता है.(फज़ाइले ज़िक्र)

दूसराकाम : अमली मश्क करना.

- हर अमल के वकत उसकी कीमत का पता हो.
- उलमाऐ हक की सोहबत इख्तियार की जाये.
- तन्हाइ में मोअतबर किताबों का मुतालआ किया जाये

◆ अपने आप को हुझूर ﷺ की सुन्नतों का पाबंद बनाकर जो भी मस्अला पैश आये, अपने मस्लक के मोअतबर उलमा से पूछकर उसपर अमल किया जाये.

तीसरा काम : दुआ करना.

इल्म की हकीकत को दुआओं के जरीये रो-रोकर अल्लाह से खूब मांगे

(दूसरा जुझ है) झिक्र

झिक्रसे ये चाहा जाता है के हमारे अंदर अल्लाह का ध्यान पैदा होजाये

मख्लूक की मश्गूली चाहे जाइज या हलाल ही क्‍ ्यों न हो दिल पर जरूर असर करती है.उस असर का नाम गफलत है.उस गफलत को दूर करने के लिऐ अल्लाह के झिक्र की जरूरत है.

हर चीज को साफ करने के लिये कोइ न कोइ चीज मौजुद होती है जैसे बदन और कपडे को साफ करने के लिये साबुन होता है,और लोहे के झंग को दूर करने के लिये आग की भट्टी की जरुरत होती है. इसीतरह दिल की गफलत को दूर करने के लियें अल्लाह के झिक्र की जरूरत होती है.

हासिल करने का तरीका

झिक्र की हकीकत को हामारी जिंदगी में लाने के लिये

तीन लाइन की महेनत है.

पेहला काम : लोगो में चल फिर कर झिक्र की खूब दअवत दी जाये.

(१) हुझूर ﷺ का इरशाद है : जन्नत में जाने के बाद ऐहले जन्नती को किसी भी चीज का कलक और अफसोस नहीं होगा,बजुझ उस घडी के जो दुनिया में अल्लाह के झिक्र के बगैर गुजार दी होगी.(बयहकी)

(२) हुझूर ﷺ का इरशाद है : अल्लाह के झिक्र से बढकर किसी आदमी का कोइ अमल अजाबे कब्र से जियादह नजात देने वाला नहीं है.

(३) ऐक सहाबी रदि.ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ﷺ अहकाम तो शरीअत के बोहत से है (जिनपर अमल तो जरूरी है लेकिन) मुजे कोइ ऐसा अमल बता दीजिये जिस को में अपना मामूल बनालुं. आप ﷺ ने इरशाद फरमाया : तुम्हारी जुबान अल्लाह के झिक्र से हर वकत तर रहे. (तिरमिझी शरीफ)

दूसरा काम : अमली मश्क करना.

◆ सुब्ह शाम की तस्बीहात को पाबंदी के साथ, किब्लारुख बैठ कर,

माने को समजकर, अल्लाह के ध्यान के साथ पूरीकरे.

- कुर्आनेपाक की तिलावत आदाब की रीआयत करते हुऐ तरतील और तजवीद के साथ करने का अेहतेमाम करे.
- मोका महल,खल्वत ओर जल्वत की मरनून दुआओं का ऐहतेमाम करे.

तीसरा काम : दुआ करना.

झिक्र की हकीकत को दुआओं के जरीये रो-रोकर अल्लाह से खूब मांगे

(चोथी सिफत) इकरामे मुस्लिम

इकरामे मुस्लिम से ये चाहा जाता है के हमारे अंदर और पूरी उम्मत के अंदर जोळ पैदा हो जाये.

हक से जियादह देनेका नाम इकराम है.लेहाजा हम हमारे हक की रिआयत करते हुऐ,दूसरों के हक को अदा करने वाले बनें.हकदार को हक तो देनाही है, इस मे दो बातें है, ऐक है अख्लाक, और दूसरा है मामलात.अख्लाक और मामलात की दुरुस्तीसे आपस में जोळ पैदा होगा,और गैरोंके इमानमें दाखिल होनेकी राहें खुलेगी

नमाझ हम मस्जिद में पढते है,रोजह हमारे अंदर होता है और जकात सिर्फ इमान वाले को दीजाती है और हज के इलाके में गैरों का जाना मना है. इसलिऐ गैर तो हमारे अख्लाक और मामलात से ही मुतअष्षिर होंगे.

मामलात के बिगडने से नेकियां दूसरों की होजायेगी, और मामलात की दुरुस्ती से, नेकीयों की हिफाजत होगी, और हमारे अंदर इकराम का जझबा पैदा होगा.

हासिल करने का तरीका

इकराम की सिफत को हमारी जिंदगी में लानेके लिये तीन लाइन की महेनत है.

पहेलाकाम:लोगोमें चलफिर कर इकराम की खूब दअवत दीजाये

(१) हुझूर ﷺ का इरशाद है :वोह शख्स जो हमारे बळों की ताझीम न करे. हमारे ब[illegible]चों पर रहम न करे,और हमारे उलमा की कदर न करे, वोह हमारी उम्मत में से नहीं है. (मुस्नदे अहमद)

(२) हुझूर ﷺ का इरशाद है : मख्लूक सारी की सारी अल्लाह ताला की अयाल है,पस अल्लाह तआला को वोह शख्स बहोत महबूब है. जो उस की अयाल के साथ ऐहसान करे. (मिश्कात शरीफ)

(३) हुजूर ﷺ का इरशाद है : जो शख्स अपने भाइ के किसी काम में चले फिरे और कोशिश करे उसके लिये दस बरस के ऐअतेकाफ से अफझल है.

दूसरा काम : अमली मश्क करना.

◆ हर मुसलमान पर, इझ्झत की निगाह डालने की मश्क करे. ◆ गैरों से अच्छा सुलूक करे. ◆ हरएेक के हुकूक को जानकर अदा करे. ◆ अपनी झात से किसी को तकलीफ न पहोंचाए. सब को फाइदा पहोंचाये ◆ गुनेहगार से नफरत न करे, बल्के गुनाहों से नफरत करे. ◆ जो अपने लिये पसंद करे वोही अपने भाइ के लिये पसंद करे.

तीसरा काम : दुआ करना.

इकराम की हकीकत को दुआओंके जरीये रो-रोकर अल्लाह से खूब मांगे

(पांचवी सिफत) इख्लासे नियत

इख्लासे नियत से ये चाहा जाता है के हमारे अंदर लिल्लाहियत पैदा होजाये.

यानी हम जोभी अमल करें खालिस अल्लाह को राझी करने के लिये करे उस में दिखलावा न हो, किसी दूसरे को राजी करने के लिये न हों.हम जोभी अमल करते हैं वोह सही है या गलत,उलमा ही बता सकते हैं. और अमल मे इख्लास है या नहीं है अल्लाह ही जानते हैं, लेकिन अल्लाह उस वकत बतलाऐंगे जब अमल करने का वकत हाथ से निकल चुका होगा. इख्लास बडी लतीफ शै है आखिर में आता है और सब से पहेले चलाजाता है. अल्लाह बहोत बेनियाज है, शिर्क वाले अमल कबूल नही करते. बडे–बडे अमल नियत की खराबी की वजह से मरदूद करार दीये जाते हैं.कयामत में सबसे पहेले जिन का हिसाब होगा. उस में शहीद, सखी, और आलिम होंगे, जिन को नियत की खराबी की वजह से जहन्नम में फेंक दिया जाऐगा.

हासिल करने का तरीका

इख्लास की हकीकत को हमारी जिंदगी में लानेके लिये तीन लाइन की महेनत है

पहेला काम : लोगोमें चलफिर कर इख्लास की खूब दअवत दीजाये

(१) हुज़ूर ﷺ का इरशाद है : इख्लास वालों के लिए खुशहाली हो के वोह हिदायत के चिराग़ है. उन की वजह से सख्त से सख्त फित्ने दूर हो जाते है(बयहकी शरीफ)

(२) हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया: इस उम्मतको रफ्अतो,इज़्ज़त और दीनके फरोग की बशारत सुना दो, लेकिन दीन के किसी काम को जो शख्स दुनिया के वास्ते करे,आखेरत में उस्का कोइ हिस्सा नहीं.

(३) हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : मुजे तुमपर सब से जियादह खौफ शिर्के अस्गर का हे,सहाबा रदि.ने अर्ज़ किया शिर्के अस्गर क्या है ? आप ﷺ ने इरशाद फरमाया दिखलावे के लिये अमल करना.

दूसराकाम : अमली मश्क करना.

◆ हर अमल के वक्त अपनी निय्यत को दुरुस्त करे. ◆ अमल शरु करे तो सोचे,के ये काम में किस के लिये कर रहा हुं.नमाज़ के अलावह तमाम अमल के दरम्यान में भी सोचे के ये काम किस के लिये हो रहा है और आखिर में भी सोचे ये काम किस के लिये हुआ. ◆ अगर जवाब हो अल्लाह के लिये तो शुक्र अदा करे और इस्तिगफार करे के जैसा हक था वैसा अदा न हो सका. क्यूँ के बद निय्यती से अमल मरदूद हो जाता है और बे निय्यती से अमल फासिद हो जाता है. ◆ रोजाना कोइ ऐक अमल ऐसा करे जिस को अल्लाह और उस के फरिश्तों के सिवा कोइ न देखे.

तीसरा काम : दुआ करना

इख्लासकी हकीकतको दुआओंके जरीये रो-रोकर अल्लाह से खूब मांगे

(छट्ठी सिफत) दअवते इलल्लाह

दअवते इलल्लाह से ये चाहा जाता है के हमारे जान और माल की तरतीब सही हो जाये.

हर इन्सान को अल्लाह ने दो नेअमतें दी है,जान और माल.मोमिन के जान और माल को अल्लाह ने जन्नत के बदले में खरीद लिया है. जान और माल अल्लाह की दी हुइ अमानत है. इसे हम अपनी मरजी के मुताबिक इस्तेमाल करेंगे तो कुर्आने पाक के फैसले के खिलाफ होगा. जबतक उम्मत के जान और माल का इस्तेमाल सही था. दीन दुन्या में सरसब्ज और शादाब था.जब से जान और

माल का इस्तेमाल गलत तरीके से होनेलगा तो गैर महेसूस तरीके से दीन जिंदगीयों मे से निकलता चला गया.

शरीअत को उठाकर देखो के हुझूर ﷺ ने और सहाबा रदि. ने जान और और माल कहां लगाया? पता चलेगा के अपने आप को सब से जियादह दीनपर लगाया, फिर बीबी बच्चों पर लगाया, और वहां से वकत बचा तो अपनी कमाइ पर लगाया. और जो कुछ कमाया उस को जियादह से जियादह दीनपर लगाया, वहां से बचा तो बीवी बच्चों पर लगाया, और वहां से बचा तो अपने आप पर लगाया. इस तरह दीन की महेनत करेंगे तो अल्लाह ताला बगैर महेनत के माल देंगे, और बगैर माल के चीजें देंगे और बगैर चीजों के काम बनाऐंगे.

हमारी जान और माल की तरतीब सही होजाये उस के लिये बझुर्गाने दीन ने ऐक तरतीब बताइ है. जिंदगी की मश्गूली में से निकल कर, जल्द से जल्द चार महीने अल्लाह के रास्ते में लगाऐ. और उस के नूर को बाकी रखने के लिऐ, हर साल सालीस दिन लगाऐ और इस के नूर को बाकी रखने के लिऐ मकामी पांच काम पाबंदी के साथ करे.

हासिल करने का तरीका

दअवते इलल्लाह की हकीकत को हमारी जिंदगी में लाने के लिये, तीन लाइन की महेनत है.

पहेला काम : लोगो में चल फिर कर अल्लाह के रास्ते में निकलने की खूब दअवत दीजाये.

(१) हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : अल्लाह के रास्ते में थोळी देर खळा रहेना शबे कद्र में, हजरे अस्वद के सामने इबादत करने से बेहतर है. (इब्ने हिब्बान)

(२) हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : ऐक सुब्ह या अेक शाम अल्लाह के रास्तेमें निकल जाना, दुनिया और माफीहासे बेहतर है. (बुखारी)

(३) हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : थोडी देर का अल्लाह के रास्ते में खळा होना, अपने घर की सत्तर (७०) साल की नमाझसे अफझल है.

दूसरा काम : अमली मश्क करना.

◆ हरसाल चालीस दिन का ऐहतेमाम करे मकामी काम पाबंदी के साथ करें. ◆ आनेवाली जमाअत की नुस्रत करे. ◆ हफतेवारी

इजतेमा में तआम और कयाम के साथ शिर्कत करे. मश्वरे,जोड और इजतेमा में पाबंदी के साथ शिर्कत करे.

तीसरा काम : दुआ करना

दअवते इलल्लाह की हकीकत को दुआओं के जरिये रो-रोकर, अल्लाह से खूब मांगे.

खुलासह

ये छे सिफात सिर्फ बयान करने के लिऐ नहीं है बल्के महेनत कर के अपनी जिंदगी में लाना है,इसलिऐ जब भी दअवत दे,तो छे सिफात की हकीकतको सामने रखकर दअवत दे,बात करनेवाले के सामने अगर छे सिफात की हकीकत न होगी,सिर्फ छे सिफात का इल्म होगा तो उस इल्म की वजह से दूसरों की इस्लाह की निय्यत हो जाऐगी, अपनी इस्लाह की निय्यत न रहेगी. जिस की वजह से खुद उस की अपनी दअवत से उस का यकीन नहीं बनेगा और दूसरों पर उस की दअवत का असर भी नहीं होगा.

अगर दूसरों की इस्लाह की निय्यत होगी तो दो बात के अलावह तीसरी बात न होगी,या तो लोग दअवत कबूल करलेंगे, या इनकार करेंगे. अगर बात कबूल करली तो दअवत देने वाले में उजब और किब आयेगा,और अगर बात को कबूल नहीं किया तो गुस्सा आयेगा,या मायूसी आयेगी. और जब मायूसी आऐगी तो खुद काम को ही छोळ बेठेगा.

असल में दअवत के जरीये से अपने यकीनों की तब्दीली मकसूद है इसलिऐ जिस सिफात की दअवत दे तो उस सिफात की हकीकत को सामने रखकर दअवत दे अपने यकीन की तब्दीली की निय्यत से जब दअवत देंगे,तो अल्लाह पाक उस दअवत में वोह तासीर पैदा करेंगे जो दूसरों की हिदायत का जरीया बनेगी. और उसकी अपनी दअवत में कोइ कमी नही आयेगी.

हझरत मौलाना सअद साहब दा.ब.के मलफुझात

जो बात मुनासिब है वोह हासिल नहीं करते
जो अपनी गिरह में है उसे खो भी रहे हैं
दे इल्म भी हमलोग हैं और गफलतभी है तारी
अफसोस के अंधे भी हैं और सो भी रहे हैं

तर्के लायानी

◆ यानी ऐसे कामों,और ऐसी बातों से बचना,जिस से न दुनिया का फाइदा हो, और न दीन का.

◆ जिस तरह बीमार आदमी को दवाके साथ परहेज बताया जाता है ताके जल्दी सिहहत मिले और तंदुरस्ती बढे. इसी तरह छे सिफात के जरीये जो दीन हमारी जिंदगी में आरहा है,उसकी हिफाज़त के लिये गुनाहों के साथ-साथ फुजूल काम और फुजूल बातों से बचे, ताके नेकियों की हिफाजत हो और नेकियो में बढोतरी हो.

◆ फुजूल बात नेकियों को इस तरह खा जाती है,जिस तरह आग सुकी लकडी को खा जाती है, या जैसे उस्तुरा बालों को उडा देता है.

◆ हुजूर ﷺ का इरशाद है : जो अल्लाह पर,और आखेरत के दिनपर इमान रखता हो उसको चाहिये के खैर की बात कहे,या खामोश रहे. (बुखारी शरीफ)

◆ हुजूर ﷺ का इरशाद है : जो शख्स दो चीज़ों का जिम्मा ले-ले, (के गलत जगह पर इस्तेमाल नहीं करेंगे तो) में उसके लिये जन्नत का जामिन हुं ऐक जबान, दूसरी शर्मगाह.(बुखारी शरीफ)

◆ हुजूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : आदमी सिर्फ लोगों को हसांने के लिये कोइ ओसी बात केह देता है, जिस में कोइ हरज् नहीं समजता, लेकिन उस की वजह से जहन्नम में जमीन आसमान के दरम्यानी फासले से भी जियादह गेहराइ में पहोंच जाता है. (मुस्नदे अहमद)

◆ हुजूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : बंदा जब तक अपनी जुबान की हिफाजत न करले इमान की हकीकत को हासिल नहीं कर सकता.

◆ हज़रत सुलेमान अल.से नक्ल किया गया है के अगर कलाम (बात करना) चांदी है, तो सुकूत (चुप रेहना) सोना है.

◆ हज़रत उमर रदि. फरमाते हैं. जो शख्स फुजूल कलाम (बात) छोडदेता है उसको हिकमत अता की जाती है. जो शख्स फुजूल देखना छोड देता है,उसे खुशूए कल्ब इनायत किया जाता है. जो शख्स फुजूल खाना पीना तर्क करदेता है उसे इबादत की लज़्ज़त हासिल होती है. जो शख्स हंसी तर्क करदे तो उसको रोअब, और दबदबा अता किया जाता है. जो शख्स मजाक और बेजा दिल्लगी तर्क करदेता है तो उसके दिल में इमान का नूर जल्वागर होता है

मकामी पांच काम

रोजने के तीन काम

(१) किसी भी ऐक नमाज़ के बाद मस्जिदवार जमाअतके साथ,अपनी जात से लेकर,अपना घर,अपनी बस्ती,पूरी दुनिया,बल्के कयामत तक आनेवाले इनसानों की जिंदगी मे, सो फ़ीसद दीन हकीकत के साथ कैसे आजाये,उसकी फिक्रों को लेकर मश्वरे में बेठना तकाजों को घर से सोचकर जाना,और अपने जिम्मे जोभी तकाजा आये उस को पूरा करने की नियत के साथ मश्वरे में बेठना.गुजिश्ता कल की कारगुजारी लेना,और आइन्दह कल के तकाजों को बांटना.और कम से कम वकत में इस काम को पूरा करना.

(२) मस्जिद की आबादी के लिये,और मश्वरे के तकाजों को पूरा करने के लिये ढाइ. घंटे फारीग करना.जिस में तीन अमल यानी तालीम और इस्तिकबाल के साथ घर–घर की मुलाकात करना,जिस में इस बात की फिक्र करना के, ◈ घर के सब लोग नमाज़ी बनजाये ◈ सबकी नमाज़ सही होजाये, ◈ सब तिलावत करनेवाले बनजाये ◈ जो जमाअत आए उस का साथ देने वाले बनजाये. ◈ मर्द सब जमाअत में जानेवाले बन जाये. ◈ मस्जिद मे जो तालीम हो रही हो उसकी दअवत दे जो साथी जमाअत में गए हों,उनके घर की खबर गीरी करना बस्ती में कोइ बीमार हो,उस की बीमार पुर्सी करना. ◈ मर्हुम के घरवालों की ताअजियत करना ◈ तश्कील करना और वसूल करना,अगर इस तरतीब से काम हुवा तो मुल्कों के तकाजे अपनी मस्जिद से पूरा कर सकेंगे.

(३) चार महीने और चालीस दिन की जमाअतें अपनी मस्जिद से तकाजे पर निकाल सके उस के लिये घर का माहोल और खुसूसन मस्तूरात का जहेन बनाना भी बोहत जरूरी है, इस के लिये रोजाना दो तालीम पाबंदी से करना. (१) ऐक मस्जिद की तालीम, जिस में फजाइल की तमाम किताबो में से मौका ब मौका थोडा थोडा पढना और मोहताज बनकर सुनना.

और दूसरी तालीम अपने घर में करना,घर की तालीम खुद करे और पाबंदी से जुडे,तालीम में घरकी तमाम मस्तूरात को और तमाम

बच्चों को शरीक करे.यहांतक के दुध पीते बच्चे को भी मां अपनी गोद में लेकर बैठे,जिस में कुर्आन के और छे सिफात के मुजाकरे के साथ साथ,वुझु,गुसल और नमाझके फराइझ,वाजेबात,सुन्नते मकरूहात, और फासिद करनेवाली चीजों वगैरह के मजाकरे भी वकतन फ वकतन करे. और हर हफते जहां पर मस्तूरात की तालीम होती है उसमें भी पाबंदी के साथ भेजे. इस से मस्तूरात में अमल का शोक पैदा होगा,और दीनदारी आयेगी,और मर्दो के लिए दअवत के काम में मददगार साबित होगी.

हफते का अेक काम

(४) हफते में दो गश्त करना,ऐक अपनी मस्जिद का,अेक पडोस की मस्जिद का जो मश्वरे से तै हो,जिस में दो नमाझों के बीच के वकतको फारिग करे और चार अमलों के साथ करे.दूसरी मस्जिद के गश्त में शरीक होने के लिये सब साथी अपनी मस्जिद में जमा होकर जमाअत की शकल में दूसरी मस्जिद में पोंहचे.दूसरी मस्जिद में अगर गश्त नहीं होता हो,या पांबदी के साथ नहीं होता हो तो गश्त के दिन ही पहोंचे,और साथ देकर और तरगीब देकर पाबंदी से गश्त करने पर उभारे,अगर पाबंद होजाये,या पाबंदी से गश्त होरहा हो तो वहांपर गश्त के दिन न जाये,बल्के गश्त के दिन के अलावह के दिन में जाकर,उनको साथ रखे, और गश्त के तमाम उमूर खुद कर के उन को बताया जाये,जब सीख जाए तो दूसरी मस्जिद तै करे.

महीने का अेक काम .

(५) सत्ताइस दिन मेहनत कर के तीन दिन की अपनी जमाअत खुद बनाये,और हफता तै करके मश्वरे से आस पास में जहांजाना तै हो अल्लाह के रास्ते में निकल जाये.ता के सत्ताइस दिन में जो गफलत और गंदगी दिल मे पैदा हुइ है, वोह निकल जाये, और दिल फिर से बंदगी के काबिल होजाये और इसी के साथसाथ आस पास के गावुं की फिकर भी होजाये.और इनही फिक्रों की बुन्याद पर अल्लाह ताला साल में चार माह,या चालीसदिन के लिये मुल्क और बेरुन मुल्क में जाने की तौफीक के साथ साथ असबाब भी पैदा फरमा दे.

सुन्नतें

चोवीस घंटे के अैतबार से हम जोभी अमल (काम) करें, अगर उस अमल को अल्लाह के हुकम के मुताबिक और हुझूर ﷺ के तरीके के मुताबिक और अल्लाह को राझी करने के लिये करेंगे तो वोह अमल मकबूल होगा, ओर दीन बनेगा, और इसी के उपर दुनिया और आखेरत की काम्याबी का दारोमदार हे, इसलिऐ हर अमल का सुन्नत तरीका और मोका, महल की दुआयें लिखी जा रही है. अल्लाह रब्बुल इझ्झत हम सब को इन बातोंपर अमल करने की तौफीक अता फरमाये. आमीन.

खाने की सुन्नतें ओर आदाब

➤ खाने से पहेले ये निय्यत करे के खाने से जो ताकत आयेगी, उसे अल्लाह के अहकाम पूरा करने पर खर्च करुंगा और ये सोचे के खाने से पेट नहीं भरता बल्के अल्लाह भरते हैं

➤ सब से पहेले दोनाहाथ पोंहचोतक धोये.(हाथ को पूंछे नहीं)और कुल्ली करे. (तिरमिझी शरीफ)

➤ दस्तरखान बिछाकर खाना खाये. (बुखारी शरीफ)

व तीन तरीको में से किसी ऐक तरीके पर बेठे.ऐक जानु,दो जानु और उकड्डु यानी दोनों घुटने खड़े हों, और सुरीन जमीन पर हो.

➤ उंचे आवाज से 'बिस्मिल्लाहि व-अला बरकतिल्लाह' पढकर खाना शुरु करे. (अबूदावूद शरीफ)

➤ दाहने हाथ से खाना खाये. (बुखारी शरीफ)

➤ खाना ऐक किसम का होतो अपने सामने से खाये. (बुखारी)

➤ अगर कोइ लुकमा गिर जाओे तो उठाकर साफ कर के खाये. टेक लगाकर न खाये. (मुस्लिम शरीफ)

➤ खाने में कोइ अैब न निकाले.

➤ अगर शुरु में'बिस्मिल्लाह'पढना भूल जाये तो ये पढले.'बिस्मिल्लाहि अव्वलहु व आखिरहु.' (अबू दावूद शरीफ)

➤ अल्लाह का झिक्र करते हुओे खाये, गम की बातें न करे.

➤ खाने के वकत बिलकुल खामोश रहेना मकरुह है. (शामी)

➤ खाना सब मिलकर खाये उस में बरकत होती है. (अबू दावुद)

> साथी की रीआयत के साथ ऐहतेराम करते हुअे खाना खाये.
> बरतन के दरम्यान से न खाये क्यूँ के दरम्यान में बरकत नाजिल होती है. > जुता उतारकर खाना खाये (दारमी)
> तीन उंग्लियों से खाना खाये बीच की और शहादत की उंगली और अंगुठे से.
> दूसरे के साथ खाना खारहे हों तो, जब तक वोह खाना खाता रहे, अपना हाथ न रोके (इब्ने माजा)
> जब खाना खा चुको,तो बरतन के उस हीस्से को बराबर साफ करलो.जहांपर हमने खाना खाया है तो बरतन उसके लिये दुआए मग्फेरत करता है.
> हाथ धोने से पहेले अपनी उंग्लियां चाट लो, पहेले बीच की फिर शहादत की, फिर अंगुठा. (मुस्लिम शरीफ)
> पहेले दस्तरखान उठाये, फिर उठे.
> जब दस्तरखान उठने लगे तो ये दुआ पढे 'अल्हम्दु लिल्लाहि हम्दन् कथीरन् तैय्यिबम् मुबार–कन् फिहि गय्–र मुक्फफिन् व ला मुवद्दइन व ला मुस्तग्नन अन्हु रब्बना'तरजुमाः सब तारीफ अल्लाह के लिये हे,अैसी तारीफ जो बहोत पाकीजा और बा बरकत हो.ऐ हमारे रब! हम इस खाने को काफी समजकर,या बिलकुल रुखसत कर के,या इस से गैर मोहताज होकर नहीं उठ रहे हैं.
> खाना खाने के बाद हाथ धोये. और कुल्ली करे.
> खाना खा कर मस्जिद के रुमाल से हाथ साफ न करे.
> खाने के बाद की दुआ पढे, 'अल्हम्दु लिल्लाहिल्लझी अत् अमना व सकाना व–ज–अलना मिनल् मुस्लिमीन.'तरजुमा : सब तारीफ अल्लाह के लिये है,जिसने खिलाया,पिलाया और मुसलमान बनाया
> खाने का हिसाब न हो उसकी दुआ'अल्हम्दु लिल्लाहिल्लझी हु–व अश्ब–अना व अर्वाना व अन्अम् अ–लयना व अफ्झल.तरजुमा : उस अल्लाह का (लाख–लाख) शुक्र है जिसने हमें सैर किया और सैराब किया,और हमपर ये फजल और इन्आम फरमाया.
> जब किसी की दअवत खाये तो ये पढे.'अल्लाहुम्म अत्इम् मन अत्–अ–मनी वस्कि मन् सकानी' तरजुमा : अय अल्लाह ! जिस शख्सने मुजे खिलाया तू उस को खिला और जिसने मुजे पिलाया तू उसे पिला.

> बरतन के दरम्यान से न खाये क्यूँ के दरम्यान में बरकत नाज़िल होती है.
> मेज़बान को ये दुआ दे. 'अल्लाहुम्म बारिक् लहुम् फीमा रज़क्त-लहुम् फग्फिर् लहुम् वरहम्हुम' तरजुमा : ऐ अल्लाह तूने जो रिज़्क उनको दिया है उस में और बरकत दे और फिर उन की मग्फेरत फरमा और उन पर रहम कर. (हिस्ने हसीन)
> खाने से पहेले हाथ धोना गुरबत दूर करता है, और खाने के बाद हाथ धोना रंज दूर करता है.
>जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढी जाऐ,शैतान उसपर कब्जा करलेता है.
> हज़रत अबू हुरैरह रदि.से रिवायत है के ऐक उंगली से खाना शैतान की आदत है. दोसे खाना मुतकब्बेरीन की आदत है. और तीन उंग्लियों से खाना हज़राते अंबिया अल.की आदत है.(जमउल वसाइल) और मुल्लाअली कारी रह.ने लीखवा है के पांच उंग्लियों से खाना हरीसों की अलामत है.

पीने की सुन्नतें और आदाब

> दाहने हाथ से पीये क्यूँ के बाऐं हाथ से शैतान पीता है.(मुस्लिम)
> बेठकर पीये. (मुस्लिम) बिस्मिल्लाह पढकर पीये. (बुखारी)
> तीन सांस से पीये और तीनोमरतबा बरतनको मुंहसे अलगकरे.
>देखकर पीये. > पीने के बाद अल्हम्दुलिल्लाह कहे. (बुखारी)
> बरतन के टूटेहुऐ किनारे की तरफ से न पीये.(अबूदावूद शरीफ)
> कोइ भी ऐसा बरतन हो जिस से दफअतन पानी जियादह आ-जाने का ऐहतेमाल हो,(जैसे मश्कीजा)या ये अंदेशा हो के इस में कोइ सांप,या बिच्छू हो ऐसे बरतन से मुंह लगाकर पानी न पीये.
> पीने की चीज अगर गरम है तो फुंक मारकर न पीये.
> पानी चूस कर पीये गट—गट की अवाज न हो.
ॐ कोइ भी चीज अगर पी कर दूसरों को देना हो तो दांहनी तरफ से शुरु करे. वपिलाने वाला सब से आखीर में पीये.(मुस्लिम शरिफ)
> पानी पीने के बाद ये दुआ पढे. अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी सकाना अज़्बन् फुरातन् बिरहमतिही माअन् व लम् यज्अलहु मिल्हन् उजाजा.

तरजुमा : सब तारीफ अल्लाह के लिए है.जिसने अपनी रहमत से हमें मीठा, खुशगवार पानी पिलाया. और हमारे गुनाहों के सबब उसको खारा, कड़वा, नहीं बनाया.

दूध पीने के बाद ये दुआ पढे.

'अल्लाहुम्म बारिक् लना फीहि वज़िद्ना मिन्हु' (हिस्ने हसीन) तरजुमा : ऐ अल्लाह ! तू इस में हमें बरकत अता फरमा. और ये हम को और ज़ियादह नसीब फरमा.

ज़मज़म का पानी ये दुआ पढकर पीये.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु–क इल्मन् नाफिअंव वरिज़्क़ंव वासि-अंव व शिफाअम मिन् कुल्लि दाअ'(हिस्ने हसीन) तरजुमा : ऐ अल्लाह ! मैं तुज से नफा पहोंचाने वाले इल्म, और फराख रोज़ी और हर बीमारी से शिफा का सवाल करता हुं.

नाखुन काटने की सुन्नतें और आदाब

> दाहने हाथ की शहादत की उंग्ली से शरु करे,छोटी उंग्ली तक, फिर बाऐं हाथ की छोटी उंग्ली से शुरुकरे अंगूठे तक, दाहने हाथ के अंगुठे पर खतम करे.

> पाउं में दाहने पेरकी छोटी उंग्ली से शुरु करे अंगूठे तक, और बाऐ पेर के अंगूठे से शुरु करे और छोटी उंग्ली पर खतम करे, (जिस तरतीब से पेर की उंग्लीयो का खिलाल किया जाता है.)

>नाखुन को दांतो से काटना मकरुह है, उससे बर्स और जुनून पैदा होता है.

>हुज़ूर ﷺ जुम्अह के दिन नमाज़े जुम्अह से पहेले मूंछ, और नाखुनों को काटते थे (शामी)

> जो शख्स जुम्अह के दिन नाखुन काटे, अगली जुम्अह तक बलाओं से उस को अल्लाह तआला पनाह देंगे.

मोमिन जो फिदा नक्शे कदमे पाक नबी हो
हो ज़ेरे कदम आज भी आलम का खज़ीना
गर सुन्नते नबवी की करे पेरवी उम्मत
तुफां से निकल जाऐ फिर उसका सफीना

सोने की सुन्नतें और आदाब

> जब सोने का इरादा करे तो पहेले वुज़ू करे. और दो रकात सलातुत्तौबा की निय्यत से नफल नमाझ पढकर अपने गुनाहों की माफी मांगे, अगर बावुझू सोने के बाद मौत आगइ तो शहादत का मरतबा मिलेगा. (अबूदावूद शरीफ)

> तीनबार अपना बिस्तर जाळ ले. (सिहाहे सित्ता) मस्जिद में हो तो हाथ फेरले.(मस्जिद में मोटा कपडा बिछाकर सोये. और ऐतेकाफ की निय्यत करले.)

> सोने से पहेले दूसरे कपड़े तब्दील करना सुन्नत है.(जा.मआद)

> दोनो आंखो में तीन-तीन सलाइ सुरमा लगाकर सोये.

> सोने से पहेले 'बिस्मिल्लाह' पढकर, दरवाजा बंध करदे, चिराग बुजादे, बरतन ढांक दे, ढक्कन न हो तो उपर लकळी रखदे.(सिहा

> तहज्जुद में उठनेकेलिये सूरऐ कहफ की शुरु की, और आखिर की दस-दस आयतें पढले, और जिस वक्त उठने का इरादा हो उस की निय्यत करके सोये. इन्शाअल्लाह वकतपर आंख खुलजायेगी

सोने से पहेले कुछ न कुछ पढलिया करो.

> सूरऐ वाकेआ पढले कभी फाका नहीं आयेगा.

> अलिफ-लाम-मीम-सजदा और सूरऐ मुल्क पढले. अजाबे कब्र से महफूज रहेंगे. (तिरमिझी शरीफ)

> सूरऐ बकरह का आखरी रुकूअ पढले.(बुखारी शरीफ)

> आयतुल कुर्सी पढले. जिस से अल्लाह तआला घर की हिफाजत फरमाते हैं, और शैतान से महफूज रखते हैं. और ऐक फरिश्ता उस के सिरहाने मुकर्रर फरमाते हैं जो मौत के अलावह हर चीज से उस की हिफाजत करता है.

> सूरऐ फातेहा, और चारो कुल पढले.(बुखारी) दुरुद शरीफ पढे

> तीन बार इस्तिग्फार पढे. (तिरमिझी शरीफ)

> तस्बीहे फातिमा. तेंतीस बार 'सुब्हानल्लाह' तेंतीस बार 'अल्हम्दु लिल्लाह' और चौंतीस बार 'अल्लाहु अकबर' पढे.(मुस्लिम) जिस से दिन भर की थकान दूर होजाती है. और बदन में कुव्वत आती है.

> इन सब को पढकर दोनों हथेली पर फूंक मार कर मुंह से शरु कर के पूरे बदन पर जहां तक हाथ पहोंच सके फेरले.

> उस के बाद दाहना हाथ दाहने गाल के नीचे रखकर दाहनी करवट पर किब्ला रुख होकर सोजाये (तिरमिझी शरीफ) और बांया हाथ बांइ रान पर रख्खे और पेर को थोड़ा मोळ ले.

> और ये दुआ तीनबार पढे 'अल्लाहुम्म कीनी अजा-ब-क यव्-म तब्असु इबादक'.(अबू दावूद) तरजुमा : ऐ अल्लाह ! तू मुजे अपने अजाब से बचाइयो, जिस दिन तू अपने बंदो को (कब्रोंसे) उठाए.

> फिर ये दुआ पढे 'अल्लाहुम्म बिस्मि-क अमुतु व अह्या' (बुखारी) तरजुमा : ऐ अल्लाह ! में तेरे ही नाम पर मरुंगा और (तेरे ही नाम पर) जीता हुं.

> सोते में कोइ अच्छा ख्वाब देखे और आंख खुल जाए तो 'अल्हम्दु लिल्लाह' कहे और उन लोगों से बयान करे जो हम से महोब्बत करते हों. ताके अच्छी ताबीर दे.(बुखारी शरीफ)

> और जब बुरा ख्वाब देखे तो अपनी बांइ जानिब तीन मरतबा थुत-कार दे या थूंक दे, या फूंक मारदे. और तीन मरतबा 'अउझु' पढे और करवट बदल दे. और किसी से ख्वाब का जिक्र न करे, ताके वोह ख्वाब कोइ नुकसान न पहोंचाये.

> जब सोते हुऐ डर जाये या घभराहट हो जाये,या नींद उचट जाये तो ये दुआ पढे 'अउझु बि-कलिमा-तिल्लाहीत्ताम्मा-ति मिन् ग-दबिही वइकाबिही व शर्री इबादिही, व मिन् ह-मझातिश् शयातीनी व अंय यहदुरुन'. (तिरमीझी शरीफ)तरजुमा : अल्लाह तआला के पूरे कलेमात के वास्ते से,में अल्लाह के गजब से, और उसके अजाब से और उस के बंदो के शर से और शैतानो के वसवसो से और मेरेपास उनके आने से पनाह चाहता हुं.

> अगर मस्जिद में सोये हों,और कोइ हाजत पैश आये तो अकेला न जाये, बल्के किसी साथी को साथ लेकर जाये. और अगर गुसल की हाजत पैश आजाये तो किसी को उठाकर फौरन मस्जिद से निकल जाये, और उसी साथी के जरीये जरुरत की चीजें बाहर मंगाले.

> नींद से उठते ही दोनों हाथों से चहेरे,और आंखो को मले,ताके नींद का खुमार दूर होजाये. (शमाइले तिरमिझी)

> उस के बाद तीन मरतबा 'अल्हम्दु लिल्लाह' कहें ओर कल्माऐ तय्येबा पढे, फिर ये दुआ पढे 'अल्हम्दु लिल्लाहिल्लझी अहयाना बअ्द मा अमातना व इलयहिन्नुशूर' उस अल्लाह का (बहुत बहुत) शुक्र हे जिसने हमें मारने के बाद जिला दिया, और उसीकी तरफ मरकर जाना है.(अबू दावूद शरीफ)

> जब भी सोकर उठे तो मिस्वाक करले. (मुस्नदे अहमद)

> बरतन में हाथ डालने से पहेले तीन मरतबा हाथ को अच्छी तरह धो ले. जब भी कपडे या जूते पहेने,तो अव्वल दाहने हाथ या पेर में, और फिर बायेंहाथ या पेर में पहेने.और जब निकाले तो पहेले बायें हाथ या पेर से निकाले.

> दोपहर को झोहर से पहेले सोना सुन्नत है चाहे नींद आये या न आये.(इस से तहज्जुद में उठने के लिये मदद मिलेगी)

> ऐक लिहाफ में दो मर्द या दो औरत न सोये.

बैतुलखला की सुन्नतें और आदाब

> बैतुलखला में सर ढांक कर,और जूता चप्पल पहेन कर दाखिल हो दाखिल होने से पहेले ये दुआ पढले 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म-इन्नी अउझु बि-क मिनल् खुबुषि वल् खबाइष '(ऐ अल्लाह में तेरी पनाह चाहता हुं खबीष जिन्नों से मर्द हो या औरत) फाइदा : मुल्ला अली कारी रह.ने मिरकात में लिखा है के इस दुआ की बरकत से बैतुलखला के खबीष शयातीन और बंदे के दरम्यान पर्दा होजाता हे. जिस से वोह शर्मगाह नहीं देख पाते.

> बैतुलखला जाने से पहेले अंगूठी या किसी चीज पर अल्लाह का नाम,या कुर्आने पाक,या हुझूर ﷺ का नाम मुबारक लिखा हुवा हो और दिखाइ देता हो तो उसको उतारकर बाहर छोडकर जाये.(नसा

> बैतुलखला में दाखिल होते वकत पहेले बायां कदम अंदर रखे और कदमचे पर दाहना पेर पहेले रखे और जब उतरे तो पहेले बायां पेर निचे रखे. (झादुल मआद)

> जब इस्तिंजे के लिये सतर खोले तो आसानी के साथ जितना नीचे होकर खोल सके उतना बेहतर हे.(तिरमिझी शरीफ)

> इस्तिंजा करते वकत किब्ले की तरफ न चेहरा करे न पीठ करे

> इस्तिंजा करते वकत शदीद जरूरत के बगैर बात न करे और झिक्र भी न करे.

> इस्तिंजा करते वकत उसके ख्वास को दाहना हाथ न लगाऐ अगर पाक करने के लिए जरूरत हो तो बायां हाथ इस्तेमाल करे.
> पेशाब.पाखानों के छिंटों से खूब बचे.अकषर अजाबे कब्र इन के छिंटो से न बचने की वजह से होता है.(तिरमिझी शरीफ)
> इस्तिंजा करते वकत बायें पेर पर जियादह जोर दे कर बेठे ता के सहुलत से फरागत हासिल होजाये.(तिरमिझी शरीफ)
> बेतुल खला मे न नाक साफ करे और न थूके.
> बेठकर पेशाब करे. खडे खडे पेशाब न करें.(तिरमिझी शरीफ)
> पेशाब करने के लिये नरम जगा तलाश करे ताके छिंटे न उडे.
> गुसलखानें मे पेशाब न करे उससे अकषर वसवसे पैदा होतेहैं
> जब बेतुलखला से निकले तो पहेले दाहनां पेर बाहर निकाले, फिर बायांपेर, उस के बाद ये दुआ पढे. 'गुफरा–न–क अल्हम्दु लिल्लाहिल्लझी अजह–ब अन्निल् अजा व आफानी' तरजुमा : ऐ अल्लाह ! में तुज से मग्फेरत का सवाल करता हुं. सब तारीफ अल्लाह ही के लिये है.जिसने मुज से इजा देनेवाली चीज दूर कर दी. और मुजे आफियत अता फरमाइ.(मिश्कात शरीफ)

अहम नसीहत

हझरत शकीक बल्खि रह.फरमाते हैं के आदमी चार चीजो में जुबान से तो मुवाफेकत करते हैं. और अमल से मुखालेफत करते हैं.

(१) वोह केहते हैं के हम खुदाताला के बंदे (और गुलाम) हैं और काम आजाद लोगों के से करते हैं.

(२) ये केहते हैं के खुदाताला शानहु हमारी रोजी का जिम्मेदार है, लेकिन उनके दिलों को (उसकी जिम्मेदारी पर) उस वकत तक इत्मिनान नहीं होता जब तक दुन्या की कोइ चीज उन के पास न हो.

(३) ये केहते हैं आखेरत दुन्या से बेहतर है,लेकिन दुन्या के लिये माल जमा करने की फिक्र में हरवकत लगे रेहते हैं.

(४) ये केहते हैं के मौत यकीनी चीज है, आकर रहेगी, लेकिन आमाल ऐसे लोगों के से करते हैं जिनको कभी मरनाही नहींहो.

गुसल का मसनून तरीका

☞ कपडे निकालने से पेहले पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढे.

☞ निय्यत करे. वाजिब गुसल हो तो ये कहे,नापाकी दूर करने के लिये गुसल करता हूं. और पाक हो तो ये कहे, अल्लाह को राजि करने के लिये और षवाब हासिल करने के लिये गुसल करता हूं.

☞ पेहले दोनों हाथ पोंहचो तक तीन बार धोओ. पेशाब पाखाने की जगह धोये चाहे नापाकी न लगी हो,फिर बदन के किसी भी हिस्से में नापाकी लगी हो तो उसे धो लें.

वुझू करे,जिसमें मुंह भरकर कुल्ली करे,और नाक में खूब सफाइ करके जहां तक नरम जगह है, वहां तक तीन बार पानी पहोंचाऐ.

☞ उसके बाद सरपर पानी डाले फिर दाहने कंधे पर फिर बांये कंधे पर,इतना पानी डाले के सरसे पांउतक पहोंच जाये,फिर बदन को हाथ से मले,ये ऐक बार हुवा, इसी तरह दूसरी और तीसरी बार भी पानी बहाये अगर ऐक बाल बराबर जगह भी सुकी रहेगी तो गुसल नहीं होगा.

☞ कान, नाक वगैरह जहां भी पानी न पहोंचने का अंदेशा हो ऐह-तियात से पहोंचाऐ.

☞ बगल के बाल,नाफ के नीचे के बाल, हर हफते साफ करे,वरना हर पंदरह दिन में साफ करले और अगर चालीस दिन गुजर गये तो गुनेहगार होगा.

गुसल के तीन फराइझ

(१) कुल्ली करना. इस तरह पर के सारे मुंह में पानी पहोंच जाये. (२) नाक की नरम हड्डी तक पानी पहोंचाना. (३) सारे बदन पर इस तरह पानी बहाना के अेक बाल बराबर जगह भी सुखी न रहे. (ऐक बाल बराबर जगा भी सुखी रेह जायेगी तो गुसल नहीं होगा)

गुसलकी पांच सुन्नतें

(१) दोनों हाथ पहोंचो तक धोना.(१) वुझू करना.(१) इस्तिंजा करना और बदन पर नजासत लगी हो उसे धोना. (१) नापाकी दूर करने की निय्यत करना. (१) तमाम जिस्म पर तीन बार पानी बहाना.

गुसल के पांच मकरुहात

(१) बगैर मजबूरी के ऐसी जगा गुसल करना जहां गैर महरम की नजर पडे.

(२) बगैर कपड़े पेहने नहाते वक़्त, क़िब्ले की तरफ मुंह करना. (३) गुसल करते वक़्त बगैर जरूरत के बात चीत करना. (४)गुसल करते वक़्त दुआएँ पढ़ना.(५) जो चीजें वुज़ू में मकरूह हे वोह चीजें गुसलमें भी मकरूह है.

मिस्वाक के फ़ज़ाइल

☞ हुज़ूर ﷺ ने फरमाया जो नमाज़ मिस्वाक करके पढी जाये,वोह उस नमाज़ से,जो बिला मिस्वाक पढी जाये सत्तर दर्जा अफजल है.

☞ ऐक हदीष में वारिद है के : मिस्वाक का अेहतेमाम किया करो उस में दस फाइदे हैं.(१) मुंह को साफ करती है.(२) अल्लाह की रज़ा का सबब है. (३) शैतान को गुस्सा दिलाती है (४) अल्लाह तआला महबूब रखते हैं.(५) फरिश्ते महबूब रखते हैं.(६) मसोढों को कुव्वत देती है.(७) बल्गम को खतम करती है. (८) मुंहमे खुश्बू पैदा करती है. (९) सूफरा को दूर करती है.(१०) निगाह को तेज करती है,उसके अलावह ये के सुन्नत है.

☞ उलमाने लिखा है के मिस्वाक के ऐहतेमाम में सत्तर फाइदे हैं. जिनमें से ऐक येके मरतेवक़्त कल्माऐ शहादत पढना नसीब होता है

☞ हुज़ूर ﷺ ने फरमाया : अगर में उम्मत के लिये मुश्किल न समजता तो उन्हें हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक का हुक्म देता.(मुस्लिम)

☞ हज़रत अलीरदि. इरशाद फरमाते है मिस्वाक हाफेजा बढाती है. और बल्गम दूर करती है.(अबूदावुद शरीफ)

☞ मिस्वाक ऐक बालिश्त (वेंत) से जियादह लंबी न हो सीधी हो, जियादह मोटी न हो, बेगिरह (गांठ) हो, पीलू की या जैतून की हो तो बहेतर है. लिखे मबवी में है के जियादह नाफेअ अखरोट की जड है

☞ मिस्वाक के नीचे के हिस्से में छोटी उंगली, और उपर की तरफ अंगुठा और बाकी उंग्लियां मिस्वाक के उपर रख्खे.

☞ मिस्वाक को चूसा न जाऐ, इस से वस्वसह, और अंधापन पैदा होता है.अलबत्ता हकीम तिरमिज़ी रह. केहते हैं के पहेली मरतबा मिस्वाक की जाये तो उसे चुसना चाहीये, और साफ थूंक, जिस मे खून न हो,निगल लेना चाहये,ये मौत के अलावह तमाम बीमारी के लिऐ मुफीद हे. मुट्ठी में मिस्वाक दबाने से बवासीर पैदा होती हे.

☞ चित लेटकर मिस्वाक करने से तिल्ली बढती है.(फज़ा. मिस्वाक)

☞ इस्तेमाल से पहेले मिस्वाक धो लिया जाये, ताके उस का मेल कुचेल दूर होजाये, इसी तरह मिस्वाक करने के बाद भी धो लिया जाये वरना शैतान उसको इस्तेअमाल करता है.(फझ़ा- मिस्वाक)

☞ मिस्वाक खडी कर के रखनी चाहये, जमीन पर न डाली जाये, वरना जुनून का खतरा है.

☞ मिस्वाक दाहनी तरफ से शरु करे. (चाहे सीधी करे या उपर नीचे) और तीन बार करे.

☞ बांस की मिस्वाक करना और बैतुल खला में मिस्वाक करना मकरुह है.

☞ मिस्वाक को दोनों तरफ से इस्तेमाल न करें.

वुझू के फझ़ाइल

☞ वुझू के आझ़ा कयामत में रोशन और चमकदार होंगे और इस से हुझूर ﷺ फौरन अपने उम्मती को पहेचान जायेंगे. (बुखारी)

☞ हुझूर ﷺ ने फरमाया : मोमिन का जेवर कयामत के दिन वहां तक पहोंचेगा जहांतक वुझू का पानी पहोंचता है.(मुस्लिम शरीफ)

☞ हुझूर ﷺ ने फरमाया :जिसने वुझू किया और अच्छी तरफ वुझू किया(यानी सुन्नतों और आदाबो मुस्तहब्बातका ऐहतेमाम किया तो उस के गुनाह जिस्म से निकल जाते हैं, यहां तक के उस के नाखूनों के नीचेसे भी निकल जाते हैं.

☞ जो शख्स वुझू के दौरान अल्लाह का झिक्र करता है, अल्लाह उसका तमाम जिस्म पाक कर देता है, और जो नहीं करता उस का सिर्फ वोह हिस्सा पाक करता है जिस पर पानी पहोंचता है.

☞ जो शख्स अच्छीतरह वुझू करता है फिर अपनी नझ़र आस्मान की तरफ उठाकर(दूसरा कल्मा)अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वअ-श्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू' कहे (तरजुमा : मैं गवाही देता हुं के अल्लाह के सिवा कोइ इबादत के लाइक नहीं, और गवाही देता हुं के बेशक हझ़रत मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और रसूल हैं. तो जन्नत के आठों दरवाजे खोल दिये जाते हैं, जिस दरवाजे से चाहे दाखिल होजाये.

हुझूर ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से कोइ शख्स अच्छी तरह वुझू कर के नमाझ़ के लिये निकलता है, तो हर दायें कदम के

उठाने पर अल्लाह तआला उसके लिऐ एक नेकी लिखे देते हैं, और हर बायें कदम के रखनेपर उसका ऐक गुनाह माफ कर देते है(अब उसे)इख्तियार है के छोटे छोटे कदम रखे या लंबे लंबे कदम रखे, अगर ये शख्स मस्जिद आकर जमाअत के साथ नमाज़ पढ लेता है तो उस की मग्फेरत करदी जाती है (अबूदावूद शरीफ)

☞ हुज़ूर ﷺ ने फरमाया : जब तुममें से कोइ शख्स अपने घरसे वुज़ू कर के मस्जिद आता है, तो घर वापस आने तक, उसे नमाज़ का षवाब मिलता रहेता है.

☞ उसके बाद आप ﷺ ने अपने हाथों की उंग्लियां ऐक दूसरे में दाखिल की और इरशाद फरमाया उसे अैसा नहीं करना चाहये.

वुज़ू का मस्नून तरीका

☞ क़िब्ले की तरफ मुंह करके, उंची जगहपर बेठे,और निय्यत करे के नमाज़ अदा करने के लिये वुज़ू करता हूं.

☞ उसके बाद ये दुआ पढ़ले 'अ–त–वज़्ज़उ– लि–र–फइल ह–दष्' 'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश् शयता निर्रजिम' 'बिस्मिल्लाहिल् अज़ीमि वल्हम्दु लिल्लाहि अला दीनिल इस्लाम.'

☞ फिर दोनों हाथों को पोंहचों तक धोये, दाहने हाथ से शुरु करे.

☞ तीनबार मिस्वाक करे,मिस्वाक न हो तो उंग्लीसे दांत साफ करे.

☞ तीनबार मुंह भरकर कुल्ली करे.

☞ तीनबार नाक में पानी डालकर नाक साफ करे और तीनों बार नाक छींके. तीन बार पूरा मुंह धोये और दाढी का खिलाल करे.

☞ वुज़ू करते–करते ये दुआ पढे 'अल्लाहुम्मग फिर्ली ज़ंम्बी व – वस्सिअ्ली फी दारी व बारिक् ली फी रिज़्की' ऐ अल्लाह ! तू मेरा गुनाह बख़्श दे, और मेरे घर (बार) में वुस्अत दे और मेरे रिज़्क में बरकत अता फरमा.

☞ दोनों हाथों को कोहनियों समेत धोये ओर हाथों की उंग्लियों का खिलाल करे और हाथ में अंगूठी वगैरह पेहनी हो तो हिला ले.

☞ ऐक मरतबा पूरे सर का मसह करे,फिर कान का,फिर गरदन का मसह करे मसह इस तरह करो के दोनों हाथ पानी से तर कर के दोनों हाथ की उंग्लियां बराबर मिलाकर,पेशानी के बालोपर रख कर पूरे सरपर दोनो हाथ गुज़ारते हुऐ गुद्दी तक लेजाओ,फिर गुद्दी से

दोनों हाथों की हथेलियों को कानों के पास से गुजारते हुऐ वापस पेशानी तक लेआओ. फिर शहादत की उंग्ली कानों के अंदर इस तरह फिरावो के हर जगा फिर जाऐ,और अंगूठे को कानों के उपर के हिस्से पर फिरालो. उसके बाद उंग्लियों की पुश्त से गरदन का मसह करो. अंगुठे को कानों के उपर के हिस्से पर फिरालो.उस के बाद उंग्लियों की पुश्त से गरदन का मसह करो.

☞ फिर दोनोंपेर टख्नो समेत धोये,पहेले दाहना फिर बांया पेर धोये

☞ बायें हाथ की छोटी उंग्ली से पेर की उंग्लियों का खिलाल करे. दाहने पेर की छोटी उंग्ली से शुरु करे और तरतीब वार बाऐं पेर की छोटी उंग्ली पर खतम करे.

☞ वुझू के बाद आस्मान की तरफ मुंह कर के, दूसरा कल्मा पढे उस के बाद ये दुआ पढें'अल्लाहुम्मज अल्नी मिनत्तव्वाबी–न वज् अल्नी मिनल् मु–त–तह्हिरीन' तरजुमा : ऐ अल्लाह ! मुजे बोहत तौबा करने वालो में और बोहत पाक रहेने वालो में शामिल फरमा.

वुझु के फराइझ चार हैं

(१) पेशानी के बालों से लेकर ठुळी (दाढी) के नीचे तक और ऐक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पूरा मुंह धोना (२)कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना. (३) सर के चोथे हिस्से का मसह करना. (४) दोंना पेरं टख्नो समेत धोना.

वुझु तोडने वाली चीजें–आठ हैं

(१) बेहोश होजाना (२) मजनून (पागल) होजाना (३) मुंह भर के कै करना. (४) नमाझ में खिल-खिला कर हंसना. (५) टेक लगा कर सोना.(६) बदन से खून या पीप का निकल कर बेह जाना. (७) पीछे की राह से हवा का निकलना.(८) आगे या पीछे की राह से कीसी भी चीज का निकलना.

वुझु की सुन्नतें

☞ निय्यत करना. ☞ शुरु में बिस्मिल्लाह पढना. ☞ दोनों हाथ पोंहचो तक धोना. ☞ मिस्वाक करना. ☞ तीन बार कुल्ली करना. ☞ तीन बार नाक में पानी डालना. ☞ तीनो बार नाक छींकना ☞ दाढी का खिलाल करना. ☞ हाथ-पेर की उंग्लियों का खिलाल करना ☞ ऐक बार पूरे सर का मसह करना.

☞ दोनों कानों का मसह करना. ☞ हर उज्व को तीन बार धोना ☞ आजाऐ वुझू को मल-मलकर धोना ☞ तरतीब से वुझू करना ☞ दाहनी तरफ से पहेले धोना ☞ पे दर पे वुझू करना. यानी ऐक उज्व सुपक न होने पाये और दूसरा धोले ☞ वुझू के बाद की दुआ पढना.

वुझू के मकरुहात

☞ नापाक जगापर बेठकर वुझू करना ☞ वुझू करते वक्त दुनिया की बातें करना. ☞ सीधे हाथ से नाक साफ करना. ☞ सुन्नत के खिलाफ वुझू करना ☞ जरुरत से जियादह पानी इस्तेमाल करना.

तयम्मुम का मस्नून तरीका

☞ निय्यत करना, के में नापाकी दूर करने या नमाझ पढने के लिये तयम्मुम करता हुं.

☞ दोनों हाथों को पाक मिट्टी पर मारे फिर हाथ जाड कर पूरे मुंह पर मले, जितना वुझू में धोया जाता हे उतने हिस्से पर हर जगह हाथ पहोंचाऐ.

☞ फिर दो बारह मिट्टीपर हाथ मारकर अंगूठी पेहनी होतो निकाल कर, दोनों हाथों को कोहनियों तक मले, इस तरहपर के दाहने हाथ की उंग्लियों को बायें हाथ की उंगिलयों पर इसतरह रखे के बायें हाथ की उंग्लियां, दाहने हाथ की शहादत की उंगली से आगे न बढे, फिर बायें हाथ की उंग्लियों को उस जगह से दायें हाथपर फेरते हुऐ कोहनी तक लेजावे, फिर बायें हाथ की हयेली को दायें हाथ की हयेली की जानिब वाले हिस्सेपर फेरते हुऐ पोंहचे तक वापस ले आओ फिर दाहने हाथ के अंगठे पर बायें हाथ का अंगुठा और उसके बाजुवाली उंगली से पकड कर फेरले.येही अमल दाहने हाथ से बायें हाथपर करे और उंग्लियों का खिलाल करले.

(व्होही तयम्मुम का तरीका है, और ये तीनों चीजें फर्झ है.)

✧ ◉ ⇨ ◈ ➡ ◈ ● ✦ ⟐ ➢ ★ ◎ ✦ ❖

तख्ते आरा था जो कल वोह आज जेरे खाक है
आलमे फानी का मंजर कैसा इब्रतनाक है

खाली

दिल सूरे यासीन से रहमान से खाली
हस्ती है तेरी दौलते कुर्आन से खाली

माना के मुसलमां नही इमान से खाली
दुनिया है मगर बूझरो सलमान से खाली

आबाअ की फकीरी के शहेनशाह लरझ जाये
औलाद है शाही में भी उस शान से खाली

किसतरह बनें अन्तुमुल् अअ्लव्-नके मिस्दाक
हैं पीरो जवां जोहरे इकान से खाली

हें यूं तो जमाने में बोहत इल्म के चर्चे
दुनियाऐ मोअल्लिम मगर उरफानसे खाली

दुनियाका गनी नेअमते जन्नत का वोह मालिक
जो कल्ब है दुनिया के हर अरमान से खाली

में यूं तो खताकारो गुनेहगार हुं या रब
लकिज नही हु में तेरे गुफरान से खाली

तुजपर ही भरोसा हो जब ऐ खालिको मालिक
मजमून मेरा, फिर हो क्यूँ उनवान से खाली

ऐ शाफेऐ मेहशर हो अता मुजको भी कौषर
रेह्जाऐ न शाहिद तेरे फैझान से खाली

अज़ान की दुआएँ

• जब तुम अज़ान सुनो तो वोही अल्फाज कहो जो मोअज़्ज़िन केहता है.(बुखारी शरीफ) लेकीन 'हय्य अलस्सलाह' और 'हय्य अलल् फलाह' के जवाब में 'ला हव्-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अज़ीम' कहो और फजर की अज़ान में 'अस्सलातु खयरुम मिनन्नव्म्'के जवाब मे'सदक्त व-ब-रर्-त' कहो और इकामत(तकबीर)में 'कद् कामतिस्सलाहु' के जवाब में 'अकामहल्लाहु व अदा-महा' कहे. (इहयाउलउलूम)

•जो शख्स अज़ान सुनकर ये दुआ पढे 'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहु ला शरी-क लहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु 'रज़ीतु बिल्लाहि रब्बंव् वबिल् इस्लामि दीनंव् वबि मुहम्मदिन् नबिय्या.' तरजुमा : मैं अल्लाह को रब मानने पर और मुहम्मद ﷺ को रसूल माननेपर और इस्लाम को दीन मानने पर राजी हुं) तो उसके गुनाह माफ करदिये जायेंगे. (मुस्लिम)

•हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो शख्स अज़ान का जवाब देने के बाद दुरुदशरीफ पढकर ये दुआ पढे'अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद् दअ्वति त्ताम्मति वस्सलातिल काइमति आति मुहम्म-द निल् वसि-ल-त वल् फज़ी-ल-त वब्अषहु मकामम् महमुद निल्लज़ी वअत्तहु इन्न क ला तुख्लिफुल मीआद्' तो उस के लिये,कयामत के दिन मेरी शफाअत वाजिब होगइ. (बुखारी)

तरजुमा : ऐ अल्लाह!इस पूरी पुकार के रब और काइम होने वाली नमाज़ के रब.मुहम्मद ﷺ को वसीला अता फरमा, और उन को फज़ीलत अता फरमा और उनको मकामे महमूद पर पहोंचा,जिस का तुने वादा फरमाया है बेशक तू वादा खिलाफ नहिं फरमाता.

•जो लोग अज़ान की अवाज सुन कर, नमाज़ के लिये जल्दी करते हैं, उन्हें कयामत के दिन नरमी, लुत्फ, और महेरबानी के साथ अवाज दी जायेगी.(इहयाउल उलुम)

तुम को शिकवा है हमारा मुद्दइ मिलता नहीं
देने वाले को गिला है के गदा मिलता नहीं
बेनियाजी देख कर बंदे की, केहता है करीम
देनेवाला दे किसे दस्ते दुआ मिलता नहीं

नमाज़ का मस्नून तरीका

☞ अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढना हो तो पहेले सफ सीधी करो और कंधे से कंधा मिला दो बीच में जगा खाली न रहे.

☞ किब्ला रुख होकर इसतरह खडे रहें के नजर सजदे की जगा पर हो.कमर और घुटने सीधे हों पाउं की उंग्लियां किब्ले की तरफ हो,और दोनों पाउं के दरम्यान चार उंगल का फासला हो.(जियादह से जियादह अेक बालिश्त रख सकते हैं.)

☞ जोन सी नमाज़ पढना हो उस की निय्यत करे.

☞ दोनों हाथे कानो तक इस तरह उठाये के हथेलियां किब्ले की तरफ हो, उंग्लियों के सिरे आस्मान की तरफ हो. उंग्लियां न जियादह खूली हो,न जियादह बंद हो (अस्ली हालत पर हो) अंगूठा कानो की लौ से लगा हो, या उसके बराबर हो.

☞ उसके बाद 'अल्लाहु अकबर' केहकर हाथ को नाफ के नीचे इस तरह बांधे के बायें हाथ की हथेली की पुश्त पर,दायें हाथ की हथेली रखवे अगूठे और छोटी उंग्ली से पोंहचे को पकडे, और बाकी तीन उंग्लियां कलाइ पर रखवे.

☞ उसके बाद सना पढे अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढ रहे हों तो अब कुछ न पढे, बल्के चुपचाप खडे रहें (हर रकात में)

☞ अकेले नमाज़ पढते हों या इमामत करते हों तो अब 'अऊज़ु' और 'बिस्मिल्लाह' पढकर, सूरऐ फातेहा इसतरह पढे के हर आयत पर रुक–रुक कर सांस तोड दे.

☞ सूरऐ फातेहा के खतम पर सब आहिस्ता से आमीन कहे.

☞ उसके बाद कोइ सूरह पढे (मुकतदी न पढे दोनों रकातो में)

☞ बगैर किसी जरुरत या मजबूरी के जिसम के किसी हिस्से को हरकत न दें, सुकून से खडे रहें और जिसम का सारा जोर ऐक पेर पर देकर दूसरे पेर को टेढा न करे.

☞ उसके बाद 'अल्लाहु अकबर' केहकर रुकूअ करे जिस तरह रुकूअ की सुन्नत में बताया गया है.

☞ तस्मीअ पढते हुऐ (मुकतदी न पढे)रुकूअ से इसतरह सीधे खडे हों के जिसम में कोइ खम(टेढा पन)बाकी न रहे.इस हालत में भी नजर सजदे की जगा पर हो उसके बाद 'तहमीद' पढे.

☞ तकबीर केहते हुऐ इस तरह सजदे में जायें के, घुटनों को खम देकर(मोड कर)जमीन की तरफ इसतरह लेजाये के,सीना आगे को न झुके,जब घुटने जमीनपर टिक जाये उसके बाद सीने को झुकाये जबतक घुटने जमीनपर न टिके उस वकत तक उपर के हिस्से को आगे न झुकाये,और न जमीनपर हाथ रख्खे, घुटनों के बाद दोनों हाथ रख्खे,फिर नाक,फिर पेशानी,सर को दोनों हाथों के दरम्यान इस तरह रख्खे के दोनों अंगुठों के सिरे कान की लौ के बराबर हो जाओे, हथेली मुंह से अलग हो, उंग्लियां मिली हुइ हो उंग्लियों का रुख किब्ले की तरफ हो,कोहनियां जमीन से उठीहुइ हो,दोनों बाजू पहेलु से अलग हो,रानें पेट से अलग हो,पूरे सज्दे में नाक जमीन पर टिकी हुइ हो,दोनों पाउं इस तरह खडे रख्खे जाओे के ओडीयां उपर हो और तमाम उंग्लियां मोडकर किब्ला रुख कर ले और पूरे सजदे में पाउं जमीन से उठने न पाऐ,फिर सजदे की तस्बीह तीन बार इत्मीनान से पढे.

☞ फिर तकबीर केहते हुऐ इस तरह उठे के पहेले पेशानी, फिर नाक, फिर हाथ उठाये, और इस तरह बेठे के बायां पेर बिछा कर उसी पर बेठे और दाहना पेर जिस तरह सजदे में था इस तरह खडा रख्खे, दोनों हाथों को रानों पर रख्खे(घुटनों पर न रख्खे)उंग्लियां किब्ले की तरफ हो,न जियादह बंद, न खुली, बल्के अपनी असली हालत पर हो, नजर गोद में हो,इत्नी देर बेठे के तीनबार 'सुब्हान-ल्लाह' केह सके, उसके बाद दूसरा सजदह उसी तरह करे जिस तरह पहेला किया.

☞ दूसरे सजदे के बाद जब तकबीर केहते हुऐ खडे हों तो,हाथों को जमीन पर न रख्खे,बल्के रानों पर हाथ रखकर उसी तरह खडे हों जिस तरह सजदे में जानेका तरीका बताया गया,यानी घुटने उठाने के बाद आगे को झुके नहीं सीधे खडे हों.

☞ उठने के बाद बाकी रकातो में सूरऐ फातेहा से पहेले बिस्मिल्लाह पढे,हर रुकन की तकबीर इसतरह कहे के'अल्लाहु'की अलिफ से रुकन शुरु हो और 'अकबर' की रा पर खतम हो. मषलन जब सजदे में जाना हो तो जब 'अल्लाहु अकबर' को अलिफ से पढना शुरु करे तो सजदे मे जाना शुरु कर दे,और जब सज्दे में पहोंचजाऐ तो 'अल्लाहु अकबर' को भीं रा पर खतम करदे.

इसीतरह हर रुक्न को तकबीर पर शुरु करे और तकबीर पर खतम करे.

☞ इमाम से पहेले न कोइ रुक्न शुरु करे और न खतम करे.

☞ काइदे में बेठने का तरीका वोही है,जो दो सजदो के बीच में बेठने का तरीका बताया गया.

☞ तशहहुद पढते वकत जब'अश्हदु अल्ला'पर पोंहचे तो शहादत की उंग्ली उठाकर इशारा करे, और 'इल्लल्लाह' पर गिरा दे, इशारे का तरीका येहे के बीच की उंग्ली और अंगूठे को मिलाकर हल्का (गोल) बनाले,छोटी और उसके साथवाली उंग्ली को बंध करले और शहादत की उंग्ली को इसतरह उठाये के किब्ले की तरफ जुकीहुइ हो आसमान की तरफ न हो.'इल्लल्लाह' केहते वकत शहादत की उंग्ली को निचे करले (बदन से न लगाओ) लेकिन बाकी उंगलियों को आखिर तक उसी हालत में रेहने दें.

☞ दोनों तरफ सलाम फेरते वकत गरदन को इतना मोडे के, पीछे बेठनेवाले को रुख्सार नजर आजाये.नजरें कंधेपर हो,सलाम फेरते वकत वोह निय्यत भी करे जो सलाम की सुन्नत में बताइ गइ है.

☞ अगर जमाअत खडी होगइ हो तो दोडकर जमाअत में शामिल न हो.बल्के सुकून और वकार से चलकर पहोंचे,चाहे रकात छुट जाये

☞ अकेले नमाझ पढना हो तो ऐसी जगह खडे होकर नमाझ न पढे जहां से गुजरने में दूसरे नमाझीयों को तकलीफ हो (मसलन रास्ते में,दरवाजे पर,किसी नमाझी या बेठे हुये इन्सान के पीछे,या आखरी दिवार से लगकर वगैरह.)

(मौलाना जस्टीस तकी उसमानी दा.ब.)

ख्वातीन की नमाझ में फर्क

☞ ख्वातीन के लिये कमरे में नमाझ पढना बरआमदे से अफझल है और बरआमदे में पढना सहन से अफझल है.

☞ ख्वातीन के लिये चेहरा, हाथ के पंजे और पेर के अलावह पूरा बदन ढका हुवा होना चाहिये. (टख्ने भी ढके हुवे हों)

☞ नमाझ के दौरान इन तीन हिस्सों के अलावह जिस्म का कोइ उज्व भी चोथाइ के बराबर इतनीदेर खुला रेहगया जिसमें तीनमरतबा 'सुब्हान रब्बीयल् अझीम' कहा जा सके तो नमाझ ही नहीं होगी.

☞ ओरतों को दोनों पेर मिलाकर खडा होना चाहिये खास तोर पर दोनों टखने तकरीबन मिलजाने चाहिये.

☞ नमाज़ शुरु करते वकत हाथ कानों तक नहीं बल्के कांधों तक उठाने चाहिये और वोह भी दोपट्टा या बुरके के अंदर ही से उठाने चाहिये और उंगलीयां मिली हुइ हों.

☞ हाथ सीने पे इसतरह बांधे के दायें हाथ की हथेली बायें हाथ की पुश्तपर रख दें.

☞ रुकूअ में मर्दों की तरह कमर को बिलकुल सीधी करना जरुरी नहीं हे. बल्के ओरतों को मर्दों के मुकाबले में कम जुकना चाहिये. पाउं बिलकुल सीधे न रखे बल्के घुटनों को आगे की तरफ जरा सा खम देकर खडा होना चाहिये और हाथों की उंगलीयां मिला कर रखे और बाजूओं को पेहलूओं से मिला दे.

☞ सजदे में जाते वकत शुरुही में सीने को जुका कर सजदे में जाये और सजदे में पेट को रानों से मिला दे और बाजूओं को पेहलू से मिला दे और कोहनियों समेत पूरी बाहें जमीन पर बिछा दे और उंगलियां मिलाकर रखे और दोनोंपेर दाहनी तरफ निकालकर बिछा दे.और जब अत्तहिय्यात पढने के लिये बेठे तो बाऐ कुल्हेपर बेठे.और दोनोंपाउं दाइं तरफ निकाल दे और हाथों की उंगलियां मिलाकर रखे

नमाज़ के अरकान

नमाज़ के फराइज़ तेरह. सात बाहर के. छे अंदर के

नमाज़ के बाहर के फराइज़ सात हैं

(१) जगह का पाक होना.(२) बदन का पाक होना.(३)कपडों का पाक होना.(४) सतर का छूपाना.(५) नमाज़ का वकत होना.(६) किब्ले की तरफ मुंह करना. (७) नमाज़ की निय्यत करना.

नमाज़ के अंदर के फराइज़ छे हैं

(१) तकबीरे तहरीमा यानी कोल बांधते वकत 'अल्लाहु अकबर' केहना. (२) कियाम यानी खडे रेहना. (३) किर्अत यानी तीन छोटी आयतें, या अेक बडी आयत,या ऐक छोटी सुरत पढना (४) रुकूअ करना. (५) हर रकात में दो सजदे करना. (६) आखीरी काइदे में अत्तहिय्यात की मिकदार बेठना.

नमाज़ के वाजिबात तेरह है

(१) अल्हम्दु यानी सूरऐ फातेहा पढना. (२) फर्ज़ नमाज़ की पहेली दो रकातो में, और बाकी तमाम नमाज़ों की हर रकात में सूरह का मिलाना. (३) सूरऐ फातेहा को सूरह से पहेले पढना. (४) इमाम को फज्र मग़रिब, इशा, जुम्अह, इदेन और तरावीह और रमज़ान में इशा के वित्र में आवाज से किर्अत करना और ज़ोहर और असर में आहिस्ता किर्अत करना. (५) कौमा यानी रुकूअ से सीधे खडे होना. (६) जल्सा यानी दो सजदो के दरम्यान में सीधे बेठना. (७) पहेला काइदा करना, यानी तीन या चार रकात वाली नमाज़ में दो रकातो के बाद अत्तहिय्यात की मिकदार बेठना (८) दोनों काइदो में अत्तहिय्यात पढना. (९) हर रुक्न को इत्मीनान से अदा करना. (१०) हर फर्ज़ को अपनी जगह पर अदा करना. (११) वित्र की तीसरी रकात में तकबीर केहकर दुआऐ कुनूत पढना. (१२) दोनो इदो में छे ज़ाइद तकबीर कहेना. (१३) अस्सलामु अलयकुम व रहमतुल्लाह केहकर नमाज़ को खतम करना.

नोट

☞ नमाज़ के फर्ज़ोंमें से कोइ फर्ज़, चाहे भूल से छुट जाऐ, या जान बुज कर छोळ दे, या कोइ वाजिब जान बुज कर छोळ दे तो नमाज़ नहीं होंगी फिर से पढे.

☞ और अगर कोइ वाजिब भूल से छुट जाऐ, या किसी फर्ज़ या वाजिब में तारवीर होजाऐ या किसी फर्ज़ को भूलकर, दोबारह करने से (मषलन दो रुकूअ, या तीन सजदे किये) सजदऐ सहुव वाजिब हो जाता हे. अगर सजदऐ सहुव नहीं कीया तो नमाज़ नहीं होगी फिर से पढनी पडेगी.

☞ सजदऐ सेहुव का तरीका येहे के आखरी काइदे में अत्तहिय्यात पढकर ऐक तरफ (दाहनी तरफ) सलाम फेर कर, दो सजदे करे, उस के बाद दोबारा अत्तहिय्यात दुरुद शरीफ, ओर दुआ पढकर नमाज़ पूरी करे.

मुफसिदाते नमाज़

☞ नमाज़ में बातचीत करना. ☞ नमाज़ में खाना पीना. ☞ सलाम करना या सलाम, या छींक का जवाब देना. ☞ कुर्आन शरीफ को देखकर पढना ☞ अपने इमाम के सिवा दूसरे को लुकमा देना ☞ दर्द

या मुसीबत के वक्त आह या उह करना ☞ किब्ले की तरफ से सीने का फिर जाना ☞ सजदे की जगह से आगे बढ जाना ☞ सजदे की हालत में दोनों पाउं जमीन से उंचा हो जाना ☞ तीन मरतबा 'सुब्हानल्लाह' कहे इतनी देर सतर का खुलजाना ☞ बालिग आदमी का नमाज़ में कह-कहा मार कर हंसना ☞ अमले कसीर यानी नमाज़ में ऐसा अमल करना के देखने वाला ये समजे के ये आदमी नमाज़ में नहीं है. ☞ किसी रुक्न में इमाम से आगे बढ जाना. कुर्आन शरीफ पढने में सख्त गलती करना ☞ नापाक जगह पर सजदा करना. ☞ किसी बुरी खबरपर 'इन्ना लिल्लाह' या अच्छी खबर पर 'अल्हम्दु लिल्लाह' केहना ☞ दुआ में ऐसी चीज मांगना जो आदमी से मांगीजाती है.

नमाज़ के मुस्तहब्बात

☞ जहां तक मुमकिन हो खांसी को रोकना ☞ जमाइ आऐ तो मुंह बंध करना ☞ खडे होने की हालत में सजदह की जगह, रुकूअ में कदमों पर, सजदे में नाक पर और बेठने की हालत में गोद में और सलाम फेरते वक्त कंधो पर नजर रखना.

मकरुहाते नमाज़

☞ सुस्ती या बे परवाइ से खुले सर नमाज़ पढना या कोहनी के उपर का हिस्सा खुला रखना. ☞ कुरव पर हाथ रखना. ☞ कपडा समेटना ☞ जिसम या कपडे से खेलना ☞ उंगलियां चटखाना ☞ दायें बायें गरदन मोडना ☞ अंगडाइ लेना ☞ कुत्ते की तरह बेठना ☞ ऐसे कपडे में नमाज़ पढना जिस को पहेन कर लोगो में जाना पसंद न करता हो ☞ दानों हाथ की उंगलियों को ऐक दूसरे में डालना ☞ सामने या सरपर तस्वीर होना ☞ तस्वीर वाले कपडे में नमाज़ पढना ☞ पेशाब पाखाना या भूक का तकाजा होते हुऐ नमाज़ पढना. ☞ आंखे बंध कर के नमाज़ पढना ☞ जान बुजकर जमाइ लेना. ☞ नमाज़ में आयात या तस्बीहात को उंगलियों पर गिनना ☞ सजदे में दोनों हाथ कोहनियों समेत जमीन पर बिछा देना ☞ चादर या ऐसा कोइ कपडा इस तरह लपेट कर नमाज़ पढना के हाथ जल्दी से उसमें से न निकल सकते हों. ☞ सुन्नत के खिलाफ कोइ काम करना.

नमाज़ की ग्यारह सुन्नतें
(क़याम की ग्यारह सुन्नतें)

(१) तक्बीरे तहरीमा के वक़्त सीधा खड़ा होना.(सर का झुका न करना) (२) दोनो पैरों के दरम्यान ४ उंगल का फ़ासला रखना और पैरोंकी उंगलियां क़िब्ले की तरफ़ रखना.(३)तक्बीरे तहरीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना. (४) उंगलियों को अपनी हालत पर रखना यानी न ज़ियादह खुली रखना और न ज़ियादह बंद रखना.(५)दोनो हथेलियो को क़िब्लेकी तरफ़ रखना.(६)मुक़्तदियो की तक्बीरे तहरीमा इमाम की तक्बीरे तहरिमा के साथ होना. (७) दाहने हाथ की हथेली को बायें हाथ की हथेली के पुश्त पर रखना. (८) छोटी उंगली और अंगूठे की पकड़ के ज़रीए बायें हाथ का पोंहचा पकड़ना. (९) दरम्यानी तीन उंगलियों को कलाइ पर रखना. (१०) नाफ़ के नीचे हाथ बांधना. (११) सना पढ़ना.

क़िर्अत की सात सुन्नतें

(१) अऊज़ु पढ़ना (२)बिस्मिल्लाह पढ़ना (३)सूरऐ फ़ातेहा के ख़त्म पर आहिस्ता से आमीन कहेना. (४) फ़जर और ज़ोहर में तिवाले मुफ़स्सल(सूरऐ हुजरात से सूरऐ बुरूज तक) असर और इशा में, अवसाते मुफ़स्सल. (सूरऐ बुरूज से सूरऐ लम यकुन तक) और मग़्रिब में, इक़्तिसारे मुफ़स्सल (सूरऐ इज़ा ज़ुल्ज़ीलत से सूरऐ नास तक) की सूरतें पढ़ना (५)फ़जर की पहेली रकात को तवील करना (६)फ़र्ज़ की तीसरी और चोथी रकात में सिर्फ़ सूरे फ़ातिहा पढ़ना. (७) न ज़ियादह जल्दी और न ज़ियादह ठहेरकर, बलके दरम्यानी रफ़्तार से पढ़ना.

रुकूअ की आठ सुन्नतें

(१) रुकूअ की तक्बीर कहेना (२) रुकूअ में दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ना (३) घुटनों को पकड़ने में उंगलियों को कुशादह(खुली रखना (४) पिंडलियों को सीधी रखना (५) पीठ को बिछा देना. (६) सर और सुरीन को बराबर रखना (७) रुकूअ में तस्बीह तीन बार पढ़ना (८) रुकूअ से उठने में इमाम को 'समीअल्लाहु लिमन-हमिदह' और मुक़्तदी को 'रब्बना लकल हम्द' और मुनफ़रिद को दोनों कहेना.

सजदह की बारह सुन्नतें

(१) सजदह की तकबीर केहना.(२) सजदे में पहेले दोनों घूटनों को रखना. (३) फिर दोनों हाथ रखना. (४) फिर नाक रखना. (५) फिर पेशानी रखना (६) दोनों हाथों के दरम्यान सजदह करना (७) सजदे में पेट को रानों से अलग रखना. (८) पेहलूओं को बाजु से अलग रखना. (९) कोहनियों को जमीन से अलग रखना. (१०) सजदे में तस्बीह तीनवार पढना (११) सजदे से उठने की तकबीर केहना. (१२) सजदे से उठते वक्त पहेले पेशानी. फिर नाक. फिर दोनों हाथों को उठाना.

काइदे की पांच सुन्नतें.

(१) दाऐं पेर को खडा रखना,और बाऐं पेर को बिछा कर उस पर बेठना.(२) उंगलियों को किब्ले की तरफ रखना.(३) दोनों हाथों को रानोंपर रखना.(४) तशहहुद में 'अश्हदु अल्लाह' पर कल्मे की उंगली को उठाना. और 'इल्लल्लाह' पर जुका देना. (५) आखरी काइदे में दुरूदे इब्राहीम पढना (६) दुरूद के बाद की दुआ 'अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ्सी' पढना.

सलाम की आठ सुन्नतें

(१) दोनों तरफ सलाम फेरना.(२) सलाम की इब्तेदा दाहनी तरफ से करना.(३) इमाम का मुकतदिओं,फरिश्तों,और सालेह जिन्नातों को सलाम की निय्यत करना. (४) मुकतदी को इमाम, फरिश्तों, सालेह जिन्नातों और दाऐं–बाऐं मुकतदीओं की निय्यत करना (५) मुनफरिद यानी अकेले नमाज़ पढने वाले को सिर्फ फरिश्तों की निय्यत करना. (६) मुकतदी को इमाम के साथ–साथ सलाम फेरना(७)दूसरे सलाम की आवाज को पहेले सलाम से पस्त करना (८)मस्बूक(जिसकी रकात छुट गइ हो)को इमाम के फारिग होने का इन्तेजार करना.

नमाज़ के अज़कार

☞ तक्बीर : अल्लाहु अक्बर् तरजुमा : अल्लाह सब से बडा है.

☞ षना : सुब्हा–न कल्लाहुम्म वबि हम्दि–क व तबा–र–क स्मु–क व तआला जद्दु–क व लाइला–ह गय्रुक् तरजुमा : में पाकी बयान करता हुं तेरी ऐ अल्लाह,तेरी ही हम्दो षना के साथ,तेरा नाम बोहत बरकत वाला है.

और तेरी शान बोहत बुलंदो बाला है, और तेरे सिवा कोइ इबादत के लाइक नहीं

☞ रूकूअ की तस्बीह : 'सुब्हा–न रब्बियल् अज़ीम' तरजुमा : पाक हे मेरा अज़ीम परवरदिगार.

☞ तस्मीअ : 'समिअल्लाहु लिमन् हमिदहु' तरजुमा : अल्लाह ने उस शख्स की तारीफ सुनली (कबूल करली) जिसने उस की तारीफ की

☞ तहमीद : 'रब्बना लकल् हम्द' तरजुमा : अल्लाह ही के लीये सब तारीफ हे.

☞ सजदह की तस्बीह : 'सुब्हा–न रब्बियल् अअला' तरजुमा : पाक हे मेरा रब जो सब से बुलंद और बरतर है.

☞ तशह्हुद : अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स–लवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलय्–क अय्युहन नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब–र–कातुहू. अस्सलामु अलयना वअला इबादिल्लाहि स्सालिहीन. अश्हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहु वरसूलुहू.

तरजुमा:तमाम कोली इबादतें,अल्लाह के लिये है और तमाम फेअली इबादतें और माली इबादतें(भी अल्लाह के लिये हे)सलाम हो आप पर ऐ(अल्लाह के)नबी और अल्लह के नेक बंदो पर.में गवाही देता हुं के अल्लाह के सिवा कोइ इबादत के लाइक नहीं,और में गवाही देता हुं के बेशक मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और रसूल हे.

☞ दुरुदे इब्राहीमः अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लय्–त अला इब्राही–म व अला आलि इब्राही–म इन्न–क हमीदुम् मजिद. अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक् त अला इब्राही म व अला आलि इब्राही म इन्न–क हमीदुम् मजिद' तरजुमा : ऐ अल्लाह ! तू मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद ﷺ पर रहमत नाज़िल फरमा. जिस तरह तुने इब्राहीम अल.और आले इब्राहीम अल.पर रहमत नाज़िल फर-माइ हे.बेशक तूही लाइके हम्दो सना,बडाइ और बुज़ुर्गी का मालिक हे. ऐ अल्लाह ! तु मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद ﷺ पर बरकतें नाज़िल फरमा जैसे तुने इब्राहीम अल. और आले इब्राहीम अल. पर बरकतें नाज़िल फरमाइ है. बेशक तूही तारीफ के लाइक, बडाइ और बुज़ुर्गी का मालिक है.

☞ दुरूद शरीफ के बाद यही दुआ : अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन् कसीरंव व ला यग्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन-त फ़ग्फ़िरली मग्फ़ि-र-तम् मिन इन्दि-क वर्हम्नी इन्न-क अन्तल् गफ़ूरु-र्रहीम. तरजुमा : ऐ अल्लाह ! बेशक मैंने अपनी जान पर बोहत ज़्यादा ज़ुल्म (गुनाह) किये हैं. और तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता, पस तू अपनी ख़ास मग्फ़ेरत से मेरे सब गुनाह बख़्श दे,ओर मुझपर रहम फ़रमा.बेशक तू बोहत मग्फ़ेरत करने वाला, और रहम करने वाला है.

☞ दुआए क़ुनूत : 'अल्लाहुम्म इन्ना नस्तईनु-क व नस्तग्फ़िरु-क व नुअ्मिनु बि-क व न-त-वक्कलु अलय्-क व नुस्नी अलय्कल् ख़ैर व नश्कुरु-क वला नक्फ़ुरु-क व नख़्लउ व नत्रुकु मंय्यफ़्जुरुक,अल्लाहुम्म इय्या-क नअ्बुदु व ल-क नुसल्ली व नस्जुदु व इलय्-क नस्आ व नह्फ़िदु व नर्जू रह्-म-त-क व नख़्शा अज़ा-ब-क इन्न अज़ा-ब-क बिल्कुफ़्फ़ारि मुल्हिक़ तरजुमा : ऐ अल्लाह हम आपही से मदद मांगते हैं और आपही से मग्फ़िरत के उम्मीद वार हैं और आपही पर ईमान लाते हैं.ओर आपहीपर भरोसा रखते हैं और हम आप की तारीफ करते हैं. और आप का शुक्र अदा करते हैं. नाशुक्री नहीं करते हैं. और उस से अलाहिदा होजाते हैं जो आप की नाफ़रमानी करते हैं. ऐ अल्लाह! हम आप ही की इबादत करते हैं और आप ही के लिऐ नमाज़ पढ़ते हैं, और सजदा करते हैं और आप ही की तरफ हम दोड़ते हैं ओर हम आपही की तरफ झपटते हैं,और आपकी रहमत के उम्मीदवार हैं,और आपके अज़ाब से डरते हैं. बेशक आपका अज़ाब काफिरों को पहोंचने वाला है.

दुआ के फ़ज़ाइल

☞ अल्लाह का इरशाद है लोगो ! अपने रब से गिड़-गिड़ाकर और चुपके चुपके दुआ किया करो (सूरऐ अअराफ आयत–५५)

☞ हज़रत अनस बिन मालिक रदि.से नबिऐ करीम ﷺ का इरशाद मनक़ूल है : दुआ इबादत का मग़ज़ है.(तिरमिज़ी शरीफ)

☞ हज़रत सल्मान रदि.रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया : दुआ के सिवा कोई चीज तक़दीर के फैसले को टाल नहीं सकती.

और नेकी के सिवा कोइ चीज उमर को नहीं बढ़ा सकती,और आदमी (कभी अवकात) किसी गुनाह के करने की वजह से रोज़ी से महरूम करदिया जाता है.(मुसन्नफ़ अहमद)

☞ हज़रत अली रदि.रिवायत करते है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया. : दुआ मोमिन का हथीयार है,दीन का सुतून है,और ज़मीनो,आस्मान का नूर है.(मुस्तदरक हाकिम)

☞ हज़रत अबूज़र रदि.फरमाते हैं के नेकी के साथ दुआ की इतनी ज़रूरत है जितनी खाने में नमक की. (हुलयाउल उलूम)

☞ हज़रत अबु हुरैरह रदि. रिवायत करते हैं के.रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया:तुम अल्लाह से कबूलियत का यकीन रखते हुऐ दुआ मांगो और ये बात समझलो के अल्लाहताला उस शख्स की दुआ को कबूल नही फरमाते जिसका दिल (दुआ मांगते वक्त) अल्लाह तआला से गाफिल हो,अल्लाह तआला के गैरमें मशगुल हो.(तिरमिज़ी शरीफ)

☞हज़रत अबूसइद खुदरी रदि.रिवायत करते हैं हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया के जो भी कोइ मुसलमान कोइ दुआ करता है. जिस में गुनाह और कतअ रहमी का सवाल न हो. तो अल्लाह अज़्ज़े शान्हु उस दुआ की वजह से उस को तीन चीजों मे से कोइ ऐक चीज अता फरमादेते है.(१) यातो उसकी दुआ इसी दुनिया मे कबूल फरमा लेते है. और उसका सवाल पुरा फरमा देते है,यानी जो मांगता है वोह दे देते है(२)या उसकी दुआ को आखेरत के लिये जखीरह बनाकर रख लेते है (जिस का बदला आखेरत में देंगे) (३) या दुआ करने वाले की मतलूबा शै के बराबर(इसतरह आफियत देतेहैं के)आनेवाली मुसीबत को टाल देते है. ये सुनकर सहाबा रदि.ने अर्ज़किया इसतरह तो हम बोहत जियादह कमाइ करलेंगे, आप ﷺ ने (इस बात के जवाब में) फरमाया के अल्लाह की अता और बख्शीस उस से बोहत ज्यादा है.

☞हुज़ूर ﷺ जब नमाज़ से फारिग होते तो तीनबार इस्तिग्फार करते और ये दुआ पढते 'अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम व मिन्कस्सलाम तबा-रक-त या ज़ल् जलालि वल् इक्राम. (तरजमा : ऐ अल्लाह ! तू ही सलामती(देने)वाला है. और तेरीही जानिब से सलामती(नसीब होती) है,बड़ा बरकत वाला है तू, ऐ अज़्मत और जलाल के मालिक और इकराम और अेहसान वाले.

दुआ के ४३ आदाब जिस को हिस्ने-हसीन से नकल किया जाता है.

(१) खाने, पीने और पहेनने, कमाने में हराम से बचना (२) इख्लास. (३) दुआ मांगने से पहेले कोइ नेक अमल करना (मषलन सदका देना और मुसीबत के वकत में अपने नेक आमाल का झिक्र करना (४) पाक सॅाफ होना (५) वुझू करना (६) दुआ से पहेले नमाझ (हाजत) पढना (७) किब्ले की तरफ मुंह करना (८) दो जानू बेठना (९) दोनों हाथों को उठाना (१०) मुंढों के बराबर उठाना (११) हाथों को फैलाना (१२) दोनों हाथों को खुला रखना (१३) दुआ के अव्वल और आखिर अल्लाह की हम्दो बना करना (१४) इसीतरह अव्वल और आखिर में दुरूद शरीफ पढना (१५) बा अदब रेहना (१६) आजिझी, और इन्कि-सारी इख्तियार करना (१७) गीळ गीळाना (१८) आस्मान की जानिब निगाह न उठाना (१९) अल्लाह के अस्माऐ हुस्ना और आला सिफात का वास्ता देकर मांगना (२०) ब तकल्लुफ काफिया बंदी से परहेज करनां (२१) खुश इल्हानी के साथ गाना न गाऐ यानी नझम हो तो गाने की सुरत से बचे. (२२) अंबिया अल. के वसीले से दुआ मांगे. (२३) अल्लाह के नेक बंदो का वास्ता दे. (२४) आवाज को पस्त रखे. (२५) अपने गुनाहो का इकरार करे. (२६) हुझूर ﷺ की सही माषूरह दुआओं को इख्तीयार करे. (२७) जामेअ दुआऐं इख्तियार करे. (२८) अपनी झात से दुआकी इब्तेदा करे फिर दर्जा ब दर्जा दूसरों के लिये करे (२९) इमाम हो तो तन्हा अपने लिये दुआ न मांगे. (३०) पूरे यकीन के साथ मांगे. (३१) इन्तिहाइ रग्बत और शौक से मांगे. (३२) कोशिश और मेहनत से हुझूरे कल्ब के साथ तहेदिल से मांगे. (३३) ऐक ही दुआ बारबार पढे (कमसे कम तीन मरतबा) (३४) इसरार न करे (के मेरी दुआ तो तुजे कबूल करनी ही होगी (३५) ऐक ही मकसद के लिऐ बार बार दुआ मांगे (३६) किसी गुनाह या कतअ रहमी की दुआ न करे. (३७) जो चीज अजल से हो चुकी हे उस के खिलाफ दुआ न मांगे (मषलन मुजे मर्द से औरत बना दे (३८) महाल और ना मुमकिन काम की दुआ न करे. (३९) अल्लाह की रहमत में तंगी न करे (मषलन मेरीही मग्फेरत फरमा और किसी की न कर (४०) अपनी तमाम हाजतें मांगे छोटी हो या बळी. (४१) दुआ करने और सुनने वाले दोनों आमीन कहे. (४२) दुआ से फारिग होकर दोनों हाथ, मुंह पर फैरे. (४३) दुआ की कबूलियत में जल्दी न करे के मेंने दुआ की थी कबूल नहीं हुइ.

चंद मानूस वज़ाइफ

❖ हज़रत अबू उमामा रदि.से रिवायत है हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो शख्स हर फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सि पढलिया करे उसको जन्नत में जाने से सिर्फ उसकी मौतही रोके हुऐ है.(मु अ)

❖ इमाम बगवी रह. ने अपनी सनद के साथ हदीस नकल की है हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : हक तआलाका इरशाद है के जो शख्स हर नमाज़ के बाद 'सूरऐ फातेहा' 'आयतुल कुर्सि' और आले इमरान की दो आयतें 'शहिदल्लाहु अन्नहु' से आखिर तक ऐक आयत और 'कुलिल्लाहुम्म मा लिकल् मुल्की' से 'बिगयरी हिसाब' तक पढा करे मैं उसका ठिकाना जन्नत में बनाउंगा और उस को अपने हज़िरतुल कुद्स में जगह दुंगा और हररोज़ उसकी तरफ सत्तर मरतबा नजरे रहमत करुंगा और उसकी सत्तर हाजतें पूरी करुंगा और हर हासिद और दुश्मन से पनाह दुंगा और उस को गालिब रखूंगा.(मआरिफुल कुर्आन)

❖ हज़रत मअकिल बिन यसार रदि.से रिवायत है नबी ﷺ ने फरमाया : जो शख्स सुबह को तीन मरतबा 'अउज़ु बिल्लाहिस्समीइल् अलीमि मिनश् शयतानिर्रजीम' पढे फिर सूरऐ हश्र की आखरी तीन आयतें हुवल्लाहुल्लज़ि से अज़ीज़ुल् हकीम. तक अेकबार पढे तो अल्लाह तआला उस पर सत्तर (७०) हजार फरिश्ते मुकर्रर कर देते हैं जो शाम तक उसके लिये इस्तिग्फार करते रहते हैं और अगर उस दिन उसे मौत आगइ तो शहीद मरेगा। और जो शाम को पढले तो उसको भी सुब्ह तक येही दर्जा हासिल होगा. (मिश्कात शरीफ)

❖ हज़रत अबान बिन उसमान रदि.से रिवायत है के मैंने अपने वालिद को केहते हुऐ सुना के रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो बंदा सुब्ह शाम तीनबार बिस्मिल्ला हिल्लज़ी लायदुर्रु मअ इस्मिही शयउन् फिलअर्दी वला फिस्समाइ वहुवस्समीउल् अलीम पढलेगा उसको कोइ चीज नुकसान नहीं पहोंचा सकती.(मिश्कात)

❖ हज़रत तमीमी रदि.से मरवी है के हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : नमाज़े मग्रिब से फारिग होकर किसी से बात करने से पहेले सात मरतबा अल्लाहुम्म अजिरनी मिनन्नार.जब तुम केहलोगे और फिर उसीरात को तुम्हारी मौत आजाये तो दोज़ख से महफूज रहोगे

और अगर इस दुआ को सात मरतबा नमाझे फजर के बाद केहलो और उसीदिन मर जाओ तो दोझख से महफूझ रहोगे. (मिश्काल)

❖ हुझूर ﷺ का इरशाद है: जो शख्स रात की मशक्कत जेलने से डरता हो, या बुख्ल की वजह से माल खर्च करना दुश्वार हो, या बुझदिली की वजह से जिहाद की हिम्मत न पळती हो उस को चाहीये के सुब्हानल्लाही व-बी हम्दिही कषरत से पढा करे के अल्लाह के नजदीक ये कलेमा पहाळ की ब-कदर सोना खर्च करने से भी जियादह महबूब है.

❖ ऐक हदीष में है के : जो शख्स पच्चीस मरतबा 'अल्लाहुम्म बारिक् ली फिल्मौत व फिमा बअदल् मौत' पढे वोह शहीदों के दर्जेमें हो सकता है(हर नमाझ के बाद पांच पांच मरतबा पढलिया करे(फ.स.

❖ हझरत मआज बिन अनस जोहुनी रदि.से रिवायत है आप ﷺ ने इरशाद फरमाया: जिस शख्स ने दस मरतबा सूरऐ कुलहुवल्लाहु अहद पढी अल्लाह जन्नत में उसके लिये ऐक महल बनादेंगे.(मु.अ.

❖ हझरत इब्ने अब्बास रदि.से रिवायत है हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : सूरऐ इझा झुलझिलत् आधे कुर्आन के बराबर है,सूरओ कुल् हुव-ल्लाहु अहद् ऐक तिहाइ कुर्आन के बराबर है,और सूरओ कुल् या अय्युहल् काफिरून ऐक चोथाइ कुर्आन के बराबर है.(तिरमिझी)

❖ हझरत सअद बिन मालिक रदि. फरमाते हैं मैंने हुझूर ﷺ को ये फरमाते हुऐ सुना क्या में तुमको अल्लाह ताला का इस्मे आझम न बताउं के जिसके जरिये से दुआ की जाये तो कबूल फरमाते हैं ? ये वोह दुआ है जिस के जरीये हझरत यूनुस अल.ने अल्लाह ताला को तीन अंधेरीयो में पुकारा था.'ला इला-ह इल्ला अन्त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनझ् झालिमीन.' आपके सिवा कोइ माबूद नहीं आप तमाम ऐबों से पाक हैं,बेशक मैंही कुसूरवार हुं.ऐक आदमी ने हुझूर ﷺ से पूछा : या रसूलल्लाह! क्या ये दुआ हझरत यूनुस अल. के साथ खास है या तमाम इमान वालोंके लिये आम है ? आप ﷺ ने इरशाद फरमाया: क्या तुमने अल्लाह तालाका इरशादे मुबारक नहीं सुना 'व नज्जयनाहु मिनल् गम्मि व-कझालि-क नुन्जिल् मुअ्मिनीन्' के हमने यूनुस अल.को मुसीबतों से नजात दी और हम इसी तरह इमान वालों को नजात दिया करते हैं. हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो मुसलमान इस दुआ को अपनी बीमारी में

चालीस मरतबा पढे अगर वोह इस मर्ज़ में फौत होजाये तो उसको शहीद का सवाब दिया जायेगा और अगर इस बीमारी से शिफा मिल गइ तो उस शिफा के साथ उसके तमाम गुनाह माफ किये जाचुके होंगे.(मुस्तदरक हाकिम)

❖ हज़रत कबीसा रदि.से रिवायत है हुज़ूर ﷺ ने फरमाया: सुब्ह की नमाज़ के बाद तीन मरतबा 'सुब्हानल्लाहिल् अज़ीमि वबि हम्दिही' कहा करो उस से तुम अंधेपन, कोढीपन, और फालिज से महफुज रहोगे.(हयातुस सहाबा)

❖ जो शख्स सुब्ह-शाम तीन-तीन मरतबा ये दुआ 'अउज़ु बि-क-लिमातिल्लाही ताम्माती मिन शर्री मा खलक़' पढेगा अल्लाह तआला हर मख्लूक से, खुसूसन सांप बिच्छू वगैरह जेहरीले और मुझी - जानवरों के शर से बचायेंगे खुसूसन रात में. (हिस्ने हसीने)

❖ हुज़ूर ﷺ ने फरमाया : जो शख्स इन कलेमात को 'सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिही सुब्हानल्लाहिल् अज़ीम अस्तग्फिरुल्लाहल् अज़ीमि वअतुबु इलय्ह' कहे तो ये कलेमात जिस तरह उसने कहे, लिख लिये जाते हैं फिर अर्शके साथ लटकादिये जाते हैं और कोइ गुनाह जो उसने किया हो, इन कलेमात को नहीं मिटायेगा, यहां तक के जब वोह अल्लाह तालासे कयामत के रोज मिलेगा तो ये कल्मे इसी तरह सर ब मोहर होंगे जिस तरह उसने कहे थे. (हिस्ने हसीन)

❖ जब बाजार जाये तो चोथा कलेमा पढे. हदीष शरीफ में है के बाजार में इसके पढने से अल्लाह ताला दसलाख नेकियां लिखदेंगे और दसलाख गुनाह माफ करदेंगे और दसलाख दर्जे बुलंद फरमा देंगे और उसके लिये जन्नत में ऐक घर बना देंगे. ﷺ (इब्ने माजा)

❖ हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदि. हुज़ूर ﷺ का इरशाद नकल करते हैं के : जो कोइ ये दुआ पढे 'जज़ल्लाहु अन्ना मुहम्मदन ﷺ मा हुव अहलुहु' तो उसके लिये सत्तर हजार फरिश्ते ऐक हज़ार दिन तक सवाब लिखते रहेंगे.(फज़ाइले दुरुद शरीफ)

❖ जो शख्स ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरि-क लहु अह-दन् स-म-दन लम् यलिद् वलम् युलद् व लम् यकुल्लहु कुफुवन अहद.पढे उसकेलिऐ बीसलाख नेकियां लिखी जाती है.(फ. ज़िक्र)

❖ जो शख्स हर छींक के वक्त'अल्हम्दु लिल्लाही रब्बिल् आलमीन अला कुल्लि हालिम् मा का-न' कहे तो डाढ और कान का दर्द कभी भी महसुस न करे.

फ़र्ज़ नमाज़ों और रकातों का नक्शा

नमाज़ के नाम	कुल रकातें	सुन्नते मोअक्कदह	सुन्नते गैर मोअक्कदह	फ़र्ज़	सुन्नते मोअक्कदह	नफ्ल	वाजिब	नफ्ल
फ़जर	४	२	--	२	--	--		
ज़ोहर	१२	४	--	४	२	२		
असर	८	--	४	४	--	--		
मग़रिब	७	--	--	३	२	२		
इशा	१७	--	४	४	२	२	३	२
जुम्अह	१४	४	--	२	४+२ ६	२	--	--

रमज़ान में तरावीह बीस रकात सुन्नते मोअक्कदह

इदैन छे ज़ाइद तक्बीरों के साथ—वाजिब

नफ्ल नमाज़ें और रकातें

इश्राक = = = = ४

चाश्त = = = = ८

अव्वाबीन = = = ६

तहज्जुद = = = ८

सलातुल इस्तिस्का = २

सलातुल इस्तिखारा = २

सलातुत् तस्बीह = ४

सलातुत् तवबह = २

सलातुल कुसूफ़ = २

सलातुल खुसूफ़ = २

सलातुल हाजत = २

= = = = = =

जुमअह के वझाइफ

❖ जुम्अह की आठ सुन्नतें (१)गुसल करना (२)साफ कपडे पहेनना और खुश्बू हो तो इस्तेमाल करना. (३) मस्जिद में जल्दी जाने की फिकर करना.(४) मस्जिदमें पेदल जाना.(५) इमाम के करीब बेठने की कोशिश करना.(६) आगे सफे पूर हो तो सफों को फांद कर न जाना. (७) अपने कपडे वगैरह से, लहवो लइब (रमत) न करना. (८) खुत्बह को गौरसे सुनना. (मुस्नदे अहमद)

❖ जुम्अह के दिन को उख्रवी उमूरकेलिये मख्सूस करदे,इसदिन दुनिया की तमाम मसरूफियात तर्क कर दे. कषरत से सदका. खैरात करे.

❖ जुम्अह के दिन की मुबारक घडी की अच्छी तरह निगरानी करे हुझूर ﷺ ने फरमाया : जुम्अहके दिन ऐकघडी ऐसी है के अगर कोइ बंदा उस घडी को पा ले, और उसमें अल्लाह से कुछ मांगे तो अल्लाह उसे अता करता हैं.(मुस्नदे अहमद)

❖ कुर्आनेपाक की तिलावत व-कषरत करे,खुसूसन सूरऐ कहफ की तिलावत जरूर करे हझरत इब्ने अब्बास रदि.और हझरत अबू हुरैरह रदि.से रिवायत है के : जो शख्श सूरे कहफ की तिलावत करेगा उसे पढनेकी जगा से मक्का मुकर्रमा तक नूर अता किया जायेगा, और अगले जुम्अह तक तीन रोजके इझाफे के साथ गुनाहों की मग्फेरत की जायेगी, उसके लिये सत्तर (७०) हजार फरिश्ते सुब्ह तक रहमत की दुआ करते हैं, ये शख्स दर्द, पेट के फोळे झातुल जुनुब,बर्स,जुझाम,और फित्नाऐ दज्जाल से महफूझ रेहता है.(बयहकी शरीफ)

❖ कषरत से दुरुदशरीफ पढें,: जो आदमी जुम्अह के दिन १०० सो मरतबा दुरूद पढेगा अल्लाह उसकी सो हाजतें पूरी फरमायेंगे. और दूसरी हदीष मे है : उसके साथ कयामत के दिन ऐक औसी रोशनी आऐगी के अगर उस रोशनीको सारी मख्लूकपर तकसीम किया जाये तो सबको काफी होजाये. (फझाइले दुरुद शरीफ)

❖ जो शख्स जुम्अह के दिन असरकी नमाझ पढकर उसी हयअत पर बेठकर उठनेसेपहेले ८० मरतबा ये दुरुद पढे'अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्म-दि निन्नबि य्यिल् उम्मिय्यी वअला आलिहि वसल्लिम् तस्लीमा'तो उसके अस्सी सालके गुनाह माफ कर दिऐ जायेंगे. और ८०साल की इबादत का षवाब लिखा जायेगा.(फझाइले दुरुद)

तिलावते कुर्आने मजिद के आदाब.

● हझरत उस्मान रदि.से रिवायत है हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया तुममें सब से बेहतर वोह शख्स है जो कुर्आन सीखे और सिखाये
● हझरत अबू हुरेरह रदि.फरमाते हैं के जिसघर में कलाम मजिद पढा जाता है उसके अेहलो अयाल कसीर होजाते हैं. उसमें खैरो बरकत बढ जाती है और शयातीन उस घरसे निकल जाते हैं और जिस घरमें तिलावत नहीं होती उसमें तंगी और बेबरकती होती है मलाअेका उसघरसे चलजाते हैं और शयातीन उसघरमें घुसजातेहैं
● साहेबे अहयाअे हझरत अली रदि.से नकल किया है के जिस शख्स ने नमाझ में खडे होकर कलामेपाक पढा उसको हर हर्फ पर सो नेकियां मिलेगी और जिस शख्स ने नमाझ में बेठकर पढा उसके लिये पचास नेकियां और जिसने बगैर नमाझ के वुझू के साथ पढा, उसके लिये पच्चीस नेकियां और जिसने बिलावुझू पढा उसके लिये दस नेकियां और जो पढे नहीं बल्के सिर्फ पढने वाले की तरफ कान लगाकर सुने उसके लियेभी हर हर्फकेबदले ऐक नेकी है.

आदाब

● मिस्वाक और वुझू के बाद किसी यकसूइ की जगहमें निहायत वकार और तवाझुअ के साथ किब्ला रुख बेठे.
● कलामेपाक को रिहल या तकिया या किसी उंचीजगापर रखखे.
● निहायतही हुझूरे कल्ब और खुशूअ के साथ उस लुत्फ के साथ जो उस वकतके मुनासिब है इसतरह पढे के गोया खुद हककाला शानहू को कलामेपाक सुना रहा है.
● अगर मआनी समजता हो तो तदब्बुर और तफक्कुर के साथ आयते वादा और रहमत पर दुआऐ मग्फेरत और रहमत मांगे. और आयते अझाब और वइद पर अल्लाह की पनाह चाहे. आयते तन्झियह और तकदीस पर 'सुब्हानल्लाह' कहे. और अझ खुद तिलावत में रोना न आऐ तो बतकल्लुफ रोने की सइ करे.
● अगर याद करना मकसूद न हो तो पढनेमें जल्दी न करे.
● तिलावत के दरम्यानमें किसीसे बात न करे.अगर कोइ जरूरत

पेशही आजाये तो कलामे पाक बंद करके बात करले और फिर से अऊज़ु पढ़कर दोबारा शुरू करे.

● अगर मजमे में लोग अपने-अपने कारोबार में मश्गूल हों या नमाज़ पढ़ रहे हों, या सो रहे हों, तो आहिस्ता पढ़ना अफज़ल है वरना आवाज़ से पढ़ना अफज़ल है.

● खुश इल्हानी के साथ तरतील और तजवीद के साथ पढ़े.

● दिल को वसाविस से पाक रखे.

● ये अल्लाह का कलाम है उसकी अज़मत दिल में रखते हुए पढ़े.

● जिन आयात की तिलावत कर रहा है, दिल को उनके ताबेअ बना दे, मतलब अगर आयते रहमत जुबान पर है तो दिल सुरूरे महज़ बनजाये और आयतेअज़ाब अगर आगइ तो दिल लरज़ जाये.

● तरतील के मुतअल्लिक शाह अब्दुल अज़ीज़ रह.ने अपनी तफ-सीर में तहरीर फरमाया है के तरतील लुगत में साफ और वाजेह तौरपर पढ़ने को केहते हैं. और शरअ शरीफ में कइचीजों की रिआ-यत के साथ तिलावत करने को केहते हैं.

(१) हुरूफों को सही निकालना यानी अपने मखरज से पढ़ना ताके की जगह और की जगह न निकले.

(२) वुक्फ की जगहपर अच्छीतरह ठहेरना ताके वस्ल और कतअ कलाम का बेमहल न होजाये.

(३) हरकतो में इश्बाअ करना यानी ज़ेर ज़बर पेश को अच्छी तरह जाहिर करना.

(४) आवाज़ को थोड़ासा बुलंदरखना ताके कलामेपाक के अल्फाज़ जुबानसे निकलकर कानोंतक पहोंचे और वहांसे दिलपर असरकरे

(५) आवाज़ को इसतरह से दुरुस्त करना के उसमें दर्द पेदा होजाये और दिलपर जल्दी असर करे. (फज़ाइले कुर्आन)

(६) तश्दीद और मद को अच्छी तरह जाहिर किया जाये के उसके इज़्हार से कलामेपाक में अज़मत जाहिर होती है.

(७)आयते रहमत और आयते अज़ाब का हक अदाकरे जेसा पेहले गुजरचुका. ये सात चीजें हैं जिनकी रिआयत तरतील केहलाती है.

ये रवा है मालिके बंदगी, मेरी बंदगी में कुसूर है.
ये खता है मेरी खता मगर तेरा नाम भी तो गफूर है.

बीमारपुर्सी की सुन्नतें ओर आदाब.

• हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : अेक मुसलमानके दूसरे मुसलमान पर छे हुकूक है. (१) जब मुलाकात हो तो उसको सलाम करे (२) जब दावत दे तो कबूल करे.(३) जब उसे छींकआओ और 'अल्हम्दु लिल्लाह' कहे तो उसके जवाब में 'यरहमुकल्लाह' कहे. (४) जब बीमार हो तो उसकी इयादत करे. (५) जब इन्तिकाल करजाये तो उसके जनाजे के साथ जाये (६) और उसके लिये वोही पसंद करे जो अपने लिये पसंद करे.(इब्ने माजा)

• हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो शख्स अच्छीतरह वुझू करता है फिर अज्रो सवाब की उम्मीद रखते हुऐ अपने मुसलमान भाइकी इयादत करता है, उसको जहन्नम से इतना दूर करदिया जाता है. जितनी दूर कोइ सत्तर(७०)साल चलकर पहोंचे. (अबू दावूद शरीफ)

• हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह को इयादत करता है तो शाम तक सत्तर हजार फरिश्ते उसके लिये दुआ करते हैं. और जो शाम को इयादत करता है तो सुब्हतक सत्तर हजार फरिश्ते उसके लिये दुआ करते रेहते हैं और जन्नत में ऐक बाग मिलजाता है.

• जब किसी मरीझ की इयादत करे तो उससे यूं कहे 'ला बअ्स तहूरुन् इन्शाअल्लाह' कोइ हरज नहीं, इन्शाअल्लाह ये बीमारी गुनाहों से पाक करने वाली है.

• हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जब कोइ मुसलमान बंदा किसी मरीझ की इयादत करे और सात मरतबा ये पढे 'अस्अलुल्लाहल् अझीम रब्बल् अर्शिल अझीमी अंय्य श्फ-क' में अल्लाह ताला से सवाल करता हुं, जो बडे हैं अर्शे अझीम के मालिक है, के वोह तुम को शिफा दे.) तो उसको जरूर शिफा होगी,अलबत्ता अगर उसकी मौतका वकत आगया हो तो और बात है. (तिरमिझी शरीफ)

• हुझूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जब तुम बीमारके पास जाओ तो उस से कहो के वोह तुम्हारे लिऐ दुआ करे, क्यूँ के उसकी दुआ फरिश्तों की दुआ की तरह (कबूल होती) है.
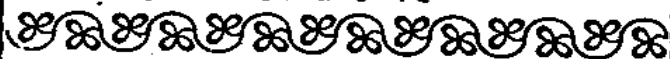
घर में मौत होजाने का बयान

जब आदमी की आखरी घडी हो और मालूम होजाऐ के अब मौत करीब है तो उस आदमी को किब्लेकी तरफ पाउं करके चित लिटा दें.और सरके निचे ऐक तकिया रखें ताके उसका मुंह किब्लेकी तरफ होजाये, अगर सरके निचे तकिया न रखसके तो सिरहाने की तरफ पलंग के पायेके निचे दो-दो इंट रख दे,उसके बाद उस के सामने जोरजोर से कल्मऐ शहादत पढो ताके हम से सुनकर वोह भी पढले लेकिन उससे यूँ मत कहो के पढ, इसलिये के वोह सख्त मुश्किल का वकत होता है, खुदा न खास्ता पढनेसे इन्कार करदे या मुंहसे कुछ और निकलजाये.सूरे यासीन पढनेसे मौतकी सख्ती कम होती है, उसके सिरहाने या और किसी जगह उसके पास बैठकर सूरे यासीन पढो या किसी से पढवा दो.

मरने के बाद

ओरजब रुह निकलजाऐ तो आंखें बंध करदो और कोइ कपडा लेकर ठुडीके नीचेसे निकाल कर दोनों जबडोंसे गुजारते हुऐ सर पर लेजाकर बांध दो, ताके मुंह फैल न जाये, और पांउके दोनों अंगुठे मिलाकर बांध दो, और हाथों की उंग्लियां ऐकसाथ करके कमर के साथ लगादो और मय्यत को शिमाल की जानिब सर और जुनूब की तरफ पेर करके सुलादो और अगर मरने वाली औरत है और उसने कोइ झेवर वगैरह पेहने हों, तो सब झेवर निकाल दो वरना बादमें निकालना मुश्किल होजायेगा. अब मय्यत के उपर पाक चादर डालदो,और कफनाने दफनानेका इन्तेझाम करो,जब तक गुसल न देदिया जाऐ उसके पास बेठकर न पढो बल्के दूसरे कमरे में बेठकर पढो. और मय्यत के पास कुछ खुश्बू जला दो.

कोइ मर्द या ओरत नापाकी की हालतमें हो तो उसको मरने वालेके पास न रेहने दो बल्के कोइ जानदार तस्वीर भी उसकेपास न रेहनेदो इन सबको मरनेसे पेहलेही वहांसे हटा दो.इनकी वजह से रहमत कै फरिश्ते नहीं आते और रुहको भी तकलीफ पहोंचती है बलके रुहको कब्झ करनेवालेभी झेहमत के फरिश्ते होते हैं.

कबर

कबर खुद खोदे या मुसलमानों से खोदाये,जो मय्यत के कद से

ऐक बालिश्त बली हो.बलों के लिये साढेपांच फिट लंबी हो साढे चार फिट गेहरी हो.और साडे तीन फिट चोळी हो.

कफन

मर्द के लिये तीन कपळे ऐक चादर ऐक इजार ऐक कुर्ता

चादर = सरसे लेकर पेरतक और दोनों तरफ से ऐक-अेक बालिश्त बढा दे.

इजार = चादर से ऐक बालिश्त छोटी.

कुर्ता = गलेसे लेकर आधी पिंडली तक.

ओरत के लिये पांच कपळे. तीन जो उपर दियेगये उसके अलावह ऐक सीनाबंद ऐक ओढनी.

सीनाबंद = सीने से लेकर रानों तक.

ओढनी = तीन हाथ लंबी जिस से बाल ढकजाये.

पेहले कफन को तीन या पांच मरतबा लोबान वगैरहकी धूनी देदो, उस के बाद कफन पेहनाओ.

गुसल का तरीका

मय्यत को गुसल देनेके लिये बेरी के पत्ते डालकर पानी गरम करो,उसके बाद जिस तख्ते पर गुसल देना हो उस तख्ते को तीन या पांच मरतबा धूनी देदो फिर मय्यत को चादर समेत उठाकर लेआओ फिर गरम पानी लाकर उसमें ठंडापानी मिलाओ. उसके बाद मय्यत के पेहने हुऐ कपळे निकालकर मय्यत के उपर सतर पोश डाल दो.

अब मरने वाले को सरकी तरफ से जरा उंचा करे और पेटको आहिस्ता से मले और जोकुछ निकले उसको बांये हाथमें दस्ताने पहेनकर सतरपोश के नीचे से हाथ डालकर साफ करले. न सतर पोशको उठाये और न सतर पर निगाह डाले.

अब वझू कराओ,सिर्फ चार फर्झ अदा करने हैं.पेहले मुंहधोये लेकिन अगर जनाबत की या हैझ और निफासकी हालतमें मराहै तो मुंह और नाक में पानी पहोंचाना फर्झ है. अगर मुंह में पानी नहीं जासकता या गुसलकी हाजतमें नहीं मरा है तो थोडीसी रुइ पानीमें भीगोकर मुर्देके दांतोंपर दाहनी जानिब से फेरते हुऐ बांइ जानिब लाकर उस रुइ को फेंक दो. इस तरह तीन मरतबा करो करो,इसीतरह रुइ की तीन बत्ती जेसी बनाकर पानीमें भीगोकर

ऐक तरफ से,नाक में पेहले दाहने सुराख में,फिर दूसरी जानिब से बायें सुराख में फिराकर उस को फेंक दो, तीन मरतबा इसी तरह करो. उसके बाद मुंह, कान और नाक में रुइ डाल दो ताके मुंह धोते वक्त पानी अंदर न जानेपाये उसके बाद तीन मरतबा पूरा मुंह धोये,फिर तीन मरतबा दोनों हाथ कोहनियों समेत धोये,फिर सर का मसह करे,उस के बाद तीन बार दोनों पेर टख्नो समेत धोये,पेहले दायां फिर बायां.

जब वुजू करा चुको तो अब सर को साबुन वगैरह लगाकर खूब साफ करो फिर पूरे बदन पर पानी डाल कर साबुन लगा कर मलो के कुछ मैल रेहने न पाये,लेकिन सतर के उपर बगैर दस्ताने के हाथ न लगाओ और इस तरह मलो के सतर खुलने न पाये. उसके बाद मय्यत को बांइ करवट पर लेटा कर तीन मरतबा इस तरह सर से लेकर पेर तक पानी डालो के बांइ करवट तक पानी पहोंच जाये और हाथ से मलो के साबुन वगैरह सब निकल जाये. फिर दाहनी करवट पर लेटाकर इसीतरह करे,पूरे बदनपर पानी पहोंचाना जरूरी है अगर ऐक बाल बराबर जगह भी सुकी रेहगइ तो गुसल नहीं होगा,उसके बाद पेहली मरतबा के मानिंद सर की तरफ से उंचा करके पेट को मले, अगर कुछ निकले तो हाथ में दस्ताने पहेन कर साफ करले,वुजू और गुसल में इसके निकल ने से कुछ फर्क नहीं आया यानी फिर से कराने की जरूरत नहीं.

अब ऐक लोटे पानी में काफुर मिलाकर पूरे बदनपर मल दो ताके बदन खुश्बूदार होजाये, अब रुमाल से मय्यत के बदन को इस तरह पूंछो के रुमाल ऐक जगह रख्खो पानी चूसले तो उठा कर दूसरी जगह रखो इस तरह साफ करलो उसके बाद दुसरा सतरपोश उपर डालकर भीगा सतरपोश नीचे से निकाल लो,अब कफन तैयार करके उसकेउपर लाकर सुलादो.बेहतर येहै के जो करीबी रिश्तेदार हो वोह नेहलाये, अगर वोह न नेहला सके तो कोइ दीनदार नेहलाये.

कफनाने का तरीका

पेहले चादर बिछाओ फिर इजार,उसके उपर कुर्ते का नीचे का हिस्सा बिछाओ और उपर का हिस्सा लपेटकर सिरहाने की तरफ रख दो,अब उसके उपर गुलाब के पानी में भीगोया हुवा अबील छिड़क

दो. और ऐहतियातन रुइ की दो गद्दी जेसी बनाकर ऐक सर के नीचे और ऐक पारजामे की जगह के नीचे रखदो ताके कोइ चीज खून वगैरह निकले तो कफन खराब न हो (लेकिन ये जरुरी नहीं है) फिर उसके उपर मुर्दे को सुला दो. फिर झमझम या गुलाब के पानी में कापूर को कीचड जैसा बनाकर उसमें इत्र मिलादो,अब उसको सरपर और मुर्दा मर्द होतो दाढीपर भी लगाओ फिर सजदे की जगह पर, पेशानी, नाक, हाथ की उंग्लियां और पंजेपर,पिंडली,घुटना,टख्ने और बगलपर लगाओ मुर्देके उपर जितना चाहे इत्र लगाओ लेकिन कफनपर लगाना जाइझ नहीं उसके बाद कुर्ता पेहना दो. अगर औरत है तो उसके सरके बालके दो हिस्से करके दोनों तरफ से निकाल कर सीने के उपर रखदो, और उसके सरपर ओढनी डालकर दोनों सिरे सिनेपर जो बाल है उसके उपर ओढा दो (लपेटे या बांधे नहीं)उसके उपर सीनाबंद ओढा दो,उसके बाद इजार लपेटो पेहले बांइतरफसे फिर दांइतरफसे,फिर इसी तरह चादर लपेटो और सर, पेर और कमरपर पट्टी बांध दो. उसके बाद जनाझह लाकर, मुर्दे को सिरहाने की तरफ से उठा कर जनाझे में रखो और कबरस्तान की तरफ लेजाओ.

जनाझह को तेज कदम लेजाना मस्नून है, लेकिन इत्ना तेज न चले के जनाझह हरकत करने लगे.जोलोग जनाझह के साथ हों उनको जनाझह के पीछे चलना मुस्तहब है.जनाझह लेजाते वक्त दुआ या झिक्र बुलंद आवाज से न पढे और आहिस्ता भी कोइ झिक्र साबित नहीं अगर आहिस्ता कुछ पढे और जनाझह लेजाने की सुन्नत न समजे तो पढ सकते हे.

जनाझह की नमाझ का मस्नून तरीका

जनाझह की नमाझ में दो फर्झ है

(१) कियाम यानी खडे होकर, नमाझे जनाझह पढना.

(२) चार मरतबा तकबीर यानी अल्लाहु अकबर कहेना.

● पहेले इसतरह निय्यत करे. जनाझह की नमाझ का इरादह करता हुं जो अल्लाह की नमाझ है, और मय्यत के लिये दुआ है, मुंह मेरा काबा शरीफ की तरफ इस इमाम के पीछे, अल्लाह के वास्ते.

● जब इमाम पहेली तकबीर कहे तो, तकबीर केहते हुऐ हाथ कानों तक उठाकर नाफ के नीचे बांधले. और इस तरह 'सना' पढे 'सुब्हा-न कल्लाः-हुम्म वबि हम्दि-क व तबा-र-कस्मु-क व तआला जद्दु-क व लाइला-ह गयरुक.'

● जब इमाम दूसरी तकबीर कहे तो हाथ न उठाये, बल्के तकबीर केहकर दुरुदे इब्राहीम जो नमाज़ में पढी जती है वो पढे.

● जब तीसरी तकबीर इमाम कहे तो तकबीर केहकर मय्यित की दुआ पढे.

मय्यित बालिग हो तो ये दुआ पढे

'अल्लाहुम्मग्फिर लिहय्यिना व मय्यितिना व शाहि–दिना व गाइबिना व सगीरिना व कबीरिना व ज़–करिना व उन्षाना, अल्लाहुम्म मन् अहूययतहु मिन्ना फ–अहूयिही अलल् इस्लामि वमन् त–वफ्फय्–तहु मिन्ना फ–त–वफ्फहु अलल् इमान'.
तरजुमा : ऐ अल्लाह ! तू हमारे जिंदह और मुर्दह को हाजिर और गाइब लोगोंको, छोटों और बडोंको मर्दो और औरतोंको बख्श दे. ऐ अल्लाह! तू हममें से जिसको जिंदह रखे उसे इस्लामपर जिंदह रखियो,और जिसको वफात दे उसको इमान पर वफात दीजियो.

मय्यित नाबालिग लडका हो तो ये दुआ पढे

'अल्लाहुम्मज् अल्हु लना फ–रतंव वज्अल्हु लना अज्रंव् वज़ु–ख्रंव् वज्अल्हु लना शाफिअंव व मुशफ्फअा' तरजुमा: ऐ अल्लाह ! इसको तू हमारे लिये पेशवा बना और हमारे लिये अज्र और जखीरह बना और हमारे लिये शाफेअ बना और उसकी शफाअत कबूल फरमा.

मय्यित नाबालिग लडकी हो तो ये दुआ पढे

अल्लाहुम्मज् अल्हा लना फ–रतंव वज्अल्हा लना अज्रंव् वज़ु–ख्रंव् वज्अल्हा लना शाफिअतंव व मुश–फ्फअह्'.

●जब चौथी तकबीर कहे तो खुदभी तकबीर कहे.औरजब इमाम 'अस्सलामु अलय्कुम व रहूमतुल्लाह' केहकर सलाम फेरे तो खुदभी सलाम फेरदे

● जब भी कब्रस्तान में दाखिल हो तब ये दुआ पढे 'अस्सलामु–अलय्कुम या अहूलल् कुबूरि यग्फिरुल्लाहु लना व–लकुम् व अन्तुम् स–लफुना व नहूनु बिल् अषर'. तरजुमा : ऐ कबर वालो तुमपर सलाम! अल्लाह हमारी भी मग्फेरत करदे,और तुम्हारी भी मग्फेरत फरमादे, तुम हमसे पहेले चले गये हो, हम भी तुम्हारे पीछे पीछे आरहे हैं .(हिस्ने हसीन)

● मुर्दे को जब कबर में उतारे तब ये दुआ पढे 'बिस्मिल्लाहि व–

अल्ला सुन्नती रसूलिल्लाह तरजुमा: अल्लाह के नाम के साथ और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत(मिल्लत)पर(हम उसको दफन करते हैं).

● जब कब्र में मिट्टी डाले तो मिट्टी दोनो हाथो में भरकर तीन मरतबा डाले,जब पहेली मरतबा डाले तो पढ़े 'मिन्हा खलक्नाकुम'
दूसरी मरतबा डाले तो पढ़े 'व फीहा नुइदुकुम'
तीसरी मरतबा डाले तो पढ़े 'व मिन्हा नुख्रिजुकुम तारतन् उख्रा'

● हुजूर ﷺ ने फरमाया: जो शख्स जनाझह में हाजिर होता है,और नमाझे जनाझह के पढेजाने तक जनाझे के साथ रहेता है,तो उस को ऐक किरात षवाब मिलता है,और जो शख्स दफन से फरागत तक जनाझह के साथ रेहता हे,तो उसको दो किरात षवाब मिलता है. आप ﷺ से दरयाफ्त कियागया दो किरात क्या है ? इरशाद फरमाया (दो किरात) दो बळे पहाळो के बराबर है.(मुस्लिम शरीफ)

बाकी मस्नून दुआऐ

तरावीह की हर चार रकात के बाद पढने की दुआ

सुब्हा–न झिल्मुल्कि वल् म–ल–कुत.सुब्हा–न झिल् इझ्झति वल् अझ्मति वल् हय्बति वल् कुद्रति वल् किब्रियाइ वल् ज–बरुत. सुब्हानल् मलिकिल् हय्यिल्लझी ला यनामु वला यमूतु. सुब्बूहुन् कुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकति वर्रुह.

तक्बीरे तशरीक

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर, ला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर. अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल् हम्द.

इस्तिखारह की दुआ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्तखीरु–क बि इल्मि–क व अस्तक्दिरु–क बि कुद्रति–क व अस्अलु–क मिन् फद्लिकल् अझीम. इन्न–क तक्दिरु वला अक्दिरु व तअ्लमु वला अअ्लमु व अन्त अल्लामुल गुयूब. अल्लाहुम्म इन् कुन्त तअ्लमु अन्न हाझल अम्र (इस जगह अपने मतलब का ख्याल करे) खय्रुल्ली फी दीनी व मआशी व – आकिबति अम्रि फक्दिरहु ली व यस्सिरहुली षुम्म बारिकली फीही व इन कुन्त तअ्लमु अन्न हाझल अम्र (इसजगह अपने मतलबका ख्याल करे) शर्रुल्ली फी दीनी व मआशी व आकिबति अम्रि फस्रि– फहु अन्नी व स्रफ्नी अन्हु वक्दिर् लियल् खैर हय्षु का–न षुम्मर् दिनी बिही.

सलातुल हाजत की दुआ

ला इला ह इल्लल्लाहुल् हलीमुल् करीम. सुब्हानल्लाहि रब्बिल् अर्शिल् अज़ीम. वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन. अस्अलु-क मूजिबाति रह्मति-क व अज़ाइ-म मग्फिरतिक् वल् ग़नी-म-त मिन् कुल्लि बिर्रिव् वस्सला-म-त मिन् कुल्लि इस्मिन्, ला त-दअ्ली ज़म्बन् इल्ला ग-फ़र्तहू वला हम्मन् इल्ला फर्रज्तहू वला हा-ज-तन् हि-य ल-क रिदन् इल्ला क-दय-तहा या अर्-ह-मर्राहिमीन.

सुब्ह को ये दुआ पढ़ले शाम तक कोइ मुसीबत नहीं पहोंचेगी.
अल्लाहुम्म अन्त रब्बि लाइला-ह इल्ला अन्त अलय्-क तवक्कल्तु व अन्त रब्बुल् अर्शिल् करीम माशा अल्लाहु का-न वमा लम्यशअ् लम्यकुन् व लाहव्-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अज़ीम् अअ्लमु अन्नल्ला ह अला कुल्लि शयइन् कदीर वअन्नल्ला ह कद् अहा-त बिकुल्लि शैइन इल्मा. अल्लाहुम्म इन्नी अउज़ु बि-क मिन् शर्रि नफ्सी वमिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन् अन्त आख़िज़ुन् बिना सिय-तिहा इन्न रब्बि अला सिरातिम् मुस्तकीम.

सेहरी की निय्यत

अल्लाहुम्म इन्नी असुमु गदन्ल-क फग्फिर्ली
माकद्दम्तु वमा अख़्ख़रतु

इफतार की दुआ

अल्लाहुम्म इन्नी ल-क सुम्तु व बि-क आमन्तु वअला
रिज़्कि-क अफ्तर्तु फ त-कब्बल् मिन्नी.

जब किसी के यहां इफतार करे

अफ्-त-र इन्दकुमुस्साइमू-न वअ-क-ल तआमकुमुल्
अब्रा-र व सल्लत् अलय्कुमुल मलाइकहू.

जब नया फल सामने आओ

अल्लाहुम्म बारिक् लना फी समरिना व बारिक् लना फी
मदीनतिना व बारिक् लना फी साइना व बारिक् लना फी मुद्दिना

आइनह देखते वकत

अल्लाहुम्म अन्त हस्सन्-त ख़ल्क़ि ल-हस्सिन् ख़ुलुकी.

किसी को हंसता हुवा देखे

अद्-ह-कल्लाहु सिन्न-क.

किसी को दुःख या बिमारी में गिरीफतार देखे

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफानी मिम्मब् तला-क बिही व फद्-लनी अला कसीरिम् मिम्मन ख-लक्ना तफ्ज़ीला.

किसी खास गिरोह से खौफ के वकत

अल्लाहुम्म इन्ना नजअलु-क फी नुहुरिहिम् वनउज़ुबि-क मिन शुरुरिहीम्

जब कोइ भी मुसीबत पहोंचे

इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलयहि राजिउन, अल्लाहुम्म अजिरनी फी मुसीबती वअ-ख्लुफली खयरम् मिन्हा.

जब बाझार पोंहचे

चोथा कल्मा पढे, जिसकी फझीलतमें आला है के हुझूर ﷺ ने फरमाया : जिस शख्सने बाझारमें कदम रखते हुओ ये कले-मात पढे. (चोथा कल्मा) अल्लाह तआला उसके लिये दस लाख नेकियां लिख लेते हैं, और उसकी दस लाख खतायें मिटा देते हैं और दसलाख दर्जे उसके लिये बुलंद कर देते हैं. (तिरमिझी)

जब खरीदो फरोख्त करे

अल्लाहुम्म इन्नी अउज़ु बि-क मिन् स-फ-क़तिन् खासिरतिन् व यमीनिन फाजिर.

जब कपडा पहने

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लझी कसानी हाजा व रझक्नी मिन् गैरी हव्लिम मिन्नी वला कुव्वह.

जब नया कपडा पहने

अलहम्दु लिल्लाहिल्लझी कसानी माउवारी बिही अव्रती व-अ तजम्मलु बिही फी हयाती.

जब चांद देखे

अउज़ु बिल्लाही मिन् शर्रि हाझल् गासिक्

जब नया चांद देखे

अल्लाहुम्म अहिल्लहु अलय्ना बिल्युम्नि वल् इमानि वस्सलामति वल् इस्लामि वत्तव्फीकि लिमा तुहिब्बु वतर्दा रब्बी वरब्बुकल्लाह

किसी को अच्छी हालत में देखे

माशा अल्लाहु ला हव्ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह.

जब बाज़ार जाओ

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु-क खय्-र हाज़िहि-स्सूकि व खै-र माफीहा व अऊज़ु बि-क मिन् शर्रिहा व शर्रि मा फीहा. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक अन् उसी-ब फीहा यमीनन् फाजि-रतन अव् सफ्क़तिन् खासिरह.

पहेली रात की दुआ

जब पहेली मरतबा बीवी के पास जाये तो उसके पेशानी के बाल पकड कर ये दुआ पढे.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु-क मिन् खय्रिहा व खय्रि मा जबल्तहा अलय्हि व अऊज़ु बि-क मिन् शर्रिहा व शर्रि मा ज-बल्तहा अलयहि

जब हम बिस्तरी का इरादा करे

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निब्नश्शयता-न व जन्निबिश्शयता-न मा रज़क्तना.

जब इन्ज़ाल हो तो ये दुआ दिल में पढे

अल्लाहुम्म ला तज्अल् लिश्शयतानि फीमा रज़क्तनी नसीबा

पांच कलिमा तर्जुमे के साथ

(१) अव्वल कलिमा तय्यब : ला-इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ अल्लाह के सिवा कोइ इबादत के लाइक नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं.

(२) दूसरा कलिमा शहादत :'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहु व रसूलुहू' मैं गवाही देता हुं के अल्लाह के सिवा कोइ इबादत के लाइक नहीं.और मैं गवाही देता हुं. के बेशक मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे. और रसूल हैं.

(३) तीसरा कलिमा तमजीद :'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हव्ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अज़ीम.अल्लाह ताला पाक है.सब तारीफें अल्लाह ही के लिये हैं. और अल्लाह के सिवा कोइ माबुद नहीं.

अल्लाह सब से बड़ा है. हर किसम की ताकत, और कुव्वत अल्लाह ही की तरफ से है जो बड़ा आलीशान और अजमत वाला है.

(४) चोथा कलिमा तवहीद : 'ला इला–ह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरी–क लहु लहुल् मुल्कु. व–लहुल् हम्दु. युहयी वयुमीतु. बियदिहिल् खैर.व हु–व अला कुल्लि शयइन् कदीर' : अल्लाह के सिवा कोइ माबूद नहीं वोह अयकेला है.उसका कोइ शरीक नहीं,उसीकी बादशाही है.उसीके लिये तमाम ता'रीफें है.वोही जिलाता है.और वोही मारता है. उसीके कब्जे में तमाम भलाइयां है. और वोह हर चीज पर कादिर है.

(५) पांचवां कलिमा रदे कुफ्र :'अल्लाहुम्म इन्नी अउजु बि–क मिन् अन् उशरि–;क बि–क शयअंव् वअ–न अअ्लमु बिही व अस्तग्फिरु–क लिमाला अअ्लमु बिह. तुब्तु अन्हु. व–त–बर्रअ्–तु मिनल् कुफ्रि.वशिशर्कि.वल् मआसी कुल्लिहा. अस्लम्तु. व आमन्तु व अ कुलु. ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह.' ऐ अल्लाह ! में तेरी पनाह चाहता हुं इस बात से के तेरे साथ किसी चीज़ को जान बुजकर शरीक करुं,और मग्फिरत चाहता हुं तेरी.उस गुनाह से जिसका मुझे इल्म नहीं.तौबह की मैंने, और बेज़ार हुवा में कुफ्र और शिर्क से,और तमाम गुनाहों से.इस्लाम लाया में,और इमान लाया में. और केहता हुं में के अल्लाह के सिवा कोइ इबादत के लाइक नहीं.और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं.

इमाने मुजमल्

आमन्तु बिल्लाहि कमाहु–व बिअस्माइही व सिफातिहि व–कबिल्तु जमी–अ अहकामिही.': इमान लाया में अल्लाह पर, जैसा के वोह अपने नामों और सिफतों के साथ है. और मेने उसके तमाम अहकाम कबूल किये.

इमाने मुफस्सल

'आमन्तु बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रूसुलिही वल् – यव्मिल् आखिरि वल् कद्रि खयरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआला वल्बअ्षि बअ्दल् मौत' : इमान लाया में अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर और कयामतके दिनपर,अच्छी और बुरी तकदीरपर जो खुदा तआलाकी तरफ से होती है. और मोत के बाद उठाये जानेपर.

मुतफर्रिकात

इस्लामी महीने बारह है

१. मुहर्रमुल हराम	७. रजबुल मुरज्जब
२. सफरुल मुझफ्फर	८. शाअबानुल मुअझझम
३. रबीउल अव्वल	०९. रमझानुल मुबारक
४. रबीउल आखर	१०. शव्वालुल मुकर्रम
५. जमादिउल अव्वल	११. झि कअदतुल हराम
६. जमादिउल आखर	१२. झिल हिज्जतुल हराम

हफ्ते के दिन सात है

१ जुमअह २ शनीचर ३ इतवार ४ पीर

५ मंगल ६ बुध ७ जुमेरात

खलीफा चार है

(१) हझरत अबूबक्र सिद्दीक रदिअल्लाहु त. अन्हु.
(२) हझरत उमरे फारुक रदिअल्लाहु तआला अन्हु.
(३) हझरत उस्माने गनी रदिअल्लाहु तआला अन्हु.
(४) हझरत अली मुरतुझा रदिअल्लाहु तआला अन्हु.

इमाम चार है

(१) हझरत इमाम अबू हनीफह रहमतुल्लाहि अल.
(२) हझरत इमाम शाफइ रहमतुल्लाहि अलयहि.
(३) हझरत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलयहि.
(४) हझरत इमाम अहमद इब्नेहम्बल रह.अलयहि

मश्हूर फरिश्ते चार है

(१) हझरत जिबइल अल.जो खुदा का पैगाम पयगम्बरों के पास लातेथे (२) हझरत इझराइल अल.जो मख्लूक की जान निकालनेपर मुकर्रर है(३)हझरत मीकाइलअल.जो मख्लूक को रोझी पहोंचानेके कामपर मुकररहै(४)हझरत इसराफील अल.जो कयामत के दिन सूर फुंकने पर मुकर्रर है

मश्हूर किताबें चार है

(१)झबूर, जो हझरत दाउद अलयहिस्सलाम पर नाझिल हुइ.
(२)तौरेत, जो हझरत मुसा अलयहिस्सलाम पर नाझिल हुइ.
(३)इन्जील,जो हझरत इसा अलयहिस्सलाम पर नाझिल हुइ
(४)कुर्आन मजिद,जो हझरत मुहम्मद ﷺ पर नाझिल हुवा

आप ﷺ की अज़वाजे मुतह्हरात

(१) हज़रत ख़दीजह रदि (२) हज़रत आइशह रदि. (३) हज़रत हफ़्सह रदि.(४)हज़रत उम्मे सलमह रदि.(५)हज़रत सौदा रदि. (६)हज़रत जोवयरह रदि.(७)हज़रत उम्मेहबीबह रदि.(८)हज़रत मैमूनह रदि.(९)हज़रत सफ़िय्यह रदि.(१०)हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ोज़य्मह रदि.(११) हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रदि.

आप ﷺ के साहबजादे

(१) हज़रत क़ासिम रदि.(२) हज़रत अब्दुल्लाह रदि.
(३) हज़रत इब्राहीम रदि.

आप ﷺ की साहबजादियां

(१) हज़रत ज़ैनब रदि. (२) हज़रत रुक़य्यह रदि.
(३) हज़रत उम्मे कुल्सूम रदि. (४)हज़रत फ़ातेमह रदि.

आप ﷺ के चचा

(१) हज़रत हमज़ा रदि.(२) हज़रत अब्बास रदि.(३) अबू तालिब (४)अबू लहब (५)अब्दुल उज़्ज़ा (६)ज़ुबैर (७)हारिस (८)मुक़व्विम
(९) ज़िरार (१०) मुग़ीरा(हुजैल)

आप ﷺ की फुफियां

(१) हज़रत सफ़िय्यह रदि.(२) हज़रत अरवा रदि.(३) हज़रत आतिका रदि.(४) उम्मे हकीम(५) बर्रा(६) उमय्मा

तबकाते बहिश्त (जन्नत) आठ है

(१) ख़ुल्द (२) दारुस्सलाम (३) दारुल क़रार (४) जन्नते अदन
(५) जन्नतुल मावा (६)जन्नतुन्नईम (७)इल्लिय्यीन (८) फ़िरदौस

तबकाते दोज़ख सात है

(१) सक़र (२) सईर (३) लज़ा (४) हुत्मा (५) जहीम
(६) जहन्नम (७) हावियह

कहरे ख़ुदावंदी की पांच सुरतें (उमूमन)

(१)कहत (२)वबा (३)जंग (४)ना इत्तेफ़ाक़ी (५)ज़ालिम हाकिम

आठ चीज़ों में शिफ़ा है

(१)कुर्आन में(२)सदकह में(३)ज़मज़म में(४)शहदमें(६)कलुंजी में
(५) सिलह रहमी में (७) सफ़र करने में (८) सूरे फ़ातिहा में

मख़्लुकात छे किसम की है

(१) बंदे (२) चरिंदे (३) परिंदे (४) दरिंदे (५) गज़ंदे (६) पयरिंदे

नेक नसीहतें

(१) पढें, इन्तेरवाब के साथ. (२) गौर करें, गेहराइ के साथ.
(३) खिदमत करें, लगन के साथ (४) बहस करें दलील के साथ.
(५) बोलें, इख्तिसार के साथ. (६) मुकाबला करें, जुर्अतके साथ
(७) इबादत करें, मोहब्बतके साथ (८) बातें सुनें, तवज्जुहके साथ
(९) जिंदगी तै करें अेअतेदाल के साथ.

सआदत की ग्यारह अलामतें

(१) दुनिया से बेरग्बती और आखेरत की रग्बत करना (२)इबादत और तिलावते कुर्आन की कथरत करना.(३)फुजूल बात से अेहतेराज करना. (४) नमाझ का अपने वकत पर खुसूसी अेहतेमाम (५) हराम चीज से चाहे अदना दर्जे की हारम हो बचना (६)सालेह की सोहबत इख्तियार करना. (७) मुतवाजेअ रेहना. (८) सखी और करीम होना. (९) अल्लाह की मख्लूक पर शफकत करना. (१०) मख्लूक को नफा पहोंचाना. (११) मौतको कथरत से याद करना. (फझाइले सदकात)

दस आदतें अल्लाह को नापसंद है

(१)मालदारों की बखीली (२)फकीरों की तकब्बुरी (३)आलिमों की लालच (४)औरतों की बेहयाइ(५)मुजाहिदों की बुजदिली(६)आबिदों की रियाकारी (७) बुढ्हों की दुनिया से मोहब्बत (८)बादशाहों के जुल्म (९)अल्लाह वालों की खुद पसंदी. (१०) जवानों की सुस्ती.

पांच अमल में पांच नेअमत

(१) कनाअत में इझ्झत. (२) गुनाह में जिल्लत. (३) शब बेदारी में हैबत
(४) तर्के तमअ में तवंगरी. (५) भुके पेट में हिकमत.

बंदगी तीन चीजों का नाम है

(१) ऐहकामे शरीअत का लेहाज रखना.(२)कजा व कदर और किस्मते खुदावंदी पर राजी होना. (३) अपने इख्तियार और ख्वाहिश को छोड कर खुदा के इख्तियार और ख्वाहिशपर रजामंद होना.

दस चीजें दस चीजों को खाती है

(१) नेकी बदी को (२) तकब्बुर इल्म को (३) तौबह गुनाह को (४) जुठ रिझ्क को (५) अद्ल जुल्म को (६) गम उमर को (७) सदका बला को (८) गुस्सा अकल को (९) पशेमानी सखावत को (१०) गीबत नेक अमल को

नेक बख्ती पांच चीजों मे छुपी हुइ है

(१) फरमा बरदार बीवी. (२) नेक औलाद. (३) मुत्तकी दोस्त.

(४) नेक पड़ोशी. (५) अपने शहर मे रोजी.

छे कामो में जल्दी करना सुन्नते रसूल ﷺ है

इनके अलावह सब कामो में जल्दी करना शैतान से है.

(१) मेहमान को खाना खिलाने में (२)कर्झ अदा करने में (३)लड़की की शादी करने में (४) गुनाह से तौबह करने में (५) अझान सुनकर मस्जिद को जाने में (६) मुर्दे की तजहीजो तकफीन में.

हर जन्नती को छे सिफात नबियों वाली

(१) हझरत आदमअल.का कद (२)हझरत युसुफअल.की खूबसुरती (३) हझरत इसा अल.की उम्र. (४) हझरत दाउद अल. की आवाझ (५) हझरत अय्युब अल.का दिल.(६) हुझुर ﷺ वाले अख्लाक.

लोहे की लकीर

(१) जो बंदा अपने बातिन को दुरुस्त करलेता है, अल्लाह ताला उसके जाहिर को संवार देते हैं. (२) जो बंदा अपनी आखेरत को संवार लेता है, अल्लाहताला उसकी दुनिया को संवार देते हैं (३) जो बंदा अपना मामला अल्लाह से दुरुस्त करलेता है, अल्लाह ताला उसका मामला मख्लूक से दुरुस्त फरमा देते हैं.

यकीन के तीन दर्जे है

(१) इल्मुल यकीन. (२) ऐनुल यकीन. (३) हक्कुल यकीन.

कोनसी मख्लूक कोन से दिन पेदा हुइ

सहीमुस्लिम और नसाइ में हदीष है हझरत अबू हुरैरहरदि.फरमाते हैं हुझुर ﷺ ने मेरा हाथ पकड़ा और फरमाया : मिट्टी को अल्लाह ने हफ्ते के दिन पैदा किया और पहाड़ों को इतवार के दिन और दर-ख्तों को पीर के दिन और बुराइयों को मंगल के दिन और नूर को बुध के दिन और जानवर को जुमेरात के दिन और आदम अल.को जुम्मा के दिन असर के बाद की आखरी साअत में,असर के बाद से रात तक के वक्त में. (तफसीर इब्नें कषीर ब हवाला बीखरे मोती)

या रब्बि सल्लि वसल्लिम दाइमन अ-बदा

अला हबीबि-क खयरिल खल्कि कुल्लिहिमी

मकाम पर वापसी

मोहतरम बुज़ुर्गो दोस्तो अज़ीज़ो अल्लाह के रास्ते में निकल कर हमने दीन सीखा दीन का काम सीखा, रोज़ हमने नश्तकिये तहज्जुद इशराक, चाश्त, अव्वाबीन, और पांचों नमाज़ों का ऐहतेमाम किया, कुर्आने पाक की खूब तिलावत की तस्बीहात की पाबंदी की. हमें अभी घर जाना अच्छाभी नहीं लगता. लेकिन घर केभी तकाज़े हैं, बीवी बच्चों, मां-बाप, तिजारत, ज़राअत, नोकरी वगैरह का भी तकाज़ा है, इस लिये जाना पड़ता है, अल्लाह हमारे निकलने को बेइन्तिहा कबूल फरमाये. आमीन. घरके तकाज़े पूरे करने, और अल्लाह के रास्ते में फिर से निकलने की तैयारी के लिये घरपर जारहे हैं. इस निय्यत से घरपर जाना है.

हमने अल्लाह के रास्ते में निकल कर जो दीन का और दअवत का काम सीखा है, उसी काम को मकाम पर जाकर भी करना है. ये जिहादे अस्गर था. अब हम जिहादे अकबर की तरफ लौट रहे हैं. यहां पर हम फारिग थे, इसी काम के लिये, लेकिन मकाम पर जायेंगे तो वहां बहोत से तकाज़े होंगे और उसी के साथ-साथ दअवत के काम का भी तकाज़ा होगा, सब तकाज़ों के साथ साथ दअवत का तकाज़ा पूरा करना येहै जिहादे अकबर. अल्लाह हम सब को मौततक इस्तिकामत के साथ इस काममें लगे रेहने की तौफीक अता फरमाये. आमीन.

अब यहां से जब जाये तो सब से पहेले, साथियो में जो कुछ भी अनबन होगइ हो वोह माफ कराते हुए सुलह सफाइ कराते हुऐ निकले. क्यूँके ये हुकूकुल इबाद है, अगर हमारे जिम्मे रेहगया तो अल्लाह के यहां बड़ी पकड़ होगी, और ये चोथी सिफत इकरामे मुस्लिम की मश्क भी है. घर आने से पहेले अपने आने की इत्तेलाअ करदे, अपनी बस्ती में दाखिल होते वक्त ये दुआ पढे 'आइबु-न ताइबु-न आबिदु-न लि रब्बिना हामिदुन' जब बस्तीमें पोंहचे तो सबसे पहेले महोल्ले की मस्जिद में जाये, और वुज़ू कर के तहिय्यतुल वुज़ू और तहिय्युतल मस्जिद की दो रकात नमाज़ पढे, उसके बाद सलातुश शुक्रानह की दो रकात नमाज़ पढकर दुआ करे और अल्लाह का शुक्र अदा करे के अल्लाह ने ही हमें उसके रास्ते में निकलने की तौफीक अता फरमाइ, और वक्त भी सही लगवाया. और पूरा करवाया.

और दीन की समज भी अता फरमाइ.अपने लिये,अपने घरवालों के लिये,बस्ती के लये,बल्के पूरे आलम में बसने वाले इन्सानों के लिये हिदायत की,और इस्तिकामत के साथ इस काम में मौत तक जमे रेहने की दुआ करे.

उस के बाद साथी मिलने आये हों तो उनसे मिले, उसके बाद अपने घर जाये, जब सफर से अपने घर पहोंचे, तो ये दुआ पढे 'अव्बन् अव्बन् लिरब्बिना तव्बन ला युगादिरु अलय्ना हव्बा.' और हंमेशा जब भी अपने घर में दाखिल हो तो ये दुआ पढे 'अल्ला-हुम्म इन्नी असअलु-क खय्रल् मव्लजि व खय्रल् मख्रजि बिस्मिल्लाहि व- लज्ना व बिस्मिल्लाहि ख-रज्ना अलल्लाहि रब्बिना तवक्कल्ना' उसके बाद सलाम करे,चाहे घर में कोइ हो या न हो दुरुदशरीफ पढे,और सूरे इख्लास पढे,इस से घर में खैरो बरकत होगी.

जब हम मकाम पर जायेंगे तो तमाम लोगों की नझरें हमारे उपर होगी,जिसतरह नइ दुल्हन को लोग देखते हैं,के अल्लाह के रास्ते में जाकर आया है, नमाझ किस तरह पढ रहा है तिलावत कितनी कर रहा है,अख्लाक और मामलात में कया फर्क आया है इसलिये यहां से जा कर हम को पांचो नमझों को,अपने वकत पर, तकबीरे उला के साथ,सफे अव्वल में पढना है.कुर्आन की तिलावत. तस्बीहात की पाबंदी. मोका महल की दुआओं का ऐहतेमाम. और मकामी पांच काम मे पाबंदी से जुडना है,मामलात की सफाइ,और अख्लाक के साथ पैश आना येही असल दीन है,यहांपर हमने इस की मश्क की है,अब मकाम पर जाकर लोगों के लिये हमें नमूना बनना है. और येही असल दअवत है, हमारा अमल ही दअवत है. ताके लोग हमें देखकर अल्लाह के रास्ते में निकलने वाले बनें.

इस रास्ते में निकलने से पहेले हम नमाझों मे सुस्ती करते थे, तिलावत और तस्बीहात की पाबंदी नहीं थी.बीवी,बच्चों और पडो-सियो के हुकूक में कोताही करते थे,मां-बाप को सताते थे वगैरह बुरी आदतें हमारे अंदर थी.अल्लाह के रास्ते में निकले तो अल्लाह ने हमें सही रास्ता बताया,और अब मकाम पर आकर सही अमल कर रहे हैं तो जुबान से अगर दअवत नहीं दे सके तो भी अमल से लोगों को दअवत मिलेगी,लोग खुदभी अल्लाहके रास्तेमें निकलेंगे

और अपने घरवालों को भी अल्लाह के रास्ते में भेजेंगे और अगर खुदा न ख्वास्ता हमने कोताही की,तो हमें भी नुकसान होगा,और ओरों को भी नुकसान होगा.इसलिये पहेले दिनही से मस्जिदवार जमाअत के साथ जुडना है,और मकामी पांचकाम करते हुऐ जोभी तकाजे हमपर आये उसपर लबैक केहना है.

ये न हो के अल्लाह के रास्ते में निकलकर सही दीन सीखा, सही कुर्आन सीखा, तो मकाम पर आकर दूसरों की गल्लियां निकालने लग जाये. अल्लाह ने ये सब इसलिये नहीं सिखाया के सुपर विझन करने लगजाओ बल्के काम करने के लिये सिखाया है.इसलिये अगर किसी से कोइ गल्ती होभी जाए तो मोका महल देखकर, प्यार और मोहब्बत से, आहिस्ता से उनको बताया जाये. वरना हमें तो अपनी गल्तीयों को देखना है,दूसरों की गल्तीयोंपर उंगली नहीं उठाना है इस से तो तोड पैदा होगा, हमें तो सब को जोडना है. जिस को जोडते और जुडते आगया, और माफ करते और माफी मांगते आगया वोह इस काम को कर सकता है.

इसलिऐ सबसे पहेले अपनी इस्लाह की फिक्र हो,के अपने अंदर क्या क्या कमियां है,उसको दूर करने की कोशिश करे,दूसरों की इस्लाह की फिक्र में न पडे अपने आप को उसूलों का पाबंद बनाऐ,दूसरों को उसूलोंपर चलाने की फिकरमें न पडे,उसूल अपने लिये हे,दूसरों के लिये तरगीब हे दूसरों का इकराम और खिदमत करें, खिदमत लेने की फिक्र में न पडे. इस तरीकेपर जो साथी काम करेगा वोह आगे बढेगा और जमेगा.

और जो दाइ इस काम में जमगया अल्लाह तआला उसे दुनिया मे पांच इनाम देंगे. (१) हरएक का महेबूब होगा. (२) हरएक चीज में बरकत होगी (३) दुआओं से काम बनेंगे (४) अल्लाह वालों की दुआओ में हिस्सा मिलेगा (५) दाइ की नस्लो में दीन चलेगा.

दाइ में इन सिफातो का होना जरुरी है

(१) पहाड जैसी इस्तिकामत.(२) जमीन जैसी नरमी.(३) आफताब जैसा इरादा. (४) ताजिर जैसा मिजाझ (५) किसान जैसी महेनत. (६) बारिश जैसी सखावत. (७) साहिल जैसी आजिझी. (८) आस्मान जैसी वुस्अत (९) मुसाफिर जैसी हिम्मत.

इस काम में वोह जमेगा

(१)जो इस काम को यकीन के साथ करेगा(२)जो रोजाना वक्त देगा (३) जो माहोल में रहेगा, (४) जो अमीर की इताअत के साथ चलेगा (५) जो सब की अच्छाइयां देखेगा (६)जो तवाजुअ के साथ चलेगा, (७) जो मदामत तौबह, और इस्तिग्फार के साथ चलेगा (८) जो दूसरों की गल्ती अपने सर लेगा (९) जो दुसरों की गलत बातकी अच्छी तावील करेगा(१०)जो इस्तेकामत की दुआ मांगते हुऐ चलेगा. (११) जो अल्लाह से डरते हुऐ चलेगा (१२) जो इख्लास से कुर्बानी देगा.(१३) जो उम्मत का गम लेकर चलेगा.

इस काम से वोह कटेगा

(१) जो इस में रखना डालेगा (२) जो किसी के ऐब देखेगा (३) जो तकब्बुर के साथ चलेगा (४) जो गल्तीयों को दूसरोंके सर डालेगा (५) जो हर बात का उल्टा मतलब निकालेगा (६) जो ये समजेगा के मेरी वजह से काम हो रहा है (७) जो गीबत,अअ्राझ,तनकीद, बदनजरी,शहवत वगैरह के साथ चलेगा (८)उपर जो इस्तेकामत (जमेगा) के अस्बाब बतायें हे उसके खिलाफ जो चलेगा.

(ये तीनो बातें हझ.मो.सइद अहमद खांन साहब की हे)

इस से जोड पैदा होगा (हदीसे नबवी (सल.)

(१) जो तुज से ताल्लुक तोडे, तू उस से जोड. (२) जो तेरा हक मारे तू उसे अता कर.(३) जो तुजपर जुल्म करे तू उसे माफ कर.(४) जो तुजसे बुरा सुलूक करे तू उस से अच्छा सुलूक कर.

ये काम करो (मो.फारुक साहब)

(१) सलाम का रिवाजा डालो.(२)सब का इक्राम करो.(३)हदये का रिवाज डालो (४)पीठपीछे तारीफ करो (५)सब की होस्ला अफझाइ करो.(६) तनहाइ में उसका नाम लेकर दुआ करो.

ये काम न करो

(१) ताना किसी को न दो (२)गीबत किसी की न करो (३)किसी के ऐब न निकालो(४)मनमानी न करो(५)किसी को हकीर न समजो (६) नुकते चीनी न करो.(७) किसी का मुकाबला न करो.(८) पलट के जवाब न दो. (९) बहस मुबाहसा न करो. (१०) किसी को नीचा न दिखाओ.

दाइ के आठ सिफात

(१) उम्मत के साथ मोहब्बत का होना.(२)अपनी इस्लाह की निय्यत से दअवत देना (३) जानो माल.और वक्त की कुर्बानी का जझबा होना (४) तकब्बुर, और बड़ाइ के बजाये आजिझी.और इन्केसारी होना (५)काम्याबी मिलनेपर अल्लाह की मदद समजना(६)लोगों के न मानने पर नाउम्मीद न होना (७) लोगों के तकलीफ देने पर सब्र करना (८) हर नेक अमल के आखिर में इस्तिग्फार करना.(आले.इ.

अहम नुकात

★ दीन जरूरत है और दअवत जिम्मेदारी,जो अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता उसकी जरूरत पूरी नहीं होती.

★ दअवत दीन की बका और यकीन की तब्दीली और माहोल की तब्दीली का सबब है.

★ जो बात दअवत में आयेगी, वोह बात यकीन में आयेगी. और जो बात यकीन में आयेगी, वोह बात अमल में आयेगी.

★ दाइ का दअवत देना अपनी इस्लाह के लिये है.

★ दअवत दाइ के लिये मुफीद है.सामने वाला कबूल करे या न करे.

★ दूसरों के लिये मतलूब है अपने लिये मकसूद है.

★ दाइ का बरदाश्त करना मदउ की हिदायत का सबब बनता है.

★ मोहसिन मुख्लिस पर गालिब आजाता है.

★ जिस दिन दअवत नहीं देंगे दूसरे आमाल में जोअफ पैदा होगा.

★ इमान बनता है नागवार हालात में.हालात को देखकर चलने का नाम दअवत नहीं बल्के सियासत है.

★ कल्मे की दअवत से यकीन, यकीन से आमाल, आमाल से अल्लाह की रझा.और अल्लाह की रझा से काम्याबियां.

★ जिस की निगाह अपनी कोताहियों पर होगी वोह कुर्बानी में आगे बढेगा और इस से उस की इस्लाह भी होती रहेगी और तरक्की भी होती रहेगी.

अख्लाक ऐक हुस्ने इलाही का ताज है
है जिस के सरपर उसका जमाने में राज है

दाइ के फझाइल

◈ ऐक हदीष में आया है के तीन आदमी कयामत के दिन ऐसे होंगे जिन को कयामत का खौफ दामनगीर न होगा, न उन को हिसाब किताब देना पडेगा,उनमें से ऐक वोह शख्स है,जो लोगों को नमाझ के लिये बुलाता हो सिर्फ अल्लाह के लिये. (तबरानी)

◈ ऐक मोकेपर अब्दुर्रहमान बिन औफ रदि.ने सारे मदीनह वालों की दावत रख्खी थी, आप ﷺ ने जाते जाते मस्जिदे नबवी में ऐक सहाबी को देखा, जो कुछ सोच रहे थे. आप ﷺ बडे हैरान हुऐ,पूछा के क्या सोच रहे हो? कहा ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ में ये सोच रहा हुं के मेरे वालेदैन कीसतरह कल्मा पढकर जहन्नम की आगसे बच जाऐ. ये सुनना था के आप ﷺ ने फरमाया के अगर अब्दुर्रहमान रदि.सारे मदीनह वालों की दावत कर दे तो तेरी सोच(के षवाब)तक नहीं पहोंच सकता.(अलामाते मोहब्बत)

◈ हझरत मुसा अल.ने अल्लाह से पूछा के अल्लाह ! आप दाइ को जन्नत में क्या देंगे? तो फरमाया के मुसा(अल.) में दाइ को उसके ऐक ऐक बोलपर ऐक साल की इबादत का षवाब दुंगा.

◈ जो शख्स अल्लाह के रास्ते में अपनी जान के जरीये जिहाद करे तो उसे हर दिरहम के बदले में सात लाख के बकदर अज्र मिलेगा. फिर आप ﷺ ने अपनी बातकी ताइद में ये आयात तिलावत फरमाइ तरजुमा : अल्लाह जिसकेलिये चाहता है अज्र को बढा देते हैं. (ह.स.)

◈ सहल बिन मआझ रदि. अपने वालिद से नकल करते हैं के अल्लाह के रास्ते में नमाझ,रोझह और अल्लाहका झिक्र,अल्लाहके रास्ते में खर्च करने के मुकाबले में सातसो गुना बढा दिया जाता है.(अबू दावूद(सातलाख को सातसोसे झर्ब देनेसे ४९ करोड बनतेहैं)

◈ हझरत अनस रदि.फरमाते हैं के हुझूर ﷺ ने फरमाया: में तुम्हें ऐसे लोग न बताउं ? जो न नबी होंगे और न शहीद, लेकिन उन को अल्लाह के यहां इतना उंचा मकाम मिलेगा के कयामत के दिन नबी और शहीद भी उन्हें देखकर खूश होंगे,और वोह नूर के खास मिम्बरों पर होंगे,और पेहचाने जाऐंगे.सहाबा रदि.ने पूछा या रसूलल्लाह ﷺ वोह कोन लोग होंगे ? आप ﷺ ने इरशाद फरमाया,ये वोहलोग होंगे,जो अल्लाह के बंदो को अल्लाह का महबूब बनाते हैं

और अल्लाह को उसके बंदों का महबुब बनाते हैं, और लोगों के खैरख्वाह बनकर जमीन पर फिरते हैं.(हयातुस्सहाबा)

◈ ऐक आदमी ने कहा या रसूलल्लाह ﷺ में अपने मालमें से कुछ खर्च करुं तो मुजे अल्लाह के रास्ते में जाने का षवाब मिलेगा ? हुझूर ﷺ ने पूछा तेरेपास कितने पैसे है. उसने कहा, मेरे पास छे हजार रुपिये हैं तो आप ﷺ ने फरमाया अगर तुम सारा माल भी खर्च कर दो तो अल्लाह के रास्ते में जो सो रहा है उसकी नींद के षवाब को भी नहीं हासिल कर सकते.(अलामाते मोहब्बत)

◈ हझरत अब्दुर्रहमान रदि. ने तीस गुलाम आजाद किये. ऐक गुलाम आजाद करे तो आदमी दोझख से नजात पाता है. ऐक आदमी उन को हैरान होकर देखने लगा तो आप रदि.ने उस को देखकर कहा जो मेने अभी तीस गुलाम आजाद किये हैं उस से बडा अमल बताउं ? कहा जरुर बताइऐ, आप रदि. ने फरमाया ऐक आदमी अल्लाह के रास्ते में अपनी सवारी पर सवार जारहा हे. और लकडी उस के हाथ में हे, तो चलते चलते लकडी उस के हाथसे गिर गइ,उस सवार को लकडी उठानेकी वजहसे जो तक-लीफ हुइ,उसपर जो अज्र मिलेगा वोह तीस गुलाम आजाद करने से जियादह होगा.(अलामाते मोहब्बत)

◈ ऐक हदीष में आया है के जन्नत में ऐक हूर है, उस का नाम अयना है, उस की दांइ तरफ सत्तर हजार खादिम चलते हैं, और बांइ तरफ भी सत्तर हजार खादिम चलते हैं(यानी वोह ऐक लाख चालीस हजार खादिमों के दरमियान शानोशौकत के साथ चलती है)उसके बारे में आप ﷺ ने फरमाया के वोह ऐलान करती है.के भलाइओं को फैलानेवाले, और बुराइयों को मिटानेवाले कहां है. अल्लाह ने मेरा निकाह उसकेसाथ करदिया है,जो दुनियामें भला-इओं को फैलाते हैं,और बुराइयों को मिटाते हैं.(जन्नतके ह. मना.)

◈ हझरत कअब अहबार रदि.फरमाते हैं के जन्नतुल फिरदौस खास उस शख्स के लियेहै,जो अम्र बिलमअरुफ,और नही अनिल मुनकर करता है,अल्लाह ने जन्नतुल फिरदौस को अपने हाथों से बनाइ है उसमें सो दर्जे हैं और दो दर्जोके दरम्यान इतना फासला है,जितना जमीन और आसमान का फासला है. उसको बनाकर

उसपर मोहर लगादी.किसी ने नहीं देखा,न नबी ने,न फरिश्तो ने. अल्लाहताला दिन में पांच मरतबा उसको केहता है. मेरे दोस्तो के लिऐ खुश्बूदार होजा. खूबसूरत होजा, पांच दफा सजाता है. पांच दफा खुश्बू लगाता है.पांच दफा खूबसूरत बनाता है.उसके महेल की ऐक इंट सुर्ख याकूत की है.ऐक इंट सब्ज़ झुमुर्रद की है.ऐक इंट सफेद मोती की है.कस्तुरी,और मुश्क का गारा बनाया.मोतियों के पथ्थर बनाये. और उसके रास्ते बनाऐ. छोटे छोटे टीले बनाये छोटी छोटी पहाडियां. घास जाफरान बनाया. और अपने अर्श को छत बनाया.अल्लाह ने जितनी मख्लूकात बनाइ,उसमें अर्श सब से जियादह खूबसूरत मख्लूक है.अल्लाह के रास्ते में फिरनेवाला हर कदम. जन्नत के कितने दर्जे को तै करता होगा. (अला- मोहब्बत)

इमान की निशानी

इमान का नूर जब दिल मे दाखिल होजाता है तो उस की तीन – निशानी है.(१) दुनिया से बे रगबती.(२) आखेरत की रग्बत.(३) मौत की फिक्र और उसकी तैयारी में लग जाना.

हलावते इमानी की पांच अलामात

(१) इबादत में लझ्झत मिलती है.(२) तमाम ख्वाहिशात पर ताअत को तरजीह देता है. (३) अपने रब को राझी करने में हर तकलीफ को बरदाश्त करता है (४)हर मुसीबत में सब्रो रझाका घुंट पी लेता है. (५) हर हाल में मौला की कझा पर राझी होता है. (मिरकात)

इमान पर खात्मा हो उसके लिये सात नुस्खे.

(१) हर वुझू के वक्त मिस्वाक करना (२) बद नझरी से बचना (३) अझान के बादकी दुआ पढना (४) अल्लाह वालों से मोहब्बत रखना (५)इमान की दौलत जो हमें मिली है,उसका शुक्र अदा करते रेहना (६) हर नमाझ के बाद 'रब्बना ला तुझिग् कुलूबना बअ्–द इझ हदय्तना वहब्लना मिल्लदुन्–क रह्म–तन् इन्न–क अन्तल् वहहाब' पढना (७) कब्रस्त से 'या हय्यु या कय्यूम बिरह्मती–क अस्तगीस' पढते रेहना.(मिशकात शरीफ)

नमाझीओं के पांच दर्जे

हझरत इब्ने कैयुम रह.ने नमाझीयो के पांच दर्जे बताये हैं.

◈ पहेला दर्जा सुस्त.कभी पढी,कभी छोड दी,ये जहन्नम में जाओगा

◈ दूसरा दर्जा बाकाइदा पढने वाला.लेकीन अपने ध्यान में पढता है,कभी अल्लाह का ध्यान नही आया, उसकी डांट डपट होगी.
◈ तीसरा दर्जा बाकाइदा पढनेवाला.और कोशिश करता है.लेकिन ध्यान नहीं जमता,कभी ध्यान आता है. कभी निकल जाता है,ये रिआयती नंबरो से पास हो जायेगा. के उसने कोशिश तो की है.
◈ चोथा दर्जा महजूर है. अल्लाहु अक्बर कहेता है तो दुनिया से कट जाता हे. अल्लाह से जुडता है.ये जो सलाम फेरते हैं उसकी हिकमत येहै के.जब आदमी अल्लाहु अक्बर कहेता है तो वोह जमीन से उठजाता है. और आस्मान में दाखिल होजाता है. जब नमाझ खत्म होती है तो वापस आया तो इधर वालोंको भी सलाम करता है,और उधरवालोंको भी सलाम करता है,यहां से नमाझ का अज्र शुरु होता है.
◈ पांचवा दर्जा वोह है जो मुकर्रबीन की नमाझ है. अंबिया, और सिद्दीकीन की नमाझहै.उनकी आंखोकी ठंडक नमाझ बनजाती है
(मोलाना तारिकजमील साहब दा.ब.)
◈ बाज सहाबा रदि.फरमाते हैं के कयामत में लोग उस सूरत पर उठेंगे,जो सूरत उनकी नमाझो में होगी,यानी नमाझ में जिसकदर इत्मिनान और सुकून होगा, इसी कदर इत्मिनान और सुकून उन्हें कयामत के दीन हासील होगा.(इहयाउल उलूम)
◈ जिस ने फजर की नमाझ छोड दी,उसके चेहरे से नूर हटादिया जाता है.
◈ जिस ने झोहर की नमाझ छोड दी, उसके रिझक से बरकत खतम करदी ज़ाती है.
◈ जिस ने असर की नमाझ छोड दी, उसके बदन से ताकत खतम करदी जाती है.
◈ जिस ने मग्रिब की नमाझ छोळ दी, उसकी औलाद से उस को कोइ फाइदा नहीं होता.
◈ जिस ने इशा की नमाझ छोळ दी,उसकी निंद से राहत खतम करदी जाती है.
◈ हझरत सहल तस्तरी रह.फरमाते हैं के ऐहले इल्म के अलावह सब मुर्दे हैं ◈ अमल करनेवाले उलमा के अलावह सब गाफिल हैं
◈ मुखलिस अमल करनेवालों के अलावह सब गलत फेहमी में है.
◈ और मुखलिसीन को ये खौफ है के उन का अंजम कया होगा ?

आदमी चार तरह के हैं

खलील इब्ने अहमद रह. फरमाते हैं के आदमी चार तरह के हैं.
(१)ऐक वोह शख्स जो हकीकत में जानता है.और वोह येभी जानता है के में जानता हुं. ये शख्स आलिम है.उसका इत्तेबाअ करो.
(२) दूसरा वोह शख्स है जो जानता है, लेकिन ये नहीं जानता के में जानता हुं ये शख्स सो रहा है उसे जगा दो.
(३) तीसरा वोह शख्स है जो नहीं जानता, और येभी जानता है के में नहीं जानता हुं,ये शख्स हिदायत का मोहताज है,उसकी रेहनु-माइ करो.
(४) चोथा वोह शख्स है जो नहीं जानता,और येभी नहीं जानता,के में नहीं जानता हुं,ये शख्स जाहिल है,उसके करीब मतआओ.(इ.उ.

इल्म से मुराद

हकीकी इल्म वोह है जो हुझूर ﷺ अल्लाह की तरफ से लेकर आऐ और कब्र से लेकर आगे जोभी मराहिल आयेंगे वहां उसीके बारे में सवालात किये जायेंगे बाकी जो कुछ है वोह सिर्फ मालूमात और तजरुबात है,जो कब्रतक साथ देगा.इल्म की गायत तहकीके हक है इल्मो झिक्र इसलिये है के हक की तहकीक की जाये, अल्लाह का हक कया है ? नबी का हक कया है? और उसके बंदो का हक कया है ? अगर मालूम किया तो जानने वाले बनेंगे और ध्यान होगा तो फिर उसको माननेवाले बनेंगे.झिक्र ध्यान को केहते हैं.

अहम नसीहत

. अदब से इल्म समज में आता है, . इल्म से अमल सही होता है. . अमल से हिक्मत मिलती है, हिक्मत से झोहृद काइम होता है. . झोहृद से दुनिया मतरुक होती है. . दुनिया के तर्क से आखेरत की रग्बत हासिल होती है, आखेरत की रग्बत हासिल होने से अल्लाह के नजदीक रुत्बा हासिल होता है.

जब से होटों पे यारब तेरा नाम है
तेरे बीमार को काफी आराम है
तूने बख्शा हमें नूरे इस्लाम है
हम पे तेरा हकीकी ये इन्आम है

मस्जिदों को आबाद करने वालों के फ़ज़ाइल

◈ हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया: अल्लाह तआला को सब जगहों से जियादह महबूब मसाजिद हैं, और सबसे जियादह नापसंद जगहें बाजार हैं.(मुस्लिम)

◈ हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : सुब्ह शाम मस्जिद जाना अल्लाह ताला के रास्ते में जिहाद करने में दाखिल है. (मुन्तखब अहादीष).

◈ हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : मस्जिद हर मुत्तकी का घर है,और अल्लाह तालाने अपने जिम्मे लिया है के जिसका घर मस्जिद हो उसे राहत दुंगा, उस पर रहमत करुंगा पुलसिरात का रास्ता आसान करदुंगा,अपनी रज़ा नसीब करुंगा, और उसे जन्नत अता करुंगा.(तबरानी)

◈ हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जब तुम किसी को बकषरत मस्जिद में आनेवाला देखो,तो उसके इमानदार होने की गवाही दो.(तिरमिज़ी शरीफ)

◈ हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो लोग कषरत से मस्जिदों मे जमा रेहते हैं वोह मस्जिदों के खुंटे हैं,फरिश्ते उनके साथ बेठते हैं,अगर वोह मस्जिदों मे मौजुद न हों तो फरिश्ते उन्हें तलाश करते हैं,अगर वोह बीमार होजायें तो फरिश्ते उनकी इयादत करते हैं,अगर वोह किसी जरुरत के लिये जायें तो फरिश्ते उनकी मदद करते हैं.

◈ हज़रत अनस रदि. हुज़ूर ﷺ से हक ताला शानहु का ये इरशाद नकल फरमाते हैं : में किसी जगह अज़ाब भेजने का इरादा करता हुं, मगर वहां ऐसे लोगों को देखता हुं,जो मस्जिदों को आबाद करते हैं अल्लाह के वास्ते आपस में मोहब्बत रखते हैं,आखरी रात मे इस्तिग्फार करते हैं,तो अज़ाब को मौकूफ कर देता हुं.(दुर्रे मंषुर)

◈ ऐक हदीष में है : हक ताला शानहु कयामत के दिन इरशाद फरमायेंगे के मेरे पड़ोसी कहां हैं,फरिश्ते अर्ज़ करेंगे के आपके पड़ोसी कौन ! इरशाद होगा के मस्जिदों को आबाद करने वाले. (फज़ाइले नमाज़)

◈ ऐक हदीष मे इरशाद है : कयामत के दिन जब हर शख्स परेशान हाल होगा और आफताब निहायत तेजी पर होगा,सात आदमी ऐसे होंगे,जो अल्लाहकी रहमत के साये में होंगे,उनमें ऐक वोह शख्स भी होगा जिसका दिल मस्जिद मे अटका रहे,जब किसी जरुरत से बाहर जाऐ तो फिर मस्जिद ही में वापस जाने की ख्वाहिश हो.(जामेउस्सगीर)

दीन पर जब हमने दुनियां को मुकद्दम करदिया
दुन्यवी दर्जे को भी अल्लाह ने कम कर दिया.

इस उम्मत की खास सिफात

'अरब-जल् अल्वाह' के मुतअल्लिक हझरत कतादह रदि.ने कहा है
◈ हझरत मुसा अल.ने कहा यारब ! मैं अल्वाह में लिखा पाता हूं के ऐक बहेतरीन उम्मत होगी,जो हमेशा अच्छी बातों को सिखाती रहेगी और बुरी बातो से रोकती रहेगी. ऐ अल्लाह ! वोह मेरी उम्मत हो तो अल्लाह ने फरमाया के मुसा ! वोह तो अहमद ﷺ की उम्मत होगी.
◈ फिर कहा यारब! उस उम्मत का कुर्आन उनके सीनो में होगा,दिल में देखकर पढते होंगे,हालाँ के उनसे पहेले सब ही लोग अपने कुर्आन पर नजर डालकर पढते हैं. हत्ता के उनका कुर्आन अगर हटा लिया जाये तो फिर उनको कुछ भी याद नहीं. और न वोह कुछ पहेचान सकते हैं. अल्लाह ने उनको हिफझ की ऐसी कुव्वत दी है के किसी उम्मत को नहीं दी गइ. यारब ! वोह मेरी उम्मत हो. कहा ऐ मुसा ! वोह तो अहमद ﷺ की उम्मत है.
◈ फिर कहा यारब ! वोह उम्मत तेरी हर किताब पर इमान लायेगी वोह गुमराहों और काफिरों से किताल करेंगे, हत्ता के काने दज्जाल से भी लडेंगे. इलाही ! वोह मेरी उम्मत हो, अल्लाह ने कहा ऐ मुसा ये अहमद ﷺ की उम्मत होगी.
◈ फिर मुसा अल.ने कहा यारब ! अल्वाह में ऐक ऐसी उम्मत का झिक्र है के उनके अपने नझराने,और सदकात,खुद आपस के लोग ही खा लेंगे,हालाँ के उस उम्मत से पहेले तक की उम्मतों का ये हाल था के, अगर वोह कोइ सदका या नझर पेश करते और वोह कबूल होजाती, तो अल्लाह आग को भेजते, और आग उसे खाजती, और अगर कबूल न होती, तो फिर भी वोह उसको न खाते, बल्के दरिंदे, और परिंदे आकर खाजाते,और अल्लाह ! उनके सदके उनके अमीरों से लेकर,उनके गरिबों को दे देगा.यारब! वोह मेरी उम्मत हो.अल्लाह ने फरमाया वोह तो अहमद ﷺ की उम्मत होगी.
◈ वोह दूसरों की शफाअत भी करेंगे,और उनकी शफ:अत भी दूसरों की तरफ से होगी, ऐ अल्लाह ! वोह मेरी उम्मत हो,तो कहा नहीं ये अहमद ﷺ की उम्मत होगी.
◈ कतादह रह.केहते हैं के मुसा अल.ने फिर अल्वाह देखा,और कहा तरजुमा : काश मैं मुहम्मद ﷺ का सहाबी होता.

हझरत लुकमाने हकीम अल.की नसीहतें

हझरत लुकमान अल. मश्हूर हकीम है, कुर्आने पाक में उनकी नसाइह को झिक्र फरमाया गया है. उन से जो हिकमतें और अपने साहबजादे को नसीहतें नकल की गइ हैं बळी अजीब है.बहोत कसरत से रिवायातमें आइहे मिनजुमला उनके येभीहै के

◈ बेटा उलमा की मजलिस में कसरत से बेठा करो और होकमा की बात अेहतेमाम से सुना करो, अल्लाह जल्ले शानहु हिकमत के नूर से मुर्दा दिलको ऐसा जिंदा फरमाते हैं.जैसा के मुर्दा जमीन जोरदार बारिश से जिंदा होती है.

◈ बेटा नेक अमल अल्लाह जल्ले शानहु के साथ यकीन बगैर नहीं हो सकता, जिसका यकीन जइफ होगा उसका अमल भी सुस्त होगा.

◈ बेटा अल्लाह जल्ले शानहु से ऐसी तरह उम्मीद रखो के उसके अजाब से बेखौफ न होजाओ और अैसी तरह उसके अजाब से खौफ करो के उसकी रहमत से नाउम्मीद न होजाओ.

◈ बेटा जब शैतान तुजे किसी शक में मुब्तेला करे, तो उसको यकीन के साथ मग्लूब कर और जब वोह तुजे अमल में सुस्ती करने की तरफ लेजाऐ तो तू कब्र और कयामत की याद से उस पर गल्बा हासिल कर और जब दुनिया में रग्बत(या यहां की तकलीफ)के खौफ के रास्ते से वोह तेरेपास आये तो तू उसको केहदे के दुनिया बहरहाल छुटने वाली चीज है

◈ बेटा तौबह करने में देर न करो के मौत का कोइ वक्त मुकर्रर नहीं,वोह दफ्अतन आजाती है.

◈ बेटा नेक लोगो के पास अपनी नशिश्त रखवा करो के उनके पास बेठने से नेकी हासिल कर सकोगे और उनपर किसी वक्त अल्लाह की रहमते खास्सा नाझिल हुइ तो उसमें से तुमको भी कुछ न कुछ जरूर मिलेगा.(के जब बारिश उतरती है तो उस मकान के सब हिस्सो में पहोंचती है.)

◈ और अपने आपको बुरे लोगों से दूर रखो के उनके पास बेठने से किसी खेरकी तो उम्मीद नहीं और उनपर किसी वक्त अझाब नाझिल हुवा तो उसका असर तुम तक पहोंच जाऐगा.

◆ बेटा तुम जिसदिन से दुनिया में आये हो, हर दिन आखेरत के करीब होते जारहे हो और दुनिया से पुश्त फेरते आरहे हो.पस वोह घर जिसकी तरफ तुम रोजाना चल रहे हो वोह बहोत करीब है, उस घर से जिस से हरदिन दूर होते जारहे हो.

◆ बेटा कर्ज से अपने आप को महफूज़ रखो के ये दिनकी जिल्लत और रात का गम है.

◆ बेटा जनाज़े में ऐहतेमाम से शिर्कत किया करो और तकरीबात में शिर्कत से गुरेज किया करो इसलिये के जनाज़ह आखेरत की याद ताजह करता है और तकरीबात दुनिया की तरफ मश्गूल करती है.

◆ बेटा जब मेअदा भरजाता है तो फिकर सो जाती है और हिक. मत गूंगी होजाती है और आज़ा इबादत से सुस्त पड़ जाते हैं.

◆ बेटा नमाज़ में कल्ब की,मजलिस में हाथ की और दस्तरख्वान पर पेट की हिफाज़त कर.

मरते वक्त की आखरी छे नसीहतें

◆ दुनिया में अपने आप को फकत उत्नाही मश्गुल रखना जित्नी जिंदगी बाकी है.(और वोह आखेरत के मुकाब्ले में कुछ भी नहीं.)

◆ हकतआला शानहु की तरफ जित्नी तुम्हें ऐहतियाज है उत्नी ही उसकी इबादत करना.(और जहिर है के आदमी हर चीज में उसका मोहताज है)

◆ आखेरत के लिये उस मिकदार के मुवाफिक तैयारी करना, जित्नी मिकदार वहां कयाम का इरादा हो.

◆ जबतक तुम्हें जहन्नम से खलासी का यकीन न होजाये, उस वक्त तक उससे खलासी की कोशिश करते रेहना.

◆ गुनाहोंपर इत्नी जुर्अत करना जित्ना जहन्नम की आग में जलने का होस्ला और हिम्मत हो.

◆ जब कोइ गुनाह करना चाहो तो ऐसी जगा तलाश करलेना जहां हकतआला शानहु और उसके फरिश्ते न देखे.

इल्म ऐक ऐसी दाऐमी इज़्ज़त है, जिस में ज़िल्लत का नामो निशान नहीं

लेकिन ऐसी ज़िल्लत से हासिल होता है, जिस में इज़्ज़त का नामो निशान नहीं

काम्याबी के यकीनी अस्बाब

मोहतरम बुज़ुर्गो दोस्तो अज़ीज़ो अल्लाह जल्ले शानहू ने इन्सान को दुनिया में सब से ज़ियादह अशरफ और सब से ज़ियादह कीमती बनाया है, हरचीज़ फना के लिये, हर चीज़ टूटने के लिये, लेकिन इन्सान को अल्लाह ने हमेंशा के लिये बनाया है, ये अपने बनने के ऐतेबार से तो हमेंशह से नहीं है, लेकिन रेहने के अेतेबार से हमेंशा के लिये है,हमेंशा की जन्नत या हमेंशा की जहन्नम.

ये इन्सान वक्ती नहीं है के ये खा–पी कर और अपनी ज़रूरतें पूरी कर के दुनिया में खतम होजाये,और उसका वुजूद बाकी न रहे, बल्के इन्सान दुन्या के अंदर आखेरत को बनाने के लिये भेजा गया है यहां से उसे दूसरे आलम में मुन्तकिल होना है इसी पर हमारा इमान है और इसीपर हमारा यकीन है,के मरना है खुदा के सामने हाज़री दे कर हिसाब देना है,तो दुनिया में इन्सान खतम होजाने के लिये नहीं है, काम्याब करने के लिये बनाया है, अब काम्याबी का दारोमदार अल्लाह ने इमान के साथ मशरूत किया है,बगैर उसकी ज़ात को पेहचाने हुऐ इन्सान किसी लाइन से काम्याबी हासिल कर ले,खुदा की कसम नाकामी के अलावह और हमेंशह की नाकामी के अलावह कोइ रास्ता नहीं है.

अल्लाह ने हवा और पानी ये दो चीजें अेसी बनाइ है के हर अकलमंद ये केहता है के हवा और पानी के बगैर गुज़ारा नहीं हो सकता लेकिन ये मुमकिन है के हवा और पानी के बगैर ये जि ले, मगर ये मुमकिन नहीं के इमान और अमले सालेह के बगैर काम्याब होजाये,इसका कोइ इमकान नहीं है,इसलिये अंबिया अल. को हर ज़माने में इन्सानो की काम्याबी के लिये ऐक मेहनत और ऐक कल्मा देकर भेजा,तमाम अंबिया अल.की ये मुश्तरेकह बुन्याद है के अंबिया अल.अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ाते आली की तरफ इन्सान के रुख को अस्बाब से इमान की तरफ,दुनिया से आखेरत की तरफ,और चीज़ों से आमाल की तरफ फैरने के लिये भेजे जाते हैं अंबिया अल.आकर इन्सान को अपनी मेहनत का मेदान बनाते के कुलूब अल्लाह के गैर की तरफ मुतवज्जेह होते हैं, और कुलूब अल्लाह की ज़ात से फिरे होते हैं.

अपने बनानेवाले को,अपने पैदा करने वाले को ये इन्सान भूल जाता है तो ये जिंदगी की हर लाइनमें,ताजिर है तो तिजारतमें,ये मुलाजिम है तो मुलाजेमत में,हाकिम है तो हुकूमत में,जमीनदार है तो काश्त-कारी में,ये दुनिया की जिस लाइनमें भी होता है,जब अल्लाह को नहीं पेहचानता और अपने बनाने वाले को नहीं जानता, तो ये दुनिया के किसी भी शोबे में अल्लाह के हुकम पर चलना तो दूर की बात है, ये अल्लाह को भूलकर,ये अल्लाह के अहकामात को तोड़कर चलता है, हर हुकम अल्लाह का इस बुन्यादपर तुटता है के ये अल्लाहताला को पहेचानता नही और अपने बनाने वाले को जानता नहीं है. अंबिया अल. आकर के इस महेनत को करते थे के उनका रुख, अल्लाह की झाते आली की तरफ फिर जावे.

इसलिये तमाम अंबिया अल. की बुन्यादी महेनत वोह कल्मा 'ला इला-ह इल्लल्लाह' के जबतक ये कल्मा दिल का कल्मा नहीं बनेगा और जबतक दिल का रुख सही नहीं होगा,और जबतक दिल से अल्लाह का गैर नही निकलेगा,उस वक्त तक कोइ अमल नही बन सकता. और जबतक अमल नही बनेंगे काम्याब नही होंगे.

अल्लाह ने जितने भी वादे किये हैं वोह तमाम वादे आमाल के साथ है,लेकिन उन अमलोंपर अल्लाहके वादे तब पूरेहोंगे जब अल्लाह के वादों का उन अमलो पर पूरा होने का यकीन होगा,अल्लाह के वादों का यकीन नही है तो फिर अमल के करलेने से भी वादे पूरे नहीं होते अमल के इल्म पर भी वादे पूरे नही होते.

बगैर इमान के न आमालपर अज्र मिल सकता है,न बगैर इमान के पूरादीन जिंदगीयो में आसकता है.पूरा दीन जिंदगी में आनेकेलिये और इस दीन से पूरी काम्याबी लेने के लिये ऐक ही शर्त है और ऐक ही रास्ता है के अल्लाह के वादों का यकीन सीखा जाये, इमान को, इमानकी हकीकतों के साथ हासिल कीयाजाऐ.दीन जिंदगी में यकीन के रास्ते से आयेगा, मालूमात के रास्ते से नहीं आयेगा. और यकीन दअवत से हासिल होगा.दअवत का रास्ता है यकीन का पैदा करना.

अल्लाह की झाते आली से बराहेरास्त फाइदा हासिल करने के लिऐ काओनात का यकीन निकालना शर्त है.काओनात के यकीन के साथ अल्लाह के खझाने से फाइदा उठानेका कोइ रास्ता नहीं.यकीन सबसे पहेली शर्त है, क्यूँ के बगैर यकीन के वादे पूरे नहीं होते.

जब दीन से वादे पूरेहोते नजर नहीं आते,तो बावजूद दीन का इल्म होने के दीन निगाहों में गीरीहुइ चीज, और जेहनी तौरपर हल्की चीझ,और माहोल के अंदर रस्मी चीज बन जाता है.जब इमान नहीं होता तो अमल के करने की बोहत सी वुजूहात होती है.

जैसे अमल करेगा हालात की वजह से,
या अमल करेगा आदत की वजह से,
या ख्वाहिश की वजह से,
या माहोल की वजह से,
या सियासत की वजह से.

इन वुजूहात की वजह से अमल करना दीन नहीं है.बल्के दीन के साथ खैल है दीनका तकाजा येहै के उसकेअंदर अल्लाह के हुक्मों को पूरा करके दुनिया और आखेरत की कामयाबी का यकीन हो यानी अपने दीन से उसे, कामयाबी का यकीन हो. ये अलामत है इमान की.इसलिए सब से पहेले अंबिया अल.को जो दअवत दी गइ और जो कल्मा देकर भेजा गया वोह कल्मा'ला इला-ह इल्लल्लाह' है. शरीअत तो हर नबी को बादमें मिली, सबसे पहेले हर नबीने कल्मे की दअवत दी.

जब नबी जाते थे तो दअवत भी उनके साथ जाती थी.
जब दअवत गइ तो यकीन बिगडे.
और जब यकीन बिगडे तो आमाल बिगडे.

आमाल के बिगडने की वजह से यकीन,आमाल से हटकर अस्बाब पर आया,अब अस्बाब के तकाजे की वजह से,आमाल बिल्कुल छोड दिये.जब दीनसे कामयाबी का यकीन नहीं रेहता,तब दीन जिंदगीयो से निकल जाया करता हे यानि यकीन कया गया? दीन को साथ लेगया.इसलिए कल्मे की दअवत से यकीन था,और यकीन से दिन था.यकीन होगा तो दीन आजायेगा,यकीन यानि इमान.दीन यानी इस्लाम.

तो इमान के बनाने का जो सबसे बडा यकीनी सबब है वोह है दअवते इलल्लाह.इसलिये जबतक ये कल्मा दअवतमें नहीं आयेगा उस वकत तक कल्मे की हकीकत का हासिल करना मुश्किल है. इसलिये के महेनत में अस्बाब आये हुये हैं, दिलो में अस्बाब का यकीन उतरा हुवा है.जोचीज महेनत में आयेगी,वोह चीज यकीन में

आयेगी.जो चीज दअवत में आयेगी,वोह चीज यकीन में आयेगी.जो चीज भी इन्सान की समज में आती है,वोह उस लाइन के मुजाहिदे से समज में आती है.और जो चीज समज में आयेगी तो येही समज यकीन में तब्दील होजायेगी.

लेकिन कोइ भी चीज जब समज में आनी शुरु होती है,तो उसी चीज का शक् भी आना शुरु होगा ये अलामत है यकीन के आनेकी पहेले समज और शक का मुकाबला होगा. अब जितनी जियादह कुर्बानियों के साथ मुजाहेदा किया जायेगा,शक दूर होता जायेगा और समज में आइ हुइ बात यकीन में तब्दील होती रहेगी.

अगर कल्मा 'ला इला–ह इल्लल्लाह' की दअवत और उस की लाइन का मुजाहेदा नहींहै.तो 'ला इला-ह इल्लल्लाह' के अल्फाज पर ही इक्तेफा करेंगे,अगर जुबानपर है तो बोल है.
कानो में है तो अवाज है.
दिमाग में है तो मफहूम है.
किताबो में है तो हुरुफ् है.
ये कल्मा यकीन के साथ जब होगा, जब ये दिल के अंदर दाखिल हो,जब ये इमान दिल का इमान बनेगा,तब ये इमान तकवा ला-ऐगा,इमान के असरात आजापर पडेंगे,उसकी आंख,जुबान,कान हाथ, पैर इमान के ऐतेबार से हरकत करेंगे.

जब उसके दिल में यकीन नहीं होगा तो उसके आजा बावुजुद हराम का इल्म होने के हराम से न रुक पायेंगे,ये बात नहीं है के उम्मत को हराम का इल्म नहीं है.पर यकीन न होने की वजह से उसके अंदर हराम से बचने की ताकत नहीं होगी.इमान होने की अलामत ही येहै के इमान उसे हराम से रोक दे,इमान जर्फ(बर्तन) है, और अहकामात मजरुफ (बरतन में रखीजाने वाली चीज) जब बरतन होगा तो चीज जाऐ नहीं होगी, अगर जर्फ यानी इमान से गफ्लत है तो बगैर बरतन यानी इमान के,अहकामात से फाइदा हासिल नहीं हो सकता.

इसलिये बुन्य ी तौरपर सब से पहेले सहाबा.रदि.ने इमान सीखा है. कुर्आन सी..ने से पहेले. जब इमान सीखा तो हुकम किताबों मे नहीं आया,बल्के अमल में आया.शरीअत के निफाज़ का सबसे बडा सबब,हर इमानवाले का अपना यकीन है,यानि हर

इमान वाले पर उस का निगरां उस का इमान है. के मेरा अल्लाह मुज को देख रहा है. इल्म तो रेहबरी करेगा. और अमल यकीन करवाऐगा.इल्म रेहबरी करेगा.ये हलाल है.ये हराम है.ये जाइझ है. ये नाजाइझ है और ये सुन्नत है.ये बिदअत है.ये शिर्क है.ये कुफ्र है. लेकिन उसके मुताबिक चलाऐगा कौन ? और हराम से कोन बचा-ऐगा ? युं कहये क वाह तो अंदर की ताकत यकीन ही है. उसके अलावह कोइ कुव्वत नहीं है जो उसके अंदर शरइ अहकाम को नाफिझ करा सके.

हुझूर ﷺ ने अपने सहावा रदी.को इमान सिखलाया था.ये इमान इमान की दअवत से बनता है.लेकिन हुवा ये के इमान की दअवत इमान वालोंमें से निकल गइ. इस ख्याल से के हमतो हैही इमान वाले कल्मे की दअवत तो दूसरों के लिये है.जब के अल्लाह तआला फरमा रहे हैं. 'इमानवालो इमान लाओ, जैसा सहाबा रदि. इमान लाये हैं'

हम अपने इमान से इसलिये मुत्मइन है के हम अपने आपको गैरों के मुकाबले देख रहे हैं, हालाँ के हमें इमान की अल्लाह की तरफ से जो दअवत दीगइ है वोह सहाबा रदि.को नमूना बनाकर के 'आमिनु कमा आमनन्नास' के इमान लाओ जैसा सहाबा रदि. इमान लाये. तो ऐसी मददें, ऐसी नुस्रतें, और ऐसे वादे पूरे होंगे. जो वादे अल्लाह ने सहाबा रदि.के साथ पूरे किये हैं.फिर जो इमानो यकीन इस केफियत के साथ बनेगा,उसपर अल्लाह तआला अपने वादों को पूरा फरमाऐंगे,कयूँ के अल्लाह के वादे उसके हुक्मों के साथ है और अल्लाह की कुदरत वादों के साथ है.

अल्लाह की कुदरत अस्बाब के साथ नहीं है,अस्बाब तो कुदरत से बनेहुअे है.अल्लाह ने अस्बाब बनाकर अपनी कुदरत में रखे हुऐ है, अल्लाह की कुदरत अस्बाब के साथ नहीं है,के जैसे इस वकत अस्बाब बनाकर लोग दुआयें मांगते हैं.ताजिर के जहेन में है के दुकान बनानां मेरे जिम्मे,उसमें काम्याबी अल्लाह देंगे,जमीनदारों के जहनमे है के जमीन बनाना हमारे जिम्मे है,उसमें काम्याबी अल्लाह देंगे.डॉकटर के जहेनमें है के दवा बनाना और इलाज करना मेरे जिम्मे है, सिहहत और शिफा अल्लाह देंगे. हरगीज ये रास्ते काम्यावी के नहीं है, अल्लाह तआला ने जितने अस्बाब बनाये हैं

वोह इमान वालों के इम्तेहान के लिये है, और गैरों के इत्मिनान के लिए है. अगर दुनिया में कोइ सबब न होता, तब भी इमान वाला केहता के,हमारी जरुरतों को अल्लाह पूरा करेंगे के पालने वाली झात सिर्फ अल्लाह ही की है.

अल्लाह रब्बुल इझ्झत ने असबाब बनाऐ हैं, ये सारे असबाब कुदरत से बने हैं,पर कुदरत अपनी झात में रखवी है.इसलिए ये बात नहीं है के,असबाब बनाना हमारा काम है,और उस में कामयाबी देना अल्लाह का काम.बल्के अल्लाहके हुक्मों को पूराकरना हमारे जिम्मे और कामयाब करना अल्लाह के जिम्मे, अल्लाह असबाब दे या न दे उनकी मरजी यानी अल्लाह के कामयाब करने के नाते अल्लाह के अहकमात हैं 'इय्या-क नअबुदु व इय्या-क नस्तइन'

हुझूर ﷺ ने अपने सहाबा को वोह यकीन सिखलाया था,जिस यकीन की बुन्यादपर उनका अल्लाहके साथ गुमान अल्लाह के वादों के अेतेबार से था. के अल्लाह का वादा हमारे साथ ये है. अब सहाबा रदि. को यकीनी असबाब सिखला दिये गये.कया सिखलाया? के जो शख्स पांचो नमाझों को ऐहतेमाम से पढेगा तो अल्लाह उसकी रिझक की तंगी दूर कर देंगे,उसकी बीमारियों को दूर करेंगे,उसको तंदूरस्ती अता फरमाएँगे,उस के चेहरे को नूरानी बना देंगे.या जिस शख्स के घर में सूरे वाकेअह की तिलावत होगी तो उस घरमें फाका नहीं आयेगा,या जो शख्स अपने हाथों से सदकह करेगा, उसकी बीमारी दूर हो जायेगी, सत्तर बलाओं से और मुसीबतों से महफूझ रहेगा.या जो शख्स सुब्ह शाम ये दुआ पढले 'अल्लाहुम्म अन्त रब्बी (पूरी दुआ सफा न.१३ पर) तो उसपर कोइ मुसीबत नहीं आयेगी.

हझरत अबू दरदाअ रदि.को तीन सहाबा आकर केहते हैं आपका मकान जल गया,लेकिन हझरत अबू दरदाअ रदि.को यकीन है के मैं घर से दुआ पढकर चला था,और इस दुआ के पढने पर अल्लाह ने वादा किया हुवा है,तो फिर नुकसान कैसे हो सकता है.कयूँ के वादा खिलाफी मोहताजगी है, और मोहताज खालिक नहीं हो सकता, मख्लूक हरघडी,हरआन मोहताज है,अल्लाह तो अपने बंदे के गुमान के साथ है

इमान, तो लुगतन केहते ही इसको है के अल्लाह की खबरों को मुहम्मद ﷺ के भरोसे पर यकीनी मानना.'ला इला-ह इल्लल्लाह

इमान की मजलिसें कइम होती थी.हरआन हर लम्हा हर मजलिस की बुन्याद इन ही तजकेरों को करना,या तो हम इस की दअवत दे रहे हों, या इन ही तजकेरों को सोच रहे हों• इसलिये के महेनत में अरबाब आये हुये हैं, दिलो में अरबाब का यकीन उतरा हुवा है. इस लिये के जो चीज महेनत में आयेगी,वोह चीज यकीन में आयेगी.जो चीज दअवत में आयेगी वोह चीज यकीन में आयेगी,इसलिऐ ये गलत फेहमी है के हम अरबाब बनाये. और फिर अल्लाह काम्याब करेंगे. अल्लाह तो अरबाब बनानेपर उसको काम्याब करेंगे,जिसको अल्लाह ने अहकामात नहीं दिऐ• और उन्हें भी उनके अरबाब में तभी तक काम्याब करेंगे,जबतक दुनिया में बसनेवाले मुसलमानो में इमान की दअवत नहीं आजाती.

जिसदिन मुसलमानो में दअवते हक आजायेगी उस दिन अल्लाह बातिल को नाकाम करदेंगे ये बात हरगीज नहींहै के हम अल्लाहके सामने अरबाब बनाकर पेश करे, फिर दुआ मांगे के ऐ अल्लाह तू इस सबब में काम्याबी डाल दे.

इसलिये बोहत ठंडे दिमाग से सोचो,के अल्लाह के सामने अरबाब बनाकर दुआयें मांगनी है या आमाल बनाकर पेश करके दुआ मांगनी है.दुआ और अरबाब का कोइ जोड नहीं है.गार के अंदर जो लोग फंस गऐथे और चट्टानो ने रास्ता बंद करदिया था,उनमें से हरऐक ने अपना अमल पेश किया, उस में इबादत का कोइ अमल नहीं था, ऐक का अमल अख्लाक का है दूसरे का अमल मामलात का है,तीसरे का अमल मुआशरत का है, तीनों ने अपना अमल पेश किया.सबब बना कर पेश नहीं किया-के कोइ क्रेन बनाकर पेश करते के उस पथ्थर को उठा दे बल्के अमल पेश किया के उन ही अमलों पर अल्लाह ने बगैर किसी जाहिरी थक्ल के,बराहे रास्त अपनी कुदरत से चट्टानों को हटाया क्यूंके जब कुदरत साथ होती है तो अल्लाह का अम्र बराहे रास्त आता है, जैसे हझरत इब्राहीम अल.के लिये किया,के आग को बराहे रास्त हुकम दिया के तू सलामती वाली बनजाये, ये नहीं के अल्लाह ने पानी भेजा हो·

जो अरबाब अल्लाह ने खुद बनाऐ हैं. वोह खुद अपने बनाये हुऐ अरबाब के भी पाबंद नहीं. अल्लाह तो बराहे रास्त अपने हुकमों को इस्तेमाल करते हैं,जैसे फिरऔन के खाने और पानी पर बराहेरास्त

मेंढक, और खून का अज़ाब इस्तेमाल किया, हज़रत सालेह अल.की कौमके लिये पहाडीपर ऊंटनी का अज़ाब इस्तेमाल किया.हज़रत आदम अल.की पस्ली पर हव्वा अल. का अज़ाब इस्तेमाल किया.यकीन वाला अपने और अल्लाह के दरम्यान अस्बाब नहीं रखता.इब्राहीम अल.ने ये नहीं किया के हज़रत जिब्राइल अल.या हवा,या समंदर के फरिश्ते के ज़रिये मेरी मदद फरमा.बल्के जिब्राइल अल.उन फरिश्तों के साथ आये तो उन सबबोंका भी इन्कार करदिया,और ये इम्तेहान था हज़रत इब्राहीम अल.के इमान का. इसलिये जब तक अल्लाह का गैर हमारे दिलों से निकल नहीं जाता,उस वक्त तक अल्लाह की कुदरत हमारे साथ नहीं हो सकती.अस्बाब का साथ होना ये तो इम्तेहान है. के अस्बाब का मिल जाना भी इम्तेहान है, और अस्बाब से काम बन जाना भी इम्तेहान. येभी नहीं के इम्तेहान के बाद अस्बाब से काम बनते रहेंगे मुसाअल.के पेटमें दर्दहुवा. अल्लाह से कहा तो,अल्लाह ने रेहान इस्तेमाल करने के लिये कहा.दर्द चला गया.फिर कुछ दिनों के बाद अल्लाह ने दर्द भेजा पेटमें.

हम ये समजते हैं के बिमारी हमारे अंदर पैदा होती है,और शिफा अल्लाह भेजते हैं. भूख तो मेरे अंदर पैदा होती है,और खाना अल्लाह भेजते हैं. खौफ तो मेरे अंदर पैदा होता है,और अमन अल्लाह भेजते हैं.ये बात नहीं है जिस तरह अल्लाह के यहां शिफा के खज़ाने हैं,इसी तरह बीमारियों के भी खज़ाने हैं.खाने के खज़ाने हैं,इसीतरह भूख के भी खज़ाने हैं, तो मुसा अल. के पेटमें दर्द भेजा और कहा के रैहान इस्तेमाल करो. इस्तेमाल किया तो दर्द चला गया. क्या हुवा ? ऐक सबब तजरुबे में आया,किस के तजरुबे में आया? नबी के तजरुबे में आया, के रेहान से पेट का दर्द चला जाता है, अल्लाह तो इम्तेहान के लिये,अपनी कुदरत से, सबब में काम्याबी डालता है.

अभी हम कुदरत को अस्बाब में समज रहे हैं.कुदरत अस्बाब में नहीं बल्के अल्लाह की ज़ातमें है. हमारे तजरुबात में अस्बाब आते हैं तो हम उस अस्बाब की तरफ चलते हैं,और कुदरत हमारे खिलाफ होती है. अगर काम बनगऐ तो ये अल्लाह की रज़ा की दलील नहीं है.के अल्लाह हम से राज़ी है,बल्के अल्लाह नाराज़ होकर काम जियादह बनाते हैं.इसी लिऐ फाको फाका में सहाबा मिलेंगे और खाने पीने में बातिल मिलेगा,क्यूँके मानने वालों के काम अम्रूस में बनानेका वादा

किया है. यहां दुनिया में वोह इमान वाले परेशान होंगे, जिन का इमान इन्तीहाइ कमजोर है,वरना इमान और आमाले सालेहापर वादा किया है,दुनिया की जिंदगी भी खूश्गवार बनायेंगे.

अब दूसरीवार मुसा अल. चले रेहान की तरफ,खुद अल्लाह ने ये दवा बतलाइ थी,रेहान इस्तेमाल किया,लेकिन शिफा न मिली, तो अब परेशान,के शिफा कयूँ नहीं मिली,तो अल्लाह ने फरमाया के पहेले तुम हमारी तरफ आये थे, हमारे हुकम की वजह से तुम रेहान की तरफ गये थे,इसलिये अस्बाब अल्लाह के गैर की तरफ लेजायेंगे और लेजा रहे हैं, आमाल हुकम की तरफ लेजायेंगे के नमाझ अदा करके अल्लाह से मांगो,हुकम पूरा कर के अल्लाह से मांगो,अल्लाहने इत्मिनान के लिये अहकामात दिये हैं,और अस्बाब इम्तेहान के लिये, अल्लाह अस्बाब देकर ये देखना चाहते हैं के अस्बाब के अहकामात को पूरा करने से काम्याबी का यकीन है,या अस्बाब का यकीन है.

दुनियां को अल्लाह ने अस्बाब से भर दिया ताके अस्बाब का इम्तेहान लिया जाये,जैसे हझरत इब्राहीम अल.का इम्तेहान लिया आग में डाला जाना है. हझरत इब्राहीम अल.को मदद की जरुरत है, बळा सबब आया, हझरत जिब्रइल अल. के उन से बळी कोइ मख्लूक नहीं,किसी के कद से,किसी के बदन से,किसी की लंबाइ से,चोडाइ से कुछ नहीं बनता,जो अल्लाह का गैर है वोह मख्लूक है,और मख्लूक कभी खालिक नहीं बन सकती.

जिनके यकीन बन जाते हैं वोह अपने और अल्लाह के दरम्यान अस्बाब नहीं रखते, उनकी निगाह अल्लाह पर बराहे रास्त होती है, उनकी मदद भी अल्लाह बराहे रास्त करते हैं, हझरत इब्राहीम अल.ने कोइ सबब बीच में न रख्खा तो अल्लाह ने भी अपने और आगके दरम्यान कोइ सबब नहीं रख्खा,पानी को हवा को,किसी फरिश्ते को,किसी किसम का केमीकल आग बुजाने के लिये इस्ते माल नहीं किया,बल्के अल्लाह ने अपना अम्र बराहे रास्त इस्तेमाल किया.

अस्बाब की बेडीयों से,और अस्बाब के गलत यकीन से इमान की दअवत के बगैर नहीं निकला जा सकता, हर वकत मुकाबला होगा आमाल और अस्बाब का,अस्बाब और आमाल के मुकाबले में

यकीनवाले काम्याब होंगे·और यकीन दअवत से बनेगा·कल्मे की दअवत जाहीर के खिलाफ है. जितना जाहिर के खिलाफ बोला जायेगा उतना यकीन बनेगा.

तमाम नबियों के साथ जो वाकेआत हुऐ उस में येही मिलेगा के यकीन वालों के लिये पानी में रास्ते,और न मानने वालों के लिये वो पानी हलाकत का सबब· अस्बाब का यकीन निकला हुवा होगा तो अल्लाह ने जितने हलाकत के अस्बाब बनाये हैं,वोह सारेके सारे इमान वालोंके लिये राहत में इस्तेमाल होंगे· और इमान वालों के राहत के अस्बाब बातिल के लिये हलाकत में इस्तेमाल होंगे· के अल्लाह तआला यकीन वालों के लिये अपनी कुदरत का इस्तेमाल करके अस्बाब की शकलों को बदल देते हैं के,लाठी को सांप बना देते हैं,आग को बाग बना देते हैं·अल्लाह रब्बुल इझ्झत ने अस्बाब बनाकर इनसानों के हाथमें नहिं दिये,बल्के अल्लाहने अस्बाब बना कर अपनी कुदरत में रख्खे हैं· इन अस्बाब से इमान वाले फाइदा उठा सकेंगे·अगर इमान नहीं है तो अल्लाह के खझाने से फाइदा नहीं उठाया जा सकता.

अल्लाह की झात से फाइदा उठाने के लिये काऐनात का यकीन निकालना शर्त हे,अस्बाब का यकीन निकालना शर्त हैं·ये बात नहीं हैं के·अल्लाह ने किसी को दुकान देदी तो, उसे कमाने की कुदरत देदी· या किसी को जमीन देदी, तो उसे उगाने की कुदरत देदी या बीवी देदी तो,उसे बच्चा पैदा करने की कुदरत देदी·

कितने बे औलाद हैं जिन की बीवी होते हुऐ बच्चे नहीं है·

कितने हैं जो हथियारो में परेशान है.

कितने हैं जो दवाओं से बीमार है.

कितने हैं जो अस्बाब होते हुऐ भी मोहताज है.

अल्लाह ने कुदरत किसी को नहीं दी·और कुदरत अस्बाब में हे ही नहीं·जो यूँ समजे के अस्बाबमें कुदरत हे,वोह तो दुनियामें अस्बाब बनाऐगा·और जो यकीन करेगा के कुदरत अल्लाह की झात में है वोह अल्लाह की झात से फाइदा उठाने के लिये आमाल बनाऐगा· में अल्लाह की कुदरत से गल्ला लेनेके लिये जमीन बनाउंगा, तो सैलाब आयेगा या सुका पडेगा·औलाद लेनेके लिये बीवी रख्खूं तो बांजही रहेगी.

ऐक है कुदरत का साथ लेना और ऐक है अरबाब का साथ लेनां. अरबाब के साथ लेने में अल्लाह का कोइ वादा नहीं, चाहे तो वकती तौर पर काम बना दे फिर हमेशां हमेशां के लिये नाकाम कर दे. येही बात है के तुममें से जो दुनिया चाहेगा वोह हमेशां हमेशां के लिऐ नाकाम होगा. और जो आखेरत चाहेगा हम उसकी दुनिया बनादेंगे. अल्लाहकी कुदरत अरबाबमें नहीं और हालातका ताल्लुक भी अरबाब से नहीं. तो फिर हमारी सारी महेनत बेकार है. इसलिये बेकार है के कुदरत हमारे खिलाफ है.

कुदरत अरबाब बनाने वाले के साथ नहीं होती. हां लोग येही केहते हैं के तुम पहेले अरबाब बनाओ, फिर तुम अल्लाह से दुआ मांगो. उल्टी बात करतें हैं, अल्लाह को न पहेचानने की वजह से, कुर्आन के खिलाफ, और हदिष के भी खिलाफ है ये बात. सही बात ये है के तुम अल्लाह से मांगो उसके देने के जाब्ते के साथ. अल्लाह के जाब्ते कया हैं ? 'इय्या-क नअबुदु वइय्या-क नस्तइन' ये उसके देने के जाब्ते हैं. 'के में तेरी इबादत करके तुज से लेता हुं'

ऐक इस कल्मे के अल्फाझ है, और ऐक इस कल्मे का इख्लास है. कल्मे की दअवत कल्मे का इख्लास हासिल करने के लिये है. और हदीष ये बता रही है के कल्मे के इख्लास के बगैर हराम से नहीं बचा जा सकता. कल्मे का इख्लास येहै के ये कल्मा इसे हराम से रोक दे. कल्मे का इख्लास कल्मे की दअवत से होगा.

कल्मे की दअवत के बारे में मुसलमानो में आम गलत फेहमी ये है के कल्मे की दअवत तो गैरों के लिये है हम तो हैंही कल्मेवाले हालाँके अल्लाह खुद इमान वालों को इमान लाने का हुकम दे रहे हैं. इमान की दअवत इमान वालों के लिये है, और गैरों को दअवत इस्लाम की है बळी गलत फेहमी ये हुइ के इमान वालों ने इमान की दअवत गैरों के लिये समजी. जबके उनको बनाये थे इमान के दाइ मगर ये बन बेठे मुद्दइ, अब जब इमान का दावा आया तो हर मुसलमान इमान से पूरी तरह मुतमइन होगया. हालाँ के हकीकत येहै के जितना इमान उस के अंदर आता जायेगा, उसी के बकदर ये अपने इमान की तरफ से फिकरमंद होगा, और निफाक का खौफ उस के अंदर बढता जायेगा. और जितना इमान कमजोर होता जायेगा,

उतना ही इमान से बेफिकर,और अलामते निफाक खूबियां बनती जाऐगी-जुठ बोलना खूबी होगी,ख्यानत करनां खूबी होगी,वादा खिलाफी करने वालों को अकलमंद कहा जाऐगा.हझरत हंझला रदि. और हझरत अबू बकर रदि.ने कोइ ऐसा काम नहीं किया था,सिर्फ यकीनकी वोह कैफीयत घर पे न रही-तो उन्हें निफाक का डर होगया.

जब सुबह से शामतक इमाम की दअवत दीजाती थी तो अंदर इस तरह यकीन बना हुआ था, के आदमी गुनाह कर के बेचैन होता था.क्यूँके हुझूर ﷺ ने फरमाया था के जिस आदमी को नेक अमलसे खुशी हो, और बुरा काम होगया हो उसपर गम हो, तो ये उसके इमान की अलामत है. शरीअत हुकम से नहीं चला करती,वोह तो अंदर का यकीन शरीअत का तकाजा करता है,के मेरा रब इस वकत मुज से क्या चाहता है.

अव्वल तो इमान वाले से गुनाह होगा नहीं. अगर होगया तो उसका इमान उसे गुनाह से पाक करवाने के लिये लायेगा. ऐक सहाबी रदि.से झिना होगया.तो अपने आप को लाकर खुद पेश किया. हुझूर ﷺ ने मुंह फेर लिया. आप चाहते थे के बात टलजाये, लेकिन सहाबी रदि.केह रहे हैं के मैंने झिना करलिया ये क्यूँ ऐसा केह रहे हैं ? हालां के उन्हें किसी ने झिना करते हुओ देखा नहीं था.ये उनके अंदर का यकीन ऐसा करा रहा हैं. के यहां पाक होजाउं तो आखेरत से बच जाउं.

इसलिये ऱ्मेकी महेनत से उम्मत को कल्मे की दअवत पर लाना है.ताके इमान की महेनत से वोह यकीन बने,जो अल्लाह के वादों के यकीन पर खडा कर दे, और अल्लाह के अवामिर पर खडा कर दे. और अल्लाह के अवामिर हमारे यकीनी सबब बन जाऐ. इतना इमान सीखनां फर्ज़ है के ये कल्मा हमें असबाब के यकीन से निकाल दे.फिर इमाम की दअवत के साथ,आमाल की दअवत.आखेरत की दअवत, येही हर नबी का तरीका रहा है.

मुसलमानों पर जो हालत आते हैं, तकलीफें, बिमारियां, मुसीबतें,मुकदमे कर्झे वगैरह, इसमें इमान वाला अगर अपने हालात को आमाल से जोडेगा,तो ये हालात उसकी तरबियत

करेंगे, बेइमान हालात को अस्बाब के साथ जोडेगा. क्यूं के उन्हें अस्बाब दिये हैं,और इमान वालो को अहकाम.तो क्या इमान वाले अस्बाब नहीं इख्तीयार करेंगे ? इमान वाले तो सिर्फ हुक्म की बुन्याद पर अस्बाब इख्तीयार करेंगे.और इमान वाला अस्बाब में भी अल्लाह के अहकाम तालाश करेगा.

अपने आप को यकीनी अस्बाब पर लाऐ. यकीनी अस्बाब पर वोह आयेगा जो इमान के हल्के काइम करेंगे.सहाबा रदि.इमानके हल्कों से इमान बनाते थे.उम्मत के उमूम में इमान के हल्के उम्मत के उमूम में आमाल की हकीकत को हासिल करने की फिकरें,ये सब आम होगा तब अल्लाह रब्बुल इज्झत वोह नुस्रतें,वोह बरकतें, वोह रहमतें लायेंगे, जो सहाबा रदि. के दौरे में हुइ.

हुजूर ﷺ ने अपने हर उम्मती को कल्मे की दअवत देने वाला बनाया था,हरऐक जानता था के में उम्मत की हिदायत का जरिया हुं.'तुम इनसानों की नफा रसानी के लिये भेजे गये हो(आलेइमरान क्या है नफा रसानी ? के 'तुम तआरुफ कराते हो अल्लाह का' यानी कल्मे की दअवत देते हो और इन्सानों के अंदर से अस्बाब का यकीन निकालते हो.और उसके साथ ये शर्त लगी हुइ है. के 'खुद अपने अंदर अल्लाह की झात, और सिफात, और रुबूबियत का यकीन रखते हो'.

हिदायत,हिदायत की दुआओं से नहीं,बल्के हिदायत की दुआयें भी कल्मे की दअवत से कबूल होगी.जब उम्मतमेंसे दअवत निकल जायेगी तो उम्मतमें से हिदायत की दुआ कबूल होना बंद होजायेगी क्यूं के कल्मे की दअवत दुआ की कबूलियत के लिये शर्त है.

हमें इमान से गाफिल किया इमान के दावे ने.इमान के दावे नहीं,अल्लाह को इमान की दअवत पसंद है.जो इमान का दावा करेगा उसपर अल्लाह इम्तेहान डालदेंगे.कैसे कहा तुमने के इमान लेआऐ, हालाँ के इमान तुम्हारे दिलो में दाखिल नहीं हुवा.'लम् तुअ मिनु वला किन् कुलू अस्लम्ना' अल्लाह रब्बुल इझ्झत खुद केह रहे हैं,'ये इमान नहिं लाये इस्लाम लाये हैं'.

और जब इमान नहीं होता तो दीन अपना सतह से गिरते गिरते फराइझ पर आजाता है, ये फराइझ कुफ्र और इस्लाम की आड और दीवार है सिर्फ,अगर ये दीवार भी बीच से हटजाऐ तो बंदा कुफ्र

तक पहोंच गया, मुतमइन न होजायें के नमाझ तो हम पढते ही हैं. सिर्फ नमाझ या सारे फराइझ ही सिर्फ दीन नहीं है.फराइझ तो कुफ्र और इसलाम की आळ है सिर्फ.मौलाना यूसुफ साहब रह. फरमाते थे उम्मतमें इमानकी दअवत खतम होगी तो सबसे पहेले मोआशरा मुरतद होगा के नमाझ पढेंगे.शक्लें गैरो की. लिबास गैरों के नमाझ पढेंगे तिजारत गैरो की.नमाझ पढेंगे शादियां गैरों की तो उसने पुरादीन नाम रख्खा है नमाझ का.हालाँके ये आखरी चीज रेहगइ है उसकेपास उसके बाद कुछ नहीं के जिसने नमाझ को हल्का समजा और नमाझ से इनकार कीया उसने कुफ्र किया हां दुकान के मुकाबले में नमाझ को हल्का समजना.

सिर्फ नमाझ के वादों का इन्कार के नमाझ का इन्कार गैर इमान वाला थोडा ही करेगा. इमान वाले पर नमाझ फर्झ है. तो फिर नमाझ का इनकार कौन करेगा ? के नमाझ के इन्कार से मुराद नमाझ के फझाइल से इनकार के नमाझ रोजी कैसे खींच लायेगी? नमाझ से बीमारी कैसे दूर होगी? नमाझ से सिहत की हिफाजत कैसे होगी ? अल्लाह के वादों का इनकार ही कुफ्र है.के अैसे रास्ते पर पळा है के उस का कुफ्र पर पहोंचना यकीनी है.के नमाझ का इनकार और उसको हलका समजना उसे कुफ्र पर पहुंचा देगा.

इसलिए जब कल्मे की दअवत उम्मत से निकल जायेगी तो सबसे पहेले मोआशरा मुरतद होगा.फिर जहन मुरतद होगा फिर कल्ब मुरतद होगा.जब यकीन न होगा तो ये माहोल के अेतेबार से चलेगा और फिर दीन उस जमाने के अेतेबार से होजायेगा.के उसके जैसे हालात होंगे, उसी के बकदर दीन पर चलेगा. तो उस नाकिस दीन पर नाकामी आयेगी. जिस तरह बेदीनी की वजह से नाकामी आती है. हालात आते हैं. इसी तरह की नाकामी, और हालात, नाकिस दीन,अधूरे दीन की वजह से भी आते हैं. और हम नाकिस दीन पर चल रहेहैं.कयूँके हमारा दीन नाकिस है.इसलिये के हमें अपने दीन से काम्याबी का यकीन नहीं है. यकीन बनेगा दअवत से. इमान इमान की महेनत से बनेगा.

आज उम्मतने अमल सीखा,यकीन नहीं सीखा. इसलिये बावजूद अमल के नाकाम है, और बावजूद आमाल के बातिल

गालिब है.बातिल किस को कहेंगे? के बातिल केहते हैं अल्लाह के अवामिर को जिनपर वादे हैं, उन्हें ये काम्याबी का यकीनी सबब न समजे और दुनिया की शक्लों और नकशोंको ये अपना अस्बाब समजे, बातिल जब खुद हमारे अंदर मौजूद है तो कैसे काम्याबी मिले बाहर के बातिल पर.

ये दअवत की महेनत हर उम्मती की जिम्मेदारी है.बगैर कल्मे की महेनत के यकीन नहीं बनेगा,इस उम्मत में अल्लाह ने इस्तेअदाद रख्खी है,क्यूँके अब कोइ नबी नहीं आएगा,बल्के नुबुव्वत वाली महेनत ही अल्लाह ने ऐक ऐक उम्मती के हवाले करदी है.इसलिये अबतक की गुजरीहुइ जिंदगीपर इस्तिग्फार करे के हमने अबतक ये बात नहीं समजी, के हम इन्सानों की हिदायत का जरीया हैं,बल्केजुर्म और तौबह करने की बात हैके में आजतक अपने आपको ताजिर समजता रहा.

नहीं मैंतो नबी का उम्मती हुं और बहेसीयत उम्मती होने के मेरे जिम्मे नुबुव्वत वाला काम है,जितना इस राहमें फिरेंगे,और जितनी दअवत देंगे, अपना यकीन बनेगा और उम्मत सही यकीन और अमल पर आएगी.इसके लिये मौजूदह कुर्बानियो से आगे बढें और हर साल चार चार महीने लगाने की नियतें करे.

(हझरत मौलाना सअद साहब दा.ब.के बयान से माखूझ)

तौबह की हकीकत

शरइ इस्तेलाह में तौबह की सही और मोअतबर होने के लिये तीन शर्तें हैं.ऐक येके जिस गुनाह में फिलहाल मुब्तेला है उसको फौरन तर्क कर दे, दूसरे येके माजी में जो गुनाह हुवा उस पर नादिम हो.तीसरे येके आइन्दह उसे तर्क करने का पुख्तह अझ्म करे और कोइ शरइ फरीझा छोटा हुवा है तो उसे अदा या कजा करने में लगजाऐ और अगर गुनाह हुकूकुल इबादके मुताल्लिक है तो ऐक शर्त येभी है के अगर माली हक है तो उसे लोटा दे और गैर माली हक है तो जिसतरह मुमकिन हो उसे राजि करके उस से माफी हासिल करे.

अहम खत

(हज़रतजी मौलाना मोहम्मद यूसुफ साहब रह.)

अल्लाह रसूल इज्ज़त ने इन्सानों की तमाम काम्याबियों का दारो-मदार इनसान की अंदरुनी माया पर रखा है, काम्याबी और नाकामी इन्सान के अंदर के हालात का नाम है बाहर की चीज़ों के नकशो का नाम कामयाबी और नाकामी नहीं. इज्ज़त और ज़िल्लत, आराम और तकलीफ, सुकून और परेशानी, सिहहत और बीमारी इनसान के अंदर के हालात का नाम है, उन हालात के बनने या बिगड़ने का बाहर के नकशो से ताल्लुक भी नहीं. अल्लाह जल्ले शानहु मुल्को माल के साथ इनसान को जलील करके दिखा दें, और फक्र के नकशे में इज़्ज़त देकर दिखा दे, इनसान की अंदर की माया, उसका यकीन और उसके आमाल है, इन्सान के अंदर का यकीन और अंदर से निकलने वाले अमल अगर ठीक होंगे तो अल्लाह जल्ले शानहु अंदर कम्याबी की हालत पैदा फरमा देंगे ख्वाह चीजों का नकशा कितना ही पस्त हो.

इमान बिल्लाह

अल्लाह जल्ले शानहु तमाम काएनात के हर जर्रे के हर फर्द के खालिक और मालिक हैं, हर चीज को अपनी कुदरत से बनाया है, सब कुछ उनके बनाने से बना है, वोह बनाने वाले हैं, खुद बने नहीं और जो खुद बना हुवा है उस से कुछ बनता नहीं, जो कुछ कुदरत से बना है वोह कुदरत के मातेहत है, हर चीज पर उनका कब्जा है, वोही हर चीज को इस्तेमाल फरमाते हैं, वोह अपनी कुदरत से उन चीजों की शकलों को भी बदल सकते हैं और शकलों को काइम रखकर सिफात को बदल सकते हैं, लकडी को अजदहा बना सकते हैं, और अजदहे को लकड़ी बना सकते हैं.

इसी तरह हर शकल पर ख्वाह मुल्क हो या माल की, बर्फ हो या भांप की उनका ही कब्जा है और वोही तसर्रुफ फरमाते हैं, जहां से इन्सान को तामीर नजर आती है वहां से तखरीब लाकर दिखा दें और जहां से तखरीब नजर आती है वहां से तामीर लाकर दिखा दें. तरबियत का निज़ाम वोही चलाते हैं, सारी चीजों के बगैर रेतपर डालकर पाल दें और सारे साजो सामान में परवरिश बिगाड़ दें.

अल्लाह जल्लेशानहु की ज़ाते आली से ताल्लुक पैदा होजाये और उनकी कुदरत से बराहे रास्त इस्तिफादह हो उसके लिये हज़रत मुहम्मद ﷺ अल्लाह की तरफ से तरीके लेकर आये हैं.जब उनके तरीके जिंदगी में आयेंगे तो अल्लाह जल्लेशानहु हर नक्शे में कामयाबी देकर दिखायेंगे.

इमान और यकीन का नतीजा और उसकी दअवत.

'ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' में अपने यकीन और अपने जज़्बे और अपने तरीके को बदलने का मुतालिबा है. सिर्फ यकीन की तब्दीली पर ही अल्लाह पाक इस ज़मीन और आसमान के कइ गुना जियादह बड़ी जन्नत अता फरमाऐंगे,जिन चीजोमें से यकीन निकलकर अल्लाह की ज़ात में आयेगा,उन सारी चीजों को अल्लाहपाक मुसख्खर फरमा देंगे, उस यकीन को अपने अंदर पैदा करने के लिये ऐक तो इस यकीन की दअवत देनी है,अल्लाह की बड़ाइ समजानी है. उनकी रुबूबियत समजानी है, उनकी कुदरत समजानी है,अंबिया और सहाबा रदि.के वाकेआत सुनाने हैं.खुद तन्हाइयों में बेठकर सोचना है. दिलमें उस यकीन को उतारना है जिसकी मजमे में दअवत दी है. येही हक है और फिर रो-रो कर दुआ मांगनी है के ऐ अल्लाह इस यकीन की हकीकत से नवाज दे.

नमाज़ का अेहतेमाम और उसकी दअवत

अल्लाह जल्ले शानहु की कुदरत से बराहे रास्त फाइदे हासिल करने के लिये नमाज़ का अमल दियागया है.सर से लेकर पैरतक अल्लाह की रज़ावाले मख्सूस तरीके पर.पाबंदियो के साथ अपने को इस्तेमाल करो आंखो का,कानों का,हाथो का.जुबान का और पैरों का इस्तेमाल ठीक हो दिल में अल्लाह का ध्यान हो,अल्लाह का खौफ हो,यकीन हो के नमाज़ में अल्लाह के हुकम के मुताबिक मेरा हर इस्तेमाल तकबीरो तस्बीह,रुकूओ,सुजूद,सारी काऐनात से जियादह इन्आमात दिलाने वाले हैं,इस यकीन के साथ नमाज़ पढकर हाथ फेलाकर मांगाजाऐ तो अल्लाह अपनी कुदरत से हर जरुरत पूरी करेंगे,ऐसी नमाज़ पर अल्लाह पाक गुनाहों को माफ फरमां देंगे,रिज़्क में बरकत भी देंगे,ताअत की तोफीक भी मिलेगी.

अेसी नमाज़ सीखने के लिये दूसरों को खुशूअ और खुज़ूअ वाली नमाज़ की तरगीबो दअवत दीजाये,उसपर आखेरत और दुनिया के नफे समजाऐ जाये.हुज़ूर ﷺ और हज़राते सहाबा रदि.की नमाज़ों को सुनाना.

खुद अपनी नमाज़ को अच्छा करने की मश्क करना.ऐहतेमाम से वुज़ू करना, ध्यान जमाना. कयाम में. सजदे में भी ध्यान कम अज़ कम दीन मरतबा जमाया जाये के अल्लाह मुजे देख रहे हैं.नमाज़ के बाद सोचा जाये के अल्लाह की शानके मुताबिक नमाज़ न हुइ उसपर रोना और केहना के ऐ अल्लाह हमारी नमाज़ कबूल फरमा

इल्म और ज़िक्र

इल्म से मुराद येहै के हम में तहकीक का जज़्बह पैदा होजाये के मेरे अल्लाह मुजसे इसहाल में क्या चाहते हैं?और फिर अल्लाह के ध्यान के साथ अपने आपको उस अमल में लगा देना ये ज़िक्र है जो आदमी दीन सीखने के लिये सफर करता है, उसका ये सफर इबादत में लिखा जाता है.इस मकसद के लिये चलने वालों के पेरों के नीचे सत्तर हजार फरिश्ते अपने पर बिछाते हैं. जमीन और आसमान की सारी मख्लूक उनके लिये दुआऐ मग्फिरत करती है. शैतान पर ऐक आलिम हजार आबिदों से जियादह भारी है.

दूसरो में इल्म का शोक पैदा करने की कोशिश कीजाये,फज़ाइल सुनाऐ जायें,खुद तालीम के हल्को में बेठाजाये,उल्माकी खिदमत में हाजरी दीजाये उसको भी इबादत यकीन कियाजाये,और रो-रोकर मांगाजाये के अल्लाह जल्लेशानहू इल्मकी हकीकत अता फरमां दे

हर अमल में अल्लाह जल्ले शानहु का ध्यान पैदा करने के लिये अल्लाह का ज़िक्र है,जो आदमी अल्लाह को याद करता है अल्लाह उसको याद फरमाते हैं,जबतक आदमी के होंट अल्लाह के ज़िक्र में हिलते रेहते हैं अल्लाह उसके साथ होते हैं, अल्लाह पाक अपनी मोहब्बत और मारेफत अता फरमाते हैं,अल्लाह का ज़िक्र शैतान से हिफाजत का किला है. खुद अल्लाह जल्ले शानहु का ध्यान पैदा करनेकेलिये दूसरों को अल्लाह के ज़िक्रपर आमदह करना,तरगीब देना,खुद. ध्यान जमाना और रो-रोकर दुआ मांगना के ऐ अल्लाह मुजे हकीकत अता फरमा.

इकरामे मुस्लिम

हर मुसलमान बहेसियत रसूलुल्लाह ﷺ का उम्मती होने के इकराम भी करना,हर उम्मतीके आगे बिछजाना,हर शख्श के आगे बिछजाना,हर शख्श के हुक़ूक को अदा करना और अपने हुक़ूक का मुतालिबा न करना, जो आदमी मुसलमान की पर्दापोशी करेगा

अल्लाह उसकी पर्दपोशी फरमाएंगे,जबतक आदमी अपने मुसल-मान भाइ के काम में लगा रेहता है. अल्लाह जल्ले शानहु उस के काम में लगे रेहते हैं. जो अपने हक को माफ करदेगा अल्लाह उसको जन्नत के बीच में महल अता फरमाएंगे,जो अल्लाहके लिये दूसरों के आगे तजल्लुल इख्तियार करेगा अल्लाह उसको रफअतो बुलंदी अता फरमाएंगे.

उसके लिये दूसरो में तरगीब के जरिये इकरामे मुस्लिम का शोक पैदा करना है,मुसलमान की कीमत बतानी है हुझूर ﷺ और सहाबा रदि.के अख्लाक हमदर्दी और इषार के वाकेआत सुनाने हैं खुद उसकी मश्क करनी है और रो–रोकर अल्लाहसे हुझूर ﷺ के अख्लाक की तौफिक मांगनी है.

हुस्ने नियत

हर अमल में अल्लाह की रझा का जझबा हो,किसी अमल से दुनिया की तलब या अपनी हैसियत बनाना मकसूद न हो.अल्लाह की रझा के जझबे से थोळासा अमल भी बहोत इन्आम दिलवाएगा और उसके बगैर बहोत बळेबळे अमल भी गिरिफत का सबब बनेंगे

अपनी नियत को दुरुस्त करने के लिये दूसरो में दअवत के जरिये तस्हीहे नियत का फिक्र और शोक पैदा किया जाये,अपने आप पर अमल से पेहेल और हर अमल के दौरान नियतको दुरुस्त करने की मश्क कीजाये,में अल्लाह को राझी करने के लिये ये अमल कर रहा हुं और अमल की तकमील पर अपनी नियत को नाकिस करार दे कर तौबह और इस्तिग्फार किया जाये और रो रोकर अल्लाह से इख्लास मांगा जाये.

अल्लाह के रास्ते की मेहनत और दुआ

आज उम्मत में किसी हदतक इन्फिरादी आमाल का रिवाज है गो उनकी हकीकत निकली हुइ है हुझूर ﷺ की खत्मे नुबुव्वत के तुफैल पूरी उम्मत को दअवत वाली मेहनत मिली थी, उसके लिये अंबिया अल.वाले तर्ज पर अपने जान माल को जोंक देना और जिन में मेहनत कर रहे हैं उनसे किसी चीज का तालिब न बननां,उसके लिये हिजरत भी करनां और नुसरत भी करनां. जो जमीन वालोंपर रहम करता है,आस्मान वाला उसपर रहम करता है,जो दूसरों का तास्लुक अल्लाह जल्लेशानहु से जोळने के लिये इमान और आमाले

सालेहा की मेहनत करेंगे,अल्लाह जल्लेशानहू उनको सब से पेहले इमान और आमाले सालेहा की हकीकतों से नवाज कर, अपना तास्सुक अता फ़रमायेंगे.

इस रास्ते में अेक सुबह या ऐक शाम का निकलना पूरी दुनिया और जो कुच उसमें है उस सब से बेहतर है,इसमें हर माल के खर्च और अल्लाह के हर झिक्र और तस्बीह और हर नमाझ का सवाब सात लाख गुनां होजाता है. इस रास्ते में मेहनत करने वालों की दुआऐं बनी इसराइल के अंबिया अल.की दुआओं की तरह कबूल होती है यानी जिसतरह उनकी दुआओं पर अल्लाह ने जाहिर के खिलाफ अपनी कुदरत को इस्तेमाल फरमाकर उनको काम्याब फरमाया और बातिल ताकतों को तोळदिया, इसी तरह इस मेहनत के करने वालों की दुआओं पर, अल्लाह जल्ले शानहू जाहिर के खिलाफ अपनी कुदरत के मुजाहिरे फरमाऐंगे और अगर आलमी बुन्याद पर मेहनत की गइ तो तमाम ऐहले आलम के कुलूब में उन की मेहनत के असर से तब्दिलयां लायेंगे.

दीनके दूसरे आमाल की तरह हमें ये मेहनत भी करनी नहीं आती दूसरों को इस मेहनत के लिये आमदह करना है. इस की ऐहमियत और कीमत बतानी है अंबिया अल.और सहाबा रदि. के वाकेआत सुनाने हैं,सहाबा रदि.हर हालमें अल्लाह की राहमें निकले हैं निकाह के वकत और रुख्सती के वकत,घरमें विलादत के मोके पर और वफात के मोकेपर,सर्दी में,गर्मी में,भूक में,फाके में,सिहत में,बीमारी में,कुव्वत में,जोअफ में,जवानी और बुढापे में भी निकले हैं और रोरो–कर अल्लाह से मांगना है के हमें इस आली मेहनत के लिऐ कबूल फरमां ले.

मस्जिदो में करने के काम

इन चीजों से मुनासिबत पैदा करने के लिये हर शख्स से चाहे किसी शोबे से मुतअल्लिक हो,चार माह का मुतालेबा किया जाता है,अपने मशागिल साजो सामान और घरबार से निकल कर इन चीजों की दावत देतेहुऐ और खुद मश्क करते हुऐ मुल्क ब मुल्क,इकलीम ब इकलीम,कौम ब कौम,करया ब करया,फिरेंगे.

हुजूर ﷺ ने हर उम्मती को मस्जिद वाला बनाया था,मस्जिद के कुछ मख्सूस आमाल दिये थे,उन आमाल से मुसलमानों का जिंदगी

में इम्तियाज था, मस्जिद में अल्लाह की बड़ाइ की, इमान की और आखेरत की बातें होती थी,आमाल से जिंदगी बनने की बातें होती थी अमलों के ठीक करने के लिये तालीमें होती थी, इमान और अमले सालेह की दअवत के लिये मुल्कों और इलाको में जानेकी तश्कीलें भी मस्जिदसे ही होती थी,अल्लाह के ज़िक्र की मजलिसें मस्जिदो में होती थी,यहां तआवुन, इषार और हमदर्दियों के आमाल होते थे, हर शख्स हाकिम, महकूम, मालदार,गरीब, ज़ारेअ, मजदूर मस्जिद में आकर जिंदगी सीखता था, और बाहर जाकर अपने–अपने शोबे में मस्जिद वाले तास्सुर से चलता था,आज हम धोके में पड़गए के हमारे पैसे से मस्जिद चलती है,मस्जिदें आमाल से खाली होगइ और चीजों से भर गइ. हुज़ूर ﷺ ने मस्जिद को बाजार वालों के ताबे नहीं किया.

हुज़ूर ﷺ की मस्जिद में न बिजली थी न पानी था,न गुसलखाने थे खर्च की कोइ शकल न थी,मस्जिदमें आकर दाइ बनता था,मोअल्लिम और मुतअल्लिम बनता था,ज़ाकिर बनता था,नमाज़ी बनता था,मुतीअ बनता था,मुत्तकी बनता था, बाहर जाकर ठीक जिंदगी गुजारता था मस्जिद बाजार वालों को चलाती थी,इन चार माह में हर जगह जाकर मस्जिदो में हर उम्मती को लाने की मश्क करें,मस्जिद वाले आमाल को सीखते हुऐ दूसरों को ये मेहनत सीखने के लिये तीन चिल्लों के वास्ते आमादह करें.

वापसी

वापस अपने मकाम पर आकर अपनी मस्जिद में इन आमाल को जिंदह करना हे,हफ्ते में दो गश्त के जरिये बस्ती वालों को जमा कर के इनही चीजों की तरफ मुतवज्जेह करना और मश्क के लिये फी घर तीन चिल्लों के लिये बाहर निकलना है,ऐक गश्त अपनी मस्जिद के माहोल में और दूसरा गश्त दूसरी मस्जिद के माहोल में करें,हर मस्जिद में मकामी जमाअत भी बनायें,हर मस्जिद के अहबाब रोजाना फज़ाइल की तालीम करें, अपने शहर या बस्ती के करीब देहातो में काम की फिजा बनें उसकेलिये मस्जिद से तीन यौम के लिये जमाअतें पांचकोस के इलाके में जायें,हर महीने में तीन यौम पाबंदी से लगायें 'अल् ह–स–नतु बिअश्रि अमषालिहा' के मिस्दाक तीन दिन पर हुक्मन तीस दिन का षवाब मिलेगा, पूरे साल हर महीने तीन दिन लगाऐं तो सारा साल अल्लाह की राहमें शुमार होगा.

अंदरूने मुल्क के तकाज़े पूरे होते रहें और अपनी मश्क काइम रहे और जारी रहे उसके लिये हरसाल ऐहतेमाम से चिल्ला लगाया जाऐ,उस में कमअज़ कम तीन चिल्ले,साल में चिल्ला,महीने में तीन यौम,हफते में दो गश्त,रोजानह तालीम,तस्बीहात,और तिलावत ये कामसे कम निसाब हे,के हमारी जिंदगी दीनवाली बनती रहे,अगर हम यूँ चाहें के हम सबब बनें इजतेमाइ तौरपर पूरी इन्सानियत की जिंदगी के सही रुखपर आने और बातिलके टुटने का तो उसकेलिये इस निसाब से भी आगे बढना होगा.

हमारे वकत और हमारी आमदनी का निस्फ अल्लाह की राह में लगे और निस्फ कारोबार और घर के मसाइल में,या कमअज कम ये के ऐक तिहाइ वकत और आमदनी अल्लाह की राह में और दो तिहाइ अपने मशागिल में,यानी हरसाल चारमाह की तरतीब बिठाइ जाऐ,आप हज़रात उस में कमअज कम तीन चिल्लों की दअवत खूब जमकर दें, उस में बिलकुल न घभराऐं, इस के बगैर जिंदगीयों के रुख न बदलेंगे, जिन अहबाब ने खुद अभी तीन चिल्ले न दिऐ हों वोह भी इस निय्यतसे खूब जमकर दअवत दें के उसके लिये अल्लाह हमें कबूल फरमा ले.

गश्त

गश्त का अमल इस काम में रीढ की हड्डीकी सी अहमियत रखता है,अगर ये अमल सही होगा तो कबूल होगा, दअवत कबूल होगी, तो दुआ कबूल होगी,हिदायत आयेगी और अगर गश्त सही न हुवा तो दअवत कबूल न होगी, दअवत कबूल न हुइ तो दुआ कबूल न होगी, दुआ कबूल न हुइ हिदायत नहीं आयेगी.

गश्तका मोज़ु येहे के अल्लाह जल्ले शानहु ने हमारी दुनिया और आखेरत के मसाइल का हल मुहम्मद ﷺ के तरीके पर जिंदगी गुजारने में रखवा है,उनके तरीके हमारी जिंदगीयो में आजाये उस के लिये मेहनत की जरुरत है,इस मेहनत पर बस्ती वालों को आमदह करने के लिये गश्त के लिये मस्जिद में जमा करना है, नमाज़ के बाद ऐलान कर के लोगों को रोका जाये ऐलान कोइ बस्ती का बा असर आदमी या इमाम साहब करे तो जियादह मुनासिब है, वोह हम को कहे तो हमारा साथी करदे,फिर गश्त की अहमियत,जरुरत और कीमत बताइ जाये इसके लिये आमदह किया जाये,जो तैयार

हो उनको अच्छी तरह आदाब बताओ जाऐं. अल्लाह का झिक्र करते हुऐ चलना है.निगाहें नीची हो.हमारे तमाम मसाइल का ताल्लुक अल्लाह जल्ले शानहु की झात से है.इन बाजार में फेली हुइ चीजों से किसी मसअले का ताल्लुक नहीं,चीजोंपर ध्यान न जाऐ,अगर निगाह पळ जाऐ तो मिट्टी के ढले मालुम हो,हमारा दिल अगर उन चीजों की तरफ फिर गया तो फिर हम जिसके पास जारहे हैं उनका दिल इन चीजोंसे अल्लाह की तरफ कैसे फिरेगा,कब्र का दाखला सामने हो. इसी जमीन के नीचे जाना है. मिलजुल कर चले.

ऐक आदमी बात करे,काम्याब है वोह बात करनेवाला जो मुख्तसर बात करके आदमी को मस्जिद में भेज दे,भाइ हमसब मुसलमान है.हम ने कल्मा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' पढा है. हमारा यकीन है अल्लाह पालने वाले हैं.नफा और नुकसान,इझ्झत और जिल्ल त अल्लाह के हाथ में है,अगर हम अल्लाह के हुकमपर और हझरत मुहम्मद ﷺ के तरीकेपर जिंदगी गुजारेंगे, अल्लाह राजी होकर हमारी जिंदगी बनादेंगे, हमसब की जिंदगी अल्लाह के हुकम के मुताबिक हझरत मुहम्मद ﷺ के तरीकेपर आजाऐ उसके लिये भाइ मस्जिद में कुछ फिकर की बात होरही है,नमाझ पढ चुके हों तोभी उठाकर मस्जिद में भेज दें, जरुरत हो तो आगे नमाझ को भी मस्जिद में फोरी जाने का उनवान बनालें, अल्लाह का सबसे बळा हुकम नमाझ है. नमाझ पढेंगे अल्लाह रोजी में बरकत देंगे,गुनाहों को माफ करेंगे,दुआओं को कबूल फरमां लेंगे,बशारतें सुनाइ जाऐ,वइदें नहीं,नमाझ का वकत जा रहा है चलये.

अमीर की इताअत करनी है,वापसी में इस्तिग्फार करते हुऐ आना है. अब आदाब का मुजाकेरह करने के बाद दुआ मांगकर चलदें गश्त में दस आदमी जाऐ,मस्जिद के करीब मकानात पर गश्त करलें,मकानात न हों तो बाझार में करलें,मस्जिद में दो-तीन आदमी छोळ दें,नऐ आदमी जियादह तैयार होजाओ तो उनकोभी समजाकर मस्जिद में मश्गूल करदें नओ आदमी तीन चार साथ हों, मस्जिद में ऐक साथी अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह होकर झिक्रो दुआ में मश्गूल रहे, ऐक आने वाले का इस्तिकबाल करे, जरुरत पळे तो वुझू करवाकर नमाझ पढवा दे, और ऐक साथी आने वालों को नमाझतक मश्गूल रखे,अपनी जिंदगीका मकसद समजाऐ, पोने घंटे गश्त हो. नमाझ से सात आठ मिनट पेहले गश्त खतम करदे, अब तकबीरे उलाके साथ नमाझ में शरीक हो.

जिस साथी के बारे में मश्वरा होजाए वोह दअवत दे,समजाऐ के अल्लाह की झातेआली से ताल्लुक काइम हुवा, तो दुनिया और आखेरत में कया नफा होगा और अगर अल्लाह की झातेआली से ताल्लुक काइम न हुवा तो दुनिया और आखेरत में कया नुकसान होगा,जैसे इस खतके शुरुमें छे नंबरो का तजकेरा किया है उस तर्ज पर हर नंबर का मकसद, उसका नफा, उसकी कीमत और हासिल करने का तरीका बताया जाऐ। सादे अंदाज में बयान हो, उससे इन्शाअल्लाह मजमे की समज में काम आयेगा और उसकी जरुरत भी महसूस करेगा और समजेगा के हम भी सीख सकते हैं हमारे साथी भी दअवत में ऐहतेमाम से जमकर बेठे,मुतवज्जेह हो कर मोहताज बनकर सुनें, जो बात केहरहा है हम अपने दिल में कहे के हक है,इससे दिल में इमान की लेहरें उठेगी और अमल का जझ्बा बनेगा,तीन चिल्लों की बात जमकर रखीजाऐ, नकद नाम लियेजाऐं, उसके बाद चिल्लों के लिये वकत लिखवाऐं जाऐ और फिर जिस वकत के लिये तैयार हो उसको कबूल कर लिया जाऐ.

मुतालेबा और तश्कील के वकत मेहनत सारी दअवत का मग्झ बनता है, अगर मुतालेबों पर जमकर मेहनत न हुइ तो फिर काम की बातें रेह जाऐगी और कुर्बानी वजूद में न आऐगी तो काम की जान निकल जाऐगी,दअवत देनेवाला ही मुतालेबा करे,ऐक आदमी खडे होकर नाम लिखें,नाम लिखने वाला मुस्तकिल तकरीर शुरु न करे,ऐक–दो जुमले तरगीबी केह सकता है फिर आपस में ऐक दूसरे को आमदह करने को कहा जाऐ,फिकर के साथ अपने करीब बेठनेवालों को तैयार करे, आझार का दिलजोइ के साथ हल बताऐ नबियों और सहाबा की कुर्बानियों के किस्सों की तरफ इशारे करे और फिर आमदह करे,आखिर में मकामी जमाअत बनाकर,उनके हफ्ते के दो–गश्त,रोजाना तालीम,तस्बीहात, महीनेके तीन यौम वगैरह का नज्म तै कराऐ.

तालीम

तालीम में ध्यान,अझमत,मोहब्बत,अदब और तवज्जुहके साथ बेठने की मश्क कीजाऐ, सहारा न लगाया जाऐ, बावुझू बेठने की कोशिश हो,तबियत के बहानों की वजहसे तालीम के दौरान न उठा जाऐ,बातें न कीजाऐ,इसतरह बेठेंगे तो फरिश्ते उस मजलिस को

ढांकलेंगे. ऐहले मजलिस में ताअत का माद्दा पेदा होगा. अझमत की मश्क से हदीथे पाक का वोह नूर दिल में आऐगा जिस पर अमल की हिदायत मिलती है. बेठतेही आदाब और मकसद की तरफ मुतवज्जेह कियाजाऐ. मकसद येहै के हमारे अंदर दीन की तलब पेदा होजाऐ.

फझाइले कुर्आन मजीद पढकर थोळी देर कलामेपाक की उन सुरतों की मश्क कीजाअे जो उमूमन नमाझो में पढी जातीहै. अत्तहिय्यात, दुआऐ कुनूत वगैरह का मुजाकेरह और तस्हीह. इजतिमाइ तालीममें न हो,इनफिरादी सीखने सिखाने में उनकी तस्हीह करें. अल्लाहपाक तौफीक दें तो हर किताब में से तीनचार सफ्हे पढे जाऐं. तालीम में अपनी तरफ से तकरीर न हो हदीथ शरीफ पढने के बाद दो तीन जुम्ले ऐसे केहदिये जाऐं के अमल का जझबा और शोक उभर आऐ

हझरत शैखुल हदीथ मौलाना मोहम्मद झकरया साहब दा.ब.की तालीफ करमूदह फझाइले कुर्आन,फझाइले नमाझ,फझाइले तब्लीग फझाइले झिक्र,फझाइले सदकात,हिस्सा अव्वल और दोम,फझाइले रमझान,फझाइले हज. (अय्यामे रमझान और हज में) और मौलाना ऐहतेशामुल हसन साहब कांधलवी दा.ब.की मुसलमानों की मौजूदह पस्ती का वाहिद इलाज, सिर्फ ये किताबें है जिनको इजतेमाइ तालीम में पढना और सुनाना है और तन्हाइ में बेठकर भी उनको पढना है.

किताबों के बाद छे नंबरो का मजाकेरह हो साथीयों से नंबर बयान कराये जाऐं, जब भी तालीम शुरु कीजाऐ तो अपने में से दो - साथियों को तालीम के गश्तके लिये भेजदिया जाऐ, १५-२० मिनट बाद वोह आजाऐ तो दूसरे साथी चले जाऐं, इस तरह बस्ती वालों को तालीम में शरीक करनेकी कोशिश होती रहे.बाहर निकलने के जमाने में रोजानह सुब्ह और बादे झोहर दोनों वक्त तालीम दो-तीन घंटे की जाऐ.और अपने मकाम पर रोजानह इसी तरतीब से ऐक घंटा तालीम हो या इब्तेदाअन जितनी देर अहबाब जुळ सकें.

मश्वरह

काम के तकाजों को सोचने, उनकी तरतीब काइम करने, उन तकाजों को पुरा करने की शकलें बनाने में और जो अहबाब अवकात फारिग करे उनकी मुनासिब तश्कील में और जो मसाइल हों,अहबाब को मश्वरे में जोळा जाऐ. अल्लाह के ध्यान और फिक्र के साथ दुआ मांगकर मश्वरे में बेठे, मश्वरे में अपनी रायपर इसरार और अमल कराने का जझबा न हो, उस से अल्लाह की मददें हटजाती है, जब

राय तलब कीजाऐ अमानत समजकर जो बात अपने दिलमेंहो केहदी जाऐ,राय रखने में नरमी हो.किसी साथीकी राय से तकाबुल का तर्झ न हो, मेरी राय में मेरे नफस के शुरूर शामिल हैं ये दिल के अंदर ख्याल हो,अगर फेस्ला किसी दूसरी रायपर होगया तो उसकी खुशी हो के मेरे शुरूर से हिफाजत होगइ,और अगर अपनी रायपर फेस्ला होजाऐ. तो खौफ हो और जियादह दुआऐं मांगी जाऐ. हमारे यहां फेस्ले की बुन्याद कषरते राय नहीं है,और हर मामले में हरऐक से राय लेना भी जरूरी नहीं है.

अमीर को इस बात का यकीन हो के इन अहबाब की फिक्र और मिलकर बेठने की बरकत से अल्लाह जल्लेशानहु सही बात खोलदेंगे अमीर अपने आपको मश्वरह का मोहताज समजे,राय लने के बाद गौरो फिक्र से जो मुनासिब समज में आता हो वोह धंह दे,बात इस तरह रख्खे के किसीकी राय का इस्तिखफाफ न हो,अगर तबीअतें मुख्तलिफ हों तो उस बातपर शोक और रग्बतकेसाथ आमदह करलें

और साथी अमीर की बातपर अैसे शोक से चले के उनकी ही राय तै पाइ है. अगर उसके बाद अमलन ऐसी शकल नजर आऐ के हमारी राय जियादह मुनासिब थी,फिर भी हरगीज तानह न दिया जाऐ, या इशारा किनाया भी न किया जाऐ, इसी में खैर का यकीन किया जाऐ,जो अमीर को तानह दे उस के लिये सख्त वइदें आइ है.

शबे जुम्अह

जब महल्लो की मसाजिद में हफ्तों के दो गश्तों के जरीये फी घर ऐक आदमी तीन चिल्ले के लिये निकलने की आवाज लग रही होगी, तालीमों और तस्बीहात पर अहबाब जुडरहे होंगे.हर मस्जिद से तीन दिन के लिये जमाअतें निकालने की कौशिश होरही होगी तो शबे जुमअह का इजतेमा सही नेहेज पर होगा और काम के बढने की सुरतें बनेगी,जुमेरात को असरके वकत से महल्लों की मसाजिद के अहबाब अपनी अपनी जमाअतों की सुरत में बिस्तर और खाना साथ लेकर इजतेमा की जगहपर पोंहचे.

मश्वरे से ऐसे अहबाब से उमूमन दअवत दिलवाइ जाऐ जो मेहनत के मेदान में हों और तबीअत पर काम के तकाजे गालिब हों बहुत ही फिक्र और अेहतेमाम से तश्कीलें कीजाऐ. अगर अवकात वसूल न हों तो रातको भी मेहनत की जाऐ. रो-रोकर मांगा जाऐ सुबहको जमाअतों की तश्कील कर के हिदायत देकर रवाना

किया जाऐ,तीन दिन की महल्लों से तैयार होकर आइंदह जमाअतें उमूमन सात-आठ मीलतक भेजी जाऐ,हर शबे जुमअह से तीन चिल्लो और चिल्लोंकी जमाअतों के निकलने का रुख पकना चाहये,अगर शबेजुमअह में खुदा नरवास्ता लखाजे पूरे न होसके तो सारे हफ्ते अपने महल्लों मे फिर इसके लिये कोशिश कीजाऐ और आइन्दह शबे जुमअह में महल्लों से तकाजों के लिये लोगों को तैयार करके लाया जाऐ.

मेहनत का मकसद

भाइ दोस्तो काम बहोत नाजुक है.हुझूर ﷺ ने ऐक मेहनत फरमाइ इस मेहनत से सारे इनसानों की सारी जिंदगी के,कमाने,खाने,बियाह शादी, मेल मुलाकात, इबादात,मामलात वगैरह के तरीकों मे मुकम्मल तब्दीलयां आइ,तो आप ﷺ ने खुद इस मेहनत के कितने तरीके बतलाऐ होंगे,हमें अभी ये काम करते नहींआता और न अभी हकीकी काम शुरु हूवा है, काम उसदिन शुरु होगा जब इमान और यकीन अल्लाह की मोहब्बत,अल्लाह के ध्यान,आखेरत की फिक्र,अल्लाहके खौफो खशियत जोहदो तकवा से भरेहूऐ लोग, हुझूर ﷺ के आली अखलाक से मुझय्यन होकर अल्लाह की रझाके जझबे से भरपूर होकर अल्लाहकी राहमें जान देनेके शोक से खिंचेखिंचे फिरेंगे,हझरत उमर रदि फरमाते हैं : अल्लाह रहम करे खालिद रदि.पर उसके दिल की तमन्ना सिर्फ ये थी के हक और हकवाले चमक जाऐं और बातिल और बातिल वाले मिटजाऐं और कोइ तमन्नाही न थी.'

अभी जो हमको काम की बरकतें नजर आरही है वोह काम शुरु होने से पेहले की बरकतें है,जैसे हुझूर ﷺ की विलादत के वक्त से ही बरकतों का जुहूर शुरु हूवा था लेकिन असल काम और असल बरकतें चालीस साल बाद शुरु हुइ,अभी तो इसकेलिये मेहनत होरही है,के काम करने वाले तैयार होजाऐं अल्लाह जल्ले शानहु काम उनसे लेंगे और हिदायत के फैलने का जरीया उनको बनाऐंगे, जिस की जिंदगी अपनी दअवत के मुताबिक बदलेगी, जिनकी जिंदगीयो में तब्दीली न आऐगी अल्लाह जल्ले शानहु उनसे अपने दीन का काम न लेंगे ये नबियोंवाला काम है.

इस काम में अगर अपने आपको उसूल सीखने का मोहताज न समझा गया और उसूलों के मुताबिक काम न हूवा तो सख्त फित्नों का खतरा है,हुझूर ﷺ ने जब बाहर मुल्को में काम शुरु करने का इरादा फरमाया

तो पेहले तमाम सहाबा को तीन तीन दिन तक तरगीब दी और फिर फरमाया के जिस तर्ज पर यहां काम हुवा है बिलकुल इसी तर्ज पर बाहर जाकर भी करना है.इस काम की नोइयत येही है, मकाम जमान, मुआशेरत, मोसम वगैरह के ऐतेबार से इसकाम के उसूल नहीं बदलते इस काम की नहज और उसूलों को सीखने के और काइम रेहने के लिये इस फिझा में आना और बार-बार आते रेहना इन्तिहाइ जरूरी है, जहां हझरत रह.ने जान खपाइ थी.और उनके साथ इख्तेलात भी बहोत जरूरी है,जो इस जदे जेहद में हझरत रह.के साथ थे, और जब से अबतक इस फिझा में और काम में मुसलसल लगेहूऐ हैं, इसके बगैर काम का अपने नहज और उसूलों पर काइम रेहना ब जाहिर मुमकिन नहीं इस लिये अपने काम करनेवाले अहबाब को ऐसी फिजा में ऐहतेमाम से नोबत बनोबत भेजते रहें.

तरीकऐ कार

तमाम अंबिया अल. अपने अपने जमाने में किसी न किसी नकशे के मुकाबले पर आऐ और बताया के काम्याबी का इस नकशे से बिलकुल तअल्लुक नही है,काम्याबी का तअल्लुक बराहे रास्त अल्लाह जल्ले शानहु की झातेआली से है,अगर अमल ठीक होंगे,अल्लाह जल्लेशानहु छोटे नकशे में भी काम्याब करदेंगे और अमल खराब होंगे अल्लाह जल्ले शानहु बळे बळे नकशे तोळकर नाकाम करके दिखाऐंगे, काम्याब होने के लिये इस नकशे में अमल ठीक करो हर नबीने अपने राऐजुल वकत नकशे के मुकाबले पर मेहनत की और हझरत मुहम्मद ﷺ तमाम अकसरियत, हुकूमत, माल जराअत और सनअत के नकशों के मुकाबले पर तश्रीफ लाऐ, आपकी मेहनत इन नकशों से नहीं चली.

आपकी मेहनत मुजाहदों और कुर्बानियों से चली है बातिल तअय्युश के नकशे से फेलता है तो हक तकलीफें उठाने से फेलता है. बातिल मुल्को माल से चमकता है तो हक फक्रो गुरबत की मशककतो में चमकता है जितने फित्ने मुल्कोमाल और तअय्युश की बुन्यादपर लाऐ जारहे हैं उनका तोळ हक के लिये फक्रो गुरबत और तकालीफ बरदाश्त करने में है.अब इस काम के जरीये उम्मत में मुजाहदा और कुर्बानी की इस्तेअदाद पेदा करनी है.

मकसदे जिंदगी
(बुजुर्गों के अकवाल का खुलासह)

मोहतरम बुझुर्गो दोस्तो अझीझो अल्लाह जल्ले शानहु ने इनसान की परवरिश की और जरुरत की तमाम चीजें पेहले पैदा की,छे दिन में तमाम मरवलूक को बनाया और अरवीर में जुमअह के दिन असर के बाद आदम अल. को पैदा फरमाया,जिनको इन चीजों से फाइदा उठाना था उनको अरवीर में पैदा फरमाया,क्यूंके इनसान को जरु-रतमंद पैदा कियागया है, उसके इरिव्तयार के बगैर उसके अंदर जरुरतें पैदा होती है,आदमी बगैर इरिव्तयार के भूका होता है,बगैर इरिव्तयार के प्यासा होता है. बगैर इरिव्तयार के बीमार होता है,ये सब गैर इरिव्तयारी चीजें हैं,जो इन्सान के अंदर पैदा होती है.ये सब जरुरतें हैं,तो उस जरुरत का सामान भी है.दुनिया में जोकुछ है वोह इन्सान की गुजर बसर के लिये है.

अल्लाह जल्ले शानहु ने हझरत आदम अल.को जब जमीन पर उतारा तो फरमाया 'व लकुम फिल् अर्दि मुस्तकर्रुंव् व-मताउन इला हीन'के आप के लिये और आप की औलाद के लिये जमीन ऐक ठिकाना है,अफराद के अेतेबार से मौततक और मजमऐ के ऐतेबार से कयामत तक, इस जमीन से तुम्हारे लिये हमने गुजारे का सामान बनाया है,आदम अल.को पैदा करने से पेहले ही जमीन के अंदर और जमीन के उपर इनसान की जरुरत का सामान बनाहुवा तैयारही था इसलिये आदम अल. से फरमाया के तुम जमीन पर जाओ तुम्हारे लिये और तुम्हारी औलाद के लिये मेरी तरफ से हीदा-यतका सामान आऐगा.

जब आदम अल.को अल्लाह ने पैदा फरमाने का इरादह फरमाया तो फरिश्तों से फरमाया के मैं जमीन पर अपना ऐक खलीफह पैदा करने वाला हुं, खिलाफत यानी अल्लाह के हुकमों को जमीन पर काइम करने की जिम्मेदारी,यानी खुदा से हुकम लेना और जमीन पर चलाना और खुद भी इबादत करना. तो दोनों काम आदम अल. पर थे.

हर आदम के बेटे की येही जिम्मेदारी है जो उनके मां-बाप की है.इसलिये अल्लाह ने फरमाया,'या बनी आद-म ला यफ्तिनन्नकुमु श्शयत्वा-नु कमा अरव्र-ज अ-बवयकुम् मिनल् जन्नहि'ऐ आदम के

बेटो देखो तुम्हें शैतान फितने में न डाल दे.जैसे तुम्हारे मां-बाप को जन्नत से निकाला.तुम्हें जन्नत के रास्ते से न हटा दे. ऐक ही हिदायत सब के लिये बाप-मां और औलाद सब के लिये के तुम्हें शैतान फितने में न डाले जैसे तुम्हारे मां-बाप को जन्नत में से निकलवाया तुम्हें जन्नत के रास्ते से न हटा दे.

जन्नत में जरूरतों के पूरा करने के लिये किसी अस्बाब की जरूरत नहीं थी. सिर्फ अल्लाह ने हुकम और हिदायत की थी के जन्नत में जहांचाहो चलोफिरो जो चाहो इस्तेमाल करो लेकिन इस दरख्त के करीब मत जाना,खाने की तो दूर की बात करीब भी मत जाना और जाओगे तो'फतकूनु मिनझ् झालिमीन'अगर चले गाऐ तो अपना नुकसान करनेवाले बन जाओगे.

अल्लाह ने बताया था नुकसान और शैतान ने बताया नफा के आदम बहोत जमाना होगया, अब अगर तुम खा लोगे तो हमेंशा के लिये अल्लाह की रहमत में और अल्लाहके पडोसमें रहोगे,और कोइ जवाल नहीं आऐगा,खुदा की कसम खा कर केहता हुं और तुमहारी भलाइ के लिये केह रहा हूं .'वका स-महुमा इन्नी लकुमा लमिन न्नासिहीन'बढ-चढकर कसमें खाइ और नुकसान में बताया नफा जब अल्लाह का नाम सुन लिया तो आदम अल.ने वोह खा लिया,उलमा फरमाते हैं के जो लिबास अल्लाह ने वहां पेहनाया था वोह फौरन उतरगया, जैसे ही हुकम तुटा, फौरन परेशानी आइ, और हुकम तोडने की वजह से दुनिया में उतारे गाऐ.

अल्लाह जल्ले शानहु ने खुद कलामे पाक में दुनिया में आने का मकसद बयान फरमाया, 'वमा खलक्तुल जिन्न वल् इन्स इल्ला लियअ् बुदुन' के मैंने जिन्नात और इनसान को सिर्फ मेरी इबादत के लिये पैदा किया है.अल्लाह ने बंदोंको अपना हुकम पूरा करने के लिये पैदा किया है,और जमीन और आसमान के दरम्यान जित्ने अस्बाब दीऐ हैं वोह सब उसकी मदद के लिये दिऐ हैं के इन तमाम अस्बाब से राहत लो जरूरत पूरी करो और हुकम पूरा करो. अस्बाब सिर्फ इस लिये दिऐ हैं ताके हुकम पूरा करने में सहुलत और मदद मिले,इसलिये नहीं दिऐ के अस्बाब में लगकर हुकमों ही को भूल जाऐ.

अल्लाह जल्ले शानहु ने हमारी जरूरतों के लिये अस्बाब पैदा

फरमाऐ और उन अस्बाबहीं से अल्लाह हमारी जरुरतें पूरी फरमाते है.इनसानों की हयात के लिये जिस तरह आसमान से पाक और साफ पानी उतारा ऐसे ही हमारी काम्याबियों के लिये अपना दीन और अहकामात उतारे हैं. जिनकी जिंदगी का ताल्लुक अल्लाह के हुक्मों के साथ होगा वोह काम्याब होगा, और जिनकी जिंदगी अल्लाह के हुक्म के बगैर कटेगी वोह नामुराद होगा, जिस तरह कोइ आदमी अस्बाब इख्तियार न करे मसलन खाना पीना छोड दे तो वोह हलाक होजाऐगा. क्यूँ के अल्लाह ने उसके गुजारे के लिये अस्बाब पैदा किये हैं.

जिस तरह इन अस्बाब के बगैर आम तौरपर हलाकत होजाती है ऐसेही अल्लाह के हुक्मों के बगैर यकीनी तौरपर नाकामी हो-जाती है.इन नाकामियों से बचाने के लिये अल्लाह जल्ले शानहु ने अपना दीन उतारा और अपने बंदों को उसकी तरफ दअवत दी है. के जिसतरह अपने गुजारे की फिकर करते हो. अपनी काम्याबी की फिकर करो,गुजारे के दिन थोडे हैं और काम्याबी का जमाना बडा लंबा है.

अल्लाह जल्लेशानहु काम्याबी मौतके वकत जाहिर करेंगे क्यूँ के काम्याबी का झुहुर वहीं से होगा.यहां तो गुजारा ही गजारा है. आदमी गुजरता चला जाऐगा सर्दीभी गुजरेगी, गर्मीभी गुजरेगी, दिनभी गुजरेगा,रातभी गुजरेगी,महीनेभी गुजरेंगे,सालभी गुजरेंगे थोडे कपडेमेंभी गुजरेगी,अच्छे कपडेमेंभी गुजरेगी,छोटे मकान में भी गुजरेगी,अच्छे मकानमें भी गुजरेगी,थोडे अस्बाबमें भी गुजरेगी जियादह अस्बाब में भी गुजरेगी,क्यूँ के गुजाराही गुजारा है.

काम्याबी सबको नहीं मिलेगी और जिसको काम्याबी नहीं मिलेगी वोह धोका खाऐगा और जिन को काम्याबी मिलेगी वोह खुश होजाऐंगे अल्लाह जल्ले शानहु ने बताया 'फमन झुहुझि-ह अनिन्नारि व उद्खिलल् जन्न-त फकद् फाझ'जो दोझख से बचालिया गया और जन्नतमें पहोंचा दियागया वोह हुवा काम्याब,बाकी दुन्या का मस्अला तो धोके की बात है,'वमल् हयातुद् दुन्या इल्ला मता-उल गुरुर' वकत गुजरेगा तो धोका खुलजाऐगा,जबतक गुजरेगा नहीं धोका नहीं खुलेगा,हजरत अली रदी.फरमाते थे के लोग सो रहे है जब मरेंगे तो जाग जाऐंगे.

पेहलेही से ये सबक समजाया गया के अस्बाब से न तरक्की है और न काम्याबी है, जैसे छोटे बच्चों को पढाया जाता है जब और बडे होजाते हैं तो उनकी तालीम और होती है, इन्सानियत जैसे जैसे बढती गइ, उनकी तालीम में भी इजाफा होता गया, क्यूँके दुनिया तरक्की करेगी अपने अस्बाब के लेहाज से, तो दीनको भी तरक्की करते दिखाया, आज जब के आखरी जमाना आ गया और दुनिया तरक्की कररही है, तो दीन भी आखरी दर्जे का दिया जो हर हाल में काम्याबी का पूरा जामिन है, इस में कोइ तब्दीली नहीं होगी.

अब ये आखरी किताब और आखरी नबी हजरत मुहम्मद ﷺ को भेजा लेकिन सबकीबुन्याद वोही है के काम्याबियां अल्लाह के हुक्मों के रास्तेसे मिलेगी, दूसरा कोइ रास्ता काम्याबी के लिये नहीं है. इसीलिये आप ﷺ ने इरशादा फरमाया : जिसका खुलासह येहै के जो इल्म और जो हिदायत देकर अल्लाहने मुजे भेजाहै उस की मिसाल बारिश के पानी की तरह है के जैसे बारिश का पानी साफ सुथरा पाक और हयात लानेवाला है. (के बारिशका पानी - जहां पडेगा कुछ न कुछ उग जाऐगा, समंदर के पानी से कोइ चीज नहीं उगती) ऐसेही जो हिदायत देकर मुजे भेजा है अगर ये नहीं है तो हलाकत है.

हमारी हिदायत के लिये कल्मा, कल्मे की तफसीर के लिये कुर्आने पाक और कुर्आने पाक की तफसीर के लिये आप ﷺ को भेजा, अल्लाह जल्ले शानहु ने कुर्आने पाक में इरशाद फरमाया 'हुदल्लिल मुत्तकीन' के कुर्आनशरीफ हिदायत है अल्लाह से डरने वालोंके लिये और ये कुर्आन हिदायत है सारे आलम के इन्सानों के लिये, आप ﷺ सारे आलम के रेहबर हैं और आप ﷺ का रेहबर कुर्आन शरीफ है, के जब कोइ बात अटकी उपर से हुकम आया और कुर्आन शरीफ ने रास्ता बताया के आप ये कीजिये.

कुर्आन शरीफ हिदायत है और हिदायत का पूरा सामान कुर्आन में है, इसीलिये कहाजाता है के क्या करना है वोह कुर्आन में देखो और कैसे करना है वोह आप ﷺ की जिंदगी में देखलो, वरना भटक जाऐंगे और जो भटक गया वोह मंजिल पर नहीं पहोंच सकता, इसलिये हिदायत की फिक्र सबसे जियादह जरूरी है, अपने लिये,

अपने मुतअल्लिकीन के लिये, अपने माहोल के लिये, और सारे आलम के लिये, क्यूँके आखेरत में दो मेंसे ऐक ठिकाना होगाऐना यानी वोह जहन्नम में जाऐगा या जन्नत में, जन्नत काम्याबी और जहन्नम नाकामी, सिर्फ मौत तक और कयामत तक इन्सान को दुनिया में रेहना है, इसलिये दुनिया में जितने भी अस्बाब हैं उनका ताल्लुक गुजरान से होगा यानी उसके जरिये से गुजर बसर होगा उसमें रहेंगे उनसे फाइदा उठाते रहेंगे, काम्याबी का कोइ ताल्लुक उनसे नहीं है, काम्याबी का ताल्लुक सिर्फ अल्लाह के ऐहकाम से है.

दुनिया के इन साजो सामान की वजह से अल्लाह के बंदे दो किसम के होजायेंगे, ऐक किस्म वोह जो इन अस्बाबों के अंदर से काम्याबी हासिल करेगी हुक्म पूरा करके, और ऐक किसम धोका खानेवाली के जिसने अस्बाब से फाइदह उठाया और फाइदह उठा नेमें अपनी काम्याबी समजी, ये यकीन खराब करेंगे, अमल खराब करेंगे, जज़्बात खराब करेंगे और अल्लाह का और उसके बंदो का हक मारेंगे बल्के अपनी ज़ातका भी हक मारेंगे, और जब ये हक मारनेवाले बनजायेंगे तो फिर इन अस्बाब से काम्याबी नहीं मिले गी बल्के ये अस्बाब उनके लिये दोज़ख के सामान बनेंगे, 'वमल हयातु दुन्या इल्ला मताउल गुरूर' के दुन्यवी जिंदगी तो कुछ भी नहीं धोके का सामान है.

दुनिया धोके का सामान इसलिये बनती है के उसका नफा सामने है और नुकसान गैब में है. जैसे मछली को खाना नजर आता है जाल नजर नहीं आती, परिंदे को दाना नजर आता है जाल नजर नहीं आती, इसी तरह इनसान बातिल के नफे को देखता है अपनी हलाकतको नहीं जानता, वक्ती तौरपर फाइदह होगा और अंजाम के ऐतेबार से हलाकत होगी, इसलिये गैब के यकीन की दअवत है, के जब गैबका यकीन होगा तो इमानवाला यानी यकीन वाला अपनी यकीन की नज़र से उस हलाकत को अपनी आंखो के सामने गोया देख रहा है.

और दीन का और हक का नुकसान सामने है और नफा गैब में है. इसलिये आदमी हकपर चलने से घबराता है और डरता है. क्यूँके नफा सामने आया नहीं और उस की रुकावटें सामने आती है, मौलाना यूसुफ साहब रह. फरमाते थे के हककी इब्तेदा नाकामया-

रियोंसे होती है और इसीतरह काम्याबियों से होती है,तो जब हक को अपने दिल में लेंगे और लेकर चलेंगे तो नागवारी पेश आयेगी नुकसान होगा और नुकसान का खौफ होगा,ये तै और मुमकिन है.लेकिन खुदा का हुकम पूरा करनेकी वजहसे जो नुकसान होगा वोह नुकसान नहीं है बल्के कुर्बानी है.नुकसान वोह है जिस का कोइ फाइदह लौटकर न आऐ. हक के रास्ते में जो नुकसान आये गा वोह बड़ा मोआवेजेह लेने के लिये है.

नागवारियां जो आती है वोह इलाज के लिये आती है. जैसे बीमारी का इलाज, के दवा कड़वी है,परहेज है, के पेहले दुश्वारी फिर आसानी 'इन्न मअल् उसरि युस्रा' बेशक मोजूदह मुश्किलात के साथ आसानी आनेवाली है.इसलिये मेहनत करके अपने अंदर उसके हक होने का यकीन पैदा करना है,के दीन हक है और दीन पर जो अल्लाह के वादे और फैसले होंगे वोह भी हक है,जब मेहनत होगी तो उसका यकीन उतरेगा, इस मेहनत में इत्ना चलना के वोह मदद आजाऐ.जैसे इत्ना कूंवा खोदना के पानी आजाऐ.पेहले मिट्टी आयेगी फिर अखीर में पानी आयेगा,ये खजानह है अल्लाह का.इस में मशीन लगाओ कुछ भी करो उस खझानेतक पहोंच जाऐ.

इसलिये इस काम के साथ मेहनत लगादी गइ और वोह मेहनत ये है के आदमी जी के खिलाफ अल्लाह के हुकमों पर आऐ क्यूं के इस मेहनत की रुकावट आदमी की जी की चाहत होती है, आदमी का जी और आदमी का नफस चूंके माद्दे से ताल्लुक रखता है. इसलिये माद्दे की हर चीज की तरफ उसका जी जायेगा, और लगेगा,तो दीनका तकाजा येहै के अपनी जी की चाहत के खिलाफ अल्लाह जल्ले शानहु का हुकम पूरा कियाजाये,जब जी की चाहत के खिलाफ अल्लाह के ऐहकाम पूरे होंगे तो जी की चाहतें और नफस की ख्वाहिशें कुर्बान होगी, और ये जित्नी कुर्बान होगी उतना नूर अंदर में बनता चला जाऐगा, जैसे इंधन जलाते हैं तो आग रोशन होती है.इसी तरह ख्वाहिशें कुर्बान करेंगे तो अंदर में हिदायत का और तकवे का नूर पैदा होगा.

ख्वाहिशें कुर्बान करनी पड़ेगी,हाजतें कुर्बान नहीं होती,हाजत तो पैदा होती है और उसको पूरा भी किया जायेगा,लेकिन आमतौर पर हाजतें ऐअतेदाल पर नहीं रेहती इसलिये इसमें ख्वाहिशें घुस

जाती है इस लिये शरीअत आती है और बतलाती है के यहां तक ठीक है.आगे नाजाइज है,जैसे तबीब उसूल बतायेंगे के यहां तक खाना ठीक है आगे सिहत के लिये मुजिर है.तो ऐसे ही दीन आता है शरीअत आती है वरना लोग गुलू करेंगे या हाजत को पामाल करेंगे और जब हाजत को पामाल करेंगे तो दीन में तंगी आयेगी, और तंगी अल्लाह ने दीन में रखवी नहीं है'वमा जअ-ल अलयकुम फिदीनि मिन हरज' इसलिये किसी हाजत के पूरा करने की मुमा-निअत नहीं होगी.हाजत के पूरा करने के तरीके बताये जायेंगे.इस लिये नबी भेजे जाते हैं के कोइ आगे न बढे, और न पीछे रहे. नबी बतलाएँगे के कोनसा काम करना है. कैसे करना है और किस नियत से करना है,ताके उसका अमल दीन बने,जो बंदा ख्वाहिशों को कुर्बान करके अल्लाह के हुक्मों को पूरा करेगा वोह अल्लाह का मुखलिस बंदा बन जायेगा.

इसलिये आप ﷺ जो हिदायत और जो अहकाम अल्लाह की तरफ से लाये वोह हक है. उसका यकीन पैदा कियाजाये,क्यूँ,के जो चीज हक होती है उसका हक होता है. जब उसका हक अदा करेंगे तो वोह चीज नफा दीखायेगी.दुनिया की हर चीज के दो रुख अल्लाहने बनाये हैं,नफा भी हो सकता है,नुकसान भी हो सकता है कामयाबी भी मिल सकती है,नाकामी भी मिल सकती है.कुछ केह नहीं सकते क्या होजाये ? इसलिये इन चीजों पर हमारा यकीन नहीं है,और जो चीज अल्लाहने हमें दी है,वोह यकीनी है.

कुर्आन शरीफ अल्लाह के फैस्ले की किताब है,इस में सब फैस्ले है यूँ होगा,यूँ होगा,यूँ होगा,उसके खिलाफ नहीं होगा,उसके कले मात में तब्दीली नहीं होगी,उसके वादे में खिलाफ नहीं होगा,हम आखेरत वाले हैं,अगर हमारी आखेरत बिगडती है तो हम अपनी दुनिया को लात मारेंगे, जिन की कौशिशें आखेरत से हटी तो वोह नाकाम होगा,न उनकी इबादत काम देगी न उनकी सखावत और शहादत काम देगी.

इसलिये हर अमल अल्लाह को राजी करने के लिये करे और उस में अल्लाह की इताअत हो,और आप ﷺ की इत्तेबाअ और इताअत भी हो,इताअत केहते हैं केहना मान लेने को और इत्तेबाअ केहते हैं जो कहागया उसके लिये ऐक तरीका इख्तियार करना.

आप ﷺ की इताअत और इत्तेबाअ का नाम ही इस्लाम है.के इता- अत रुह है और इत्तेबाअ रुह की शकल है.दीन हमारी काम्याबी के लिये दिया है.इस से दुनिया की बरकतें भी दी जयेगी और आखेरत की काम्याबी भी दी जाऐगी. और इन दोनों बातों को हासिल करने के लिये हिदायत भी दी जायेगी.अल्लाह के ऐक ऐक हुक्म में बड़ी बड़ी काम्याबियां है. और बड़े बड़े वादे हैं.इसलिये अल्लाह के वादों का यकीन करना है ताके काम्याबी तक पहोंचने में कोइ चीज आड़े न आऐ.

काम्याबी अल्लाह ने दीन में रख्खी है,और नाकामी बेदीनी में रख्खी है. लेकिन अल्लाह की तरफ से जो काम्याबी और नाकामी आती है वोह ऐकदम नहीं आती बल्के आहिस्ता आहिस्ता आती है. जिस तरह बचपना खतम किया आहिस्ता आहिस्ता, जवानी लाये आहिस्ता आहिस्ता, जवानी खतम कर के बुढापा लाऐ आहिस्ता- आहिस्ता,इसलिये जो आदमी दीनपर नहीं चलरहा वोह ये न समजे के कुछ नहीं होरहा,जो चाहे करो क्यूँके नाकामी आहिस्ता आहि- स्ता आती है.इसी में धोका लगता है.मौका देते हैं पलटने का.तौबह करने का.जब इमान कमजोर होजाता है तो नफस कवी होजाता है. और इनसान गुनाहों की तरफ चल पड़ता है, नमाझ नहीं पढ़ता हालाँ के उसे मालूम है के नमाझ फर्झ है. तो जब मुसलमान हक समज कर भी गुनाह में पड़ेगा, तो अल्लाह उन को दुन्या में नकद मुसीबतें दिखाऐंगे, जैसे डाकतर केहता है के परहेज करो अगर नहीं किया तो फौरन नुकसान नजर आयेगा.

इसलिये जो लोग अल्लाह को भूलकर और उसके हुक्मों को तोड़कर और आखेरत से बेफिक्र होकर ज़िंदगी गुजारते हैं, तो अल्लाह जल्ले शानहु खुद उनकी जान से बे परवाह बनादेते हैं 'वला तकूनु कल्लझी-न नसुल्ला-ह फअन्साहुम् अन्फु-सहुम' तुम उन लोगों की तरह मत होजियो जिन्हों ने अल्लाह के ऐहकाम से बे पर- वाइ की सो अल्लाह ने खुद उनकी जानों से उनको बेपरवा करदिया तो जो अल्लाह को भुल जायेंगे उनको ये सजा मिलेगी के ये सब से पेहले अपने आपको भूल जायेंगे. के मेरी काम्याबी किसमें है. मेरी नाकामी किस में है.सजा किस में है. इनआम किस में है. अपने ही मसअले को भूल जायेंगे.

जब ये अपनी मस्लेहत को और अपने नफे नुकसान को भूल जाएगा और चलेगा तो अल्लाह उस को चलने देंगे लेकिन साथ साथ अपनी बातभी सामने लाते हैं के ये हक है,ये नाहक है,मगर वोह अपनी गफलत में चलरहा होता है,और शैतान उसकी चीजों को उसके सामने खूबसूरत बनाकर पेश करता है के जो तुम करते हो वोही ठीक है, दूसरों की गलत है.

जो बात रुआयत लेकर नसीहत कर के उन तक पहोंचती है, जब वोह उसको नहीं लेते तो फिर उनको राह पर लाने के लिये दूसरा रास्ता इख्तियार करते हैं, क्यूँके लाना तो है, अल्लाह तो किसी के लिये पसंद नहीं करते के वोह हलाक होजाये,कोइ बर-बाद होजाए,उसलिये परेशानियां पैदा की जाती है.

सबसे पेहले परेशानियो को उनके दिलो में डालेंगे अब दिल परेशान? खानाभी है,पीनाभी है,पैसेभी हैं सबकुछ है लेकिन अंदर परेशानियां पैदा की गइ के अब दिलों को चैन नहीं है, दिलों का चैन खींचलिया गया, जिसतरह रुह खींच ली जाती है. इसीतरह जब दिलोंमें से अल्लाह की याद खतम होजाती है तो उसका चैन भी खतम करदिया जाता है,उन्हें चैन नहीं मिलेगा कोइ आदमी लाश के पास बेठे उसको चैन मिलेगा ? लाश के पास बेठो दिल-घबराता है, हालाँ के वोह कुछ भी नहीं करसकती, लाश है,मगर चैन के अस्बाबमें से नहीं है, तो जब दिल अल्लाह की याद से अल्लाह के ताल्लुक से बेखबर होगया तो ये लाश है, अंदर से असल चीज निकल गइ,अंदर परेशानियां भरेंगे,नाकाम बनाने के लिये,ताके पलट जाए,अगर पलट गया तो काम्याब होजायेगा.

लेकिन हुक्मोंपर न चलने की वजह से उसकी अकल मारी जाती है तो अकल भी सही मश्वरा नहीं देगी, क्यूँ के अब अकल के उपर हवस गालिब होजाती है, आदमी की हवस अकल पर छा जाती है,जिस तरह बादल छा जाते हैं, और अंधेरा होजाता है, ऐसे ही जो परेशानी में फंसते हैं, उनकी अकल सही रेहबरी उन को नहीं देगी,तो वोह अपनी परेशानियों को दूर करने के लिये,गुना-हों का रास्ता इख्तियार करेंगे के मेरी परेशानी खतम होजाये.

उलमा ने लिखा है के जब लोग अपनी परेशानियों का इलाज अपने गुनाहों से करेंगे तो अल्लाह उनकी परेशानी खतम नहीं

करेंगे बलके परेशानी को नइ शकल दी जाएगी,के अब दिल की परेशानी को जिन असबाब में ये अपनी जिंदगी गुजार रहा है उस में डालेंगे.

फिर भी अगर नहीं पलटा तो अल्लाह मख्लूक को उसके साथ बद अख्लाक बनादेंगे,के अब बेटे भी परेशान करे,बीवी भी परेशान करे पडोसी भी परेशान करे, ये इस लिये करते हैं के पलट जाऐ, जैसे बकरियों के पीछे कुत्ता लगादिया, के बकरीयां मालिक के पास आवे,अल्लाह में बडी ताकत है,मख्लूक को पीछे लगा देंगे, अभी तो जन्नत जहन्नम नहीं आइ, वोह तो बाद में है, दोझख में जाना तो आखरी नाकामी है,उसके बाद कोइ अपील नहीं,अल्लाह जल्ले शानहु हमारी हिफाजत फरमाऐ. आमीन.

आदमी पेहले गाफिल बनता है, फिर बागी बनता है, और बागी बनकर हलाक होता है,ये सब इसलिये करते हैं ताके तौबह करले,और ये समजे के कोइ और करने वाला है उपर से,अल्लाह अपनी कुदरत समजा रहे हैं, और अब तौबह करले तो हालात सही होजाऐंगे आप ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो लोग अपना और अल्लाह का मामला सही करलेंगे तो अल्लाह उनका और मख्लूक का मामला सही करेंग, ऐक ही काइदा है, जिंदगी गुजारने का जो तरीका आखेरत में काम्याब करदेगा वोह दुनियामें भी सुकून दिलाऐगा,और जिंदगी गुजारने का जो तरीका वहां फंसा देगा यहां भी मुसीबतों में फंसादेगा. इसलिये आप ﷺ ने फरमाया के अपना मामला अल्लाह से सही बनालो इमान बनाकर, इबादत बनाकर, अख्लाक बनाकर, माहोल बनाकर.

असबाब और हालात को अल्लाह ने इम्तेहान के लिये बनाऐ हैं इसलिये बदलते रेहते हैं.कभी बचपन आया,कभी जवानी, कभी बुढापा, कभी बीमारी,कभी तंदुरस्ती, कभी सर्दी,कभी गर्मी,कभी तंगी,कभी फराखी आइ,हाल बदलता रेहता है,लेकिन ऐहकाम नहीं बदलेंगे, काम्याबी का रास्ता नहीं बदलेगा, पेहले हालात पैदा होते हैं,फिर हुकम आता है,अब आदमी इम्तेहान में आगया अगर हुकम तुटा तो फिर और जियादह इम्तेहान में डाला जायेगा

जब आदमी अपने अरवाल में और हालात में हुकमों वाला रहा तो काम्याब, अगर हुकम छुट गये तो कोइ सबब कोइ हाल

कामयाबी नहीं दिला सकता, इसलिये हाल ठीक करने से काम नहीं चलेगा, बलके दीन बनाने से काम बनेगा,जब दीन है और अस्बाब नहीं है तो कामयाब और अगर दीन नहीं है तो अस्बाब हो फिर भी नाकाम.

जब दीन नहीं रहेगा तो ख्वाहिशें रेहजायेगी, उसका कोइ रेहबर नहीं, नफ्स रेहबर बना हुवा है. उसका नफ्स तकाजा करता रहेगा और अस्बाब से ख्वाहिशें पूरी करेगा, हुकूक अदा नहीं करेगा,जो अल्लाह के ऐहकाम हैं वोह पूरे नही करेगा,और जब हुक्म पूरे नही करेगा तो अल्लाह की कुदरत उसके खिलाफ होजाऐगी और नाकाम होगा. काम्याबी और नाकामी अल्लाह के हाथमें है.मुसीबतें और राहतें अल्लाह के हाथ में है,जो चीज जहां से मिलरही है वोह उसमें बनती नहीं है.सिर्फ निकल रही है,जाहिर होरही है, लेकिन आती किसी और जगा से है. जमीन अल्लाह के खजाने को झाहिर करनेकेलिये है,बना नहीं रही,बनाने वाला तो अल्लाह है,जो चीज अल्लाह की कुदरत से बनकर आरही है,उस का नफा और नुकसान भी अल्लाह अपनी कुदरत से देंगे.

ये अल्लाह का कानून है के जिस हाल में और जिन अस्बाब के अंदर हम हैं, इसमें रेहकर अल्लाह के हुक्मों को तोडा तो अल्लाह बरकतें खींच लेंगे, अस्बाब नहीं छीनते, बरकतें खींच लेंगे, जैसे करंट खींच लिया, के पंखे लाइट सब कुछ है लेकिन करंट नहीं है.जिस्म चाहे कितना भी बडा हो लेकिन उसके अंदर अगर जान नहीं है तो ये फैल है, इसी तरह अल्लाह शकलों को फैल करदेंगे,बरकतें खतम और जरुरतें बढादी जायेगी,अब इन-सानकी परीशानी बढजायेगी हालांके अल्लाह के हुक्मोंको तोडा था हालात अच्छे बनाने के लिये लेकिन हुक्म को तोडनेकी वजह से और हालात बिगड गये.

जिस तरह चीजों के चलाने में अल्लाह ने निजाम अपने कंट्रोल में रखा है,आसमान को,जमीन को,चांद को,सुरज को,सब को. इसीतरह हमारे हालात को बनाने का कंट्रोल भी अल्लाह ने अपने हाथमें रखखा है, आदमी हालात नहीं बनायेगा, बचपन, जवानी, बुढापा, गरीबी, मालदारी किसने बनाइ, जरुरतों का पूरा होजाना ये काम्याबी नहीं है,जरुरतें तो पूरी होगी फिर खाली होजायेगी.

भूक लगी, खाना खाया, फिर भूक लगेगी, खाना खा लिया तो काम्याब और भूक लगी तो नाकाम, कपड़े बनालिये तो काम्याब और पुराने होगए तो नाकाम जरूरतें तो पूरीहोगी फिर खाली हो जाऐगी.और ये तो जानवर भी पूरी करते हैं. हालां के उनके पास असबाब कोइ नहीं.

हाल इम्तेहान के लिये है और दीन काम्याबी के लिये है.ये तरतीब अल्लाह के नबीयों ने बताइ है.हाल ठीक करने से काम नहीं होगा.बल्के दीन बनाने से काम बनेगा.काम्याबी अमल के आखिर में आती है बीच में नहीं आती.जबतक अमल का कारोबार चलता रहेगा,उसको नाकामी कभी नहीं आयेगी.जब उसके अमल का दाइरा खतम होगा,अब उसको अपनी नाकामी नजर आऐगी. इस अंजाम और नतीजे को जानने के लिये गैब का यकीन करना जरूरी है.जब गैब का यकीन होगा,तो इमान वाला अपने यकीन की नजर से,उस हालात और अंजाम को गोया अपनी आंखो के सामने देख रहा है.

अल्लाह जल्ले शानहु ने हमें ऐहकामात दीऐ और उन अहकाम पर अपने वादे किये, में ये-ये करूंगा, यानी जितने अच्छे अच्छे-हालात आदमी की तमन्ना में रेहते हैं, उन तमाम अच्छे हालात का अल्लाह जल्ले शानहु पेहले ही वादा करचुका है.हम आपको ये-ये हालात देंगे जिन की तुम तमन्ना करते हो, इसके लिये दो बातें है, ऐकतो ये के बंदो के जिम्मे कुछ शर्तें अल्लाह ने काइम फरमाइ है, अगर ये शर्तें पूरी होगी तो हम वादा पूरा करेंगे.जैसे बाजार में लैन दैन होता है, के कुछ दो और कुछ लो, ऐसे ही अल्लाह से हमारा मामला है, 'इय्याक नअबुदु वइय्या-क नस्तइन' ऐ अल्लाह हम आपही की इबादत करते हैं और आप ही से इआनत की दरख्वास्त करते हैं.

खुदा की मदद खुदा की इबादत के रास्तेसे आयेगी,बाकी जो होगा वोह गुजारे का होगा,काफिर को भी मिलजाता है, वोह मदद नहीं है.दुनिया में दो रास्ते चलते हैं. ऐक चीजोंवाला रास्ता, दूसरा हुकमों वाला रास्ता, हुकमों वाला जो रास्ता है वोह अल्लाह से काम्याबी लेने का यकीनी रास्ता है. हर चीज अल्लाह के कब्जाऐ कुदरत में है,और अल्लाह की कुदरत हुक्म पूरा करने वालों के

साथ है. लेहाजा हुक्म पूरा करने वाले अल्लाह की कुदरत से कामयाब होजायेंगे.

अगर अल्लाह की कुदरत से फाइदह उठाना है तो फिर जिंदगी को यानी जान और माल को अल्लाह के ऐहकाम पूरा करनेपर लगाया जाये. जान और माल को हुक्मों के मुताबिक इस्तेमाल करना सही यकीन के साथ इसी का नाम हिदायत है. पेहले हिदायत मिलेगी फिर कामयाबी मिलेगी, इनसान जिस हालमें भी है, उस हाल में अल्लाह का हुकम पूरा करेगा, तो अल्लाह जल्ले शानहू दुन्या में हुक्मों की बरकतें देंगे और आखेरत में बदला देंगे,दुनिया में हिसाब से देंगे और उसका हिसाब देना पळेगा,और आखेरत में बे हिसाब देंगे.

अल्लाह जल्ले शानहू ने अपने खझाने से फाइदह उठाने के लिये दो रास्ते बनाये हैं, अेक रास्ता मुकद्दर वाला,जो इनसानों के भेजने से पेहले ही अस्बाब (जरिया) बनाकर फैला दीये,चीजों और शकलों वाला,ये रास्ता इनसानों की आजमाइश और इम्तेहान के लिये हैं,ये रास्ता अल्लाह की सुन्नत केहलाता है,और इस रास्ते से लेने के लिये मुसलमान होना शर्त नहीं है, और दूसरा रास्ता कुदरतवाला के उस रास्ते में अल्लाह के वादों के यकीन के साथ,आमाल पर मेहनत करनी पळती है,जिसको इन्सान के जमीन पर भेजने के बाद नबीयों के जरिये भेजा, जो सो फिसद कामयाबी दिलाने वाला है.

इन दोनों में फर्क सिर्फ इतना है के पेहलेवाले रास्ते के अस्बाब को शकलें मिली हुइ है,जिसकी वजह से हर इन्सान को नजर आता है,और उसके अंदर से चीजें निकलती हुइ दिखाइ देती है, और दूसरे वाले रास्ते के अस्बाब को इस आलम में शकलें नहीं मिली,(आलमे आखेरत में शकलें दी जायेगी)इस वजह से नजर नहीं आते,और शकलें न मिलने की वजह से नबीयों की जुबानी उन की खबर दिलाइ और उनपर वादे कीऐ, नजर आने वाले अस्बाब पर अल्लाह का कोइ वादा नहीं.

अब जो इन्सान अल्लाह के वादों को सच यकीन कर के जिस अमल को जिस तरह करने के लिये आप ﷺ ने बताया उसी के मुताबिक उस अमल की शकल बनाएँगे तो अब अल्लाह जल्ले

शानहु अपना वादा जाहिर करमाऐंगे,वरना बगैर यकीन (यानी इमान) के जितने भी अमल करले अल्लाह अपना वादा पूरा नहीं करेगा,और जिस अमलपर दुनिया के वादे जाहिर नहीं हुऐ समज लो के उस अमल पर आखेरत का किया हुवा वादा भी पुरा नहीं होगा.अल्लाह जल्ले शानहु के कियेहुऐ वादों का हमें इल्म तो है लेकिन वादों का यकीन न होने की वजह से आमाल का करना हमें मुश्किल नजर आता है,और अस्बाब की तरफ हम चलपड़ते हैं. क्यूं के वहां से होताहुवा नजर आ रहा है. लेकिन ये रास्ता नाकामी वाला है.

इसलिये इस यकीन को सीखने की और बनाने की खुद अल्लाह जल्ले शानहु ने हमें बार–बार दअवत दी है. और ताकीद की है.'ऐ इमानवालो इमान लाओ''अे इमानवालो पूरे पूरे इस्लाम में दाखिल होजाओ,'या अय्युहल्लझी–न आमनु' के जरिये जितनी भी दअवत दी है वोह सबकी सब इमान वालों को दअवत दी गइ है,अल्लाह जल्ले शानहु की कुदरत से फाइदा उठानेके लिये 'ला इला–ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' वाला यकीन बनाना सब से पेहली शर्त है.

इसलिये इतनी मेहनत करना के अल्लाह के वादों का यकीन हमारे दिलो में उतर जाऐ, इतनी मेहनत करना के इमान हमें अल्लाह के फर्झोंपर खड़ा करदे, और अल्लाह की हराम की हुइ चीजों से निकाल दे.हजरत झैदबिन अरकम रदी.आप ﷺ से नकल करते हैं के जो शख्श इख्लास के साथ 'ला इला–ह इल्लल्लाह' कहे वोह जन्नत में दाखिल होगा,किसीने पुछाके कल्मेके इख्लास की अलामत कया है ? आप ﷺ ने इरशाद फरमाया हराम कामों से रोक दे. (तबरानी शरीफ)

सहाबा रदी.फरमाते हैं के हमने पेहले इमान सीखा इमान के रास्ते में फिरकर, के इत्ना खौफ अपने अंदर पैदा किया जो हराम से बचा दे. और इतना तााल्लुक अल्लाह से पैदा किया के अल्लाह के फर्झो पर खड़ा कर दे, खौफ अल्लाह के हुकमों पर चलाता है,के मेरे अल्लाह का हुकम है,और उसके पीछे सारे इन–आमात और सारी बरकतें हैं,और जिस चीजसे मना किया है उस से बचाता है,के उसके पीछे सारे अजाबात है.

हुकमोंवाले रास्ते सारेके सारे जन्नत में लेजायेंगे. और ख्वाहिशात वाले रास्ते सारेके सारे जहन्नममें लेजायेंगे.लेकिन जन्नतको अल्लाह ने नागवारियों से ढांपदिया है.इसलिये कळवे लगते है.और जहन्नम को ख्वाहिशात से ढांपदिया है. इसलिये जहन्नमके रास्ते मीठे लगते हैं के नमाझ होरही है और हम सो रहे हैं. क्यूं के नींद मीठी लगे और नमाझ कळवी लगे. इसलिये के हम नतीजेसे बेखबर है.

हालांके तमाम मसाइल का हल अल्लाह जल्ले शानहु ने नमाझ में रखवा है. जब आप ﷺ को मेअराजमें बुलाया तो तमाम चीजोंके खझाने बताए गये. और जरूरत पळनेपर उन चीजों को जमीनपर उतारने के लिये नमाझ अता की.जब आप ﷺ मेअराजसे नमाझका तोहफा लाये तो सहाबा रदी.झुमउठे.के अब तमाम मसअलों का हल मिलगया.और उसकेबाद जोभी हालात आये नमाझहीके जरिये हल कराए.जिनके किस्से मशहुर है.

जिनको नमाझ पळनी आगइ उसके सारे काम मुसल्ले से हो जाअेंगे नमाझ में सीधे अल्लाहसे लेते रेहने का इन्तेझाम मौजूद है. लेकिन जरुरत इस बातकी है के नमाझपर मेहनत कर के नमाझ को अेहसान के दर्जेतक पहोंचादिया जाअे.उसके लिये ऐक मेहनत तो नमाझ के जरिये कल्मे वाला यकीन ताझह होता रहे.जिसकी मुख्तसर अल्फाझ'अल्लाहु अकबर'यानी तकबीरे तहरीमा के जरिये याद दिहानी कराइ जाती है.

दूसरी मेहनत सर से लेकर पांउकी उंग्लियों तक को अल्लाह के हुकम और आप ﷺ के तरीके के मुताबिक इस्तेमाल करनेकी मश्क कीजाये.चुनानचे नमाझ में बदनके ऐक ऐक हिस्से के इस्तेमाल की कइ कइ शक्लों के ऐहकाम दीये गए.मसलन आंखोंही को लेलो. के कयाम में सजदे की जगा रुकूअ में पंजे पर. सजदे में नाकपर.जलसे में हाथोंपर या गोदमें.और सलाम फैरते वक्त कंधो पर यहांतक के हुरुफ के मखारिज के जरिये जबान. होंट.मसोळे. दांत और हलककी इब्तेदा बीच और आखरी हिस्सेतक मश्क कराइ गइ. तो जितनी इनसब बातों की रिआयत के साथ नमाझ अदा की जाएगी उतनीही नमाझ ऐहसान के दर्जेतक पहोंचती रहेगी.ऐहसान येहै के अल्लाहु अकबर से लेकर सलाम फैरने तक अल्लाह के सिवा किसी चीजका ध्यान न आने पाए.नमाझपर मेहनत करके

जिंदगीकी तरतीब और बदनके इस्तेमालको सही करनेकी मश्क की जाऐ.

नमाझ उस सिफतका नाम है जो अल्लाहको सारी सिफातमें सब से जियादह प्यारी और महबूब है,और कल्माऐ तय्येबहमें इसी सिफत वाला बननेका मोतालिबा कियागया है.इसीलिये कल्मेको अहदनामह या इकरार नामह करार दियागया है,क्यूंके इकरार या अहद दिलसे ताल्लुक रखता है.इसलिये दिलके अंदरकी हकी-कत को झाहिर करनेके लिये ऐसे अमलकी जरुरत है जिसे देख कर पेहचान सके के ये इनसान हमसे अलग सिफतसे मुत्तसिफ है,और वोह सिफत येहै के आदमीकी आंख,कान,जबान,हाथ,पाउं यानी जिसमका ऐक ऐक हिस्सा हरहाल में अल्लाह की मनशा और आप ﷺ वाली शकलपर इस्तेमाल होनेलगे,चाहे वोह इबादत हो या मोआशेरत, खडा हो या बेठा,जागता हो या सोता,अपनोमें हो या बेगानो में,घरपर हो या सफरमें,पैदल हो या सवारीपर,तंगी में हो या फराखीमें,हाकिम हो या महकूम,आका हो या गुलामीमें कोइ हालत उसे अल्लाहके हुक्म और आप ﷺ की ताबेदारीसे न रोकसके, उस सारी सिफातका जामेअ नाम नमाझ है.

इसलिये ये जानलेना जरुरी है के नमाझ पूरी जिंदगीके सारे अवकात और हरहाल और हर अमलमें जारी और फैलीहुइ है,और अल्लाह जल्ले शानहुने इस जामेअ सिफातको नमाझके हुकममें जमा करदिया और दिन-रातमें पांच वकत उसकी अदाइगी फर्झ करार देदी,ताके ऐक तरफ सिफते नमाझवाली जिंदगीकी मश्क होती रहे,दूसरी तरफ शाने इस्लाम का जुझ्व होकर गैर मुस्लिमों के लिये कशिश का जरिया बनती रहे. हकीकत में अल्लाह जल्ले शानहुकी तरफ से हर मुस्लिम से मोतालिबा येहै, के वोह चोबीस घंटे नमाझवाली सिफतपर काइम रहे,सिर्फ ये नहीं के मस्जिद में नमाझी और बाहर बेनमाझी,निय्यत बांधी तो नमाझी और सलाम फेरा तो बेनमाझी.

हजरतजी मौलाना यूसुफ रह.फरमाते थे के जिस नमाझ में खुशूअ और खुझूअ न हो,गिरयह और झारी न हो,और सहि निय-यत न हो तो शैतान ऐसी नमाझ से नहीं रोकता,और न उसको उसकी फिकर है,क्यूं के वोह जानता है के वोह नमाझ जिसमें ये

बातें न हो. खुद उसको खुसारा करदेगा, मुजे मेहनतकी क्या जरूरत है और 'अल्लझीन दल्ल सअ्यहुम् फिल हयातिदुन्या वहुम यहसबू-न अन्नहुम युह् सिनू-न सुन्आ' वाला मामला होगा यानी वोहलोग जिनकी कोशिशें दुन्याकी जिंदगीमें अकारत गइ और वोह समजते रहे के वोह खूब काम कररहे हैं,शैतान तो उस नमाझके पीछे पळेगा जिसमें हुझूर ﷺ का तरीका अमलमें लाया जाए और शैतान आयेगा जैसे आदम अल.के पास आयाथा और वोह डराएगा के तुमने अल्लाह का हुकम पूरा किया तो तुम्हारा ऐश खतम होगा,तुम्हारे हाथ से जन्नत जाती रहेगी वगैरह.

तो उसका तोळ येहै के इनसान अल्लाह के हुकम को पूरा करनेको अपना मोजू बनाले, जैसे इब्तेदाइ इस्लाम में कोइ इस्लाम लाता था तो केहता था या रसुलल्लाह ﷺ 'इन्नी उबायिउ-क अलल् इस्लाम' के मैं इस्लाम पर आपसे बैत करता हुं यानी मैं इस्लाम के हुकमों पर बिक गया, अब न जान मेरी और न माल मेरा खुदा और रसूल जैसा चाहेंगे ये दोनों इस्तेमाल होंगे.

मस्जिद के अंदर मिम्बर वोह मकाम है जहाँ से खतीब या मुकर्रीर लोगोंको इल्मी बातें सुनाते हैं. के इल्मे सही हासिल हो. तो गोया मरतबओ इल्म,मकामे इल्म और दर्जओ इल्मकी तर्जुमानी के लिये और उसकी वजाहत के लिये मिम्बर है.और अमल में आला तरीन अमल अल्लाह जल्लेशानहू की तरफ मुतवज्जेह होना है. और कामिल तरीन इबादत नमाझ है. और उसके लिये मुसल्ला है.(यानी इल्म उपर है,और अमल नीचे है) मालुम हुवाके मिम्बर से इल्म का ताल्लुक है,और मुसल्लेसे अमल का ताल्लुक है. और इसमें कोइ शुबह नहीं के इल्म और अमल का जोळ दर हकीकत जिंदगी है.येही वजह है के इनसानी बदनके उपरका हिस्सा दर हकीकत उलमा की बस्ती है.इसलिये के कान,आंख, और जबान सबका काम इल्म की तरजुमानी है तो उपर गोया उलमा आबाद है.और नीचले हिस्सेमें आमेलीन यानी अमल करने वाले अफराद की बस्ती है. उपर इल्म और नीचे अमल है, बीचमें दरम्यानी कळी गरदन है,इसलिये जब जानवर जबह किया जाता है,तो उसकी गरदन काटी जाती है,जिसमें हिकमत येहै के उसके इल्मो अमल में जुदाइ होजाये,जो मौत से ताबीर है.

इससे ये बात मालूम होगइ के जिंदगी की रुह दर हकीकत इल्मो अमल का जोड़ है. और अमल इल्म से मुनकतेअ होजाऐ तो समझ लेना चाहये के मौत तारी होगइ. इसलिये इल्म और अमल का रास्ता हयात और जिंदगीके लिये लाझिम है.दर हकीकत ये वोह इल्म है जो अंबिया अल. अल्लाह की तरफ से लाऐ हुऐ हैं.जो रुहों की प्यास और इनसान की अंदर की आत्मा की तस्कीन का सामान है,और गारंटी अपने अंदर लिये हुऐ है.

(आखरी टायटल से शुरु)

पढते रहो नमाझ मुजे भी पढा करो
पढपढकर मेरी बातोंपे अमलभी कियाकरो

में हुं तुम्हारे वास्ते तुम मेरे वास्ते
क्यूँ दूर मुजसे रेहते हो दुन्याके वास्ते

दुन्यातो क्या?में आखेरत अच्छी बनाउंगी
पढते रहो में तुमको भी रब से मिलाउंगी

अल्लाह रसूल हरदम उसपर हो मेहेरबान
पढता है, दूसरों को पढाता है, जो कुर्आन

वारिस पे या इलाही इतना करम तू करना
गाफिल तेरे झिक से उसको कभी न करना